5 DECADES OF UNEARTHING ENERGY

कोयला दर्पण

कोल इण्डिया लिमिटेड की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

नई राहें...

वर्ष-2025-26 | अंक-19 | जनवरी, 2026

कोल इण्डिया का 51वाँ स्थापना दिवस समारोह

संदेश

बी. साईराम
अध्यक्ष
कोल इण्डिया लिमिटेड

26 जनवरी, 2026 को **'कोयला दर्पण'** के 19वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत हर्ष और गर्व का अवसर है। यह दिन न केवल हमारे राष्ट्र के गणतंत्र का उत्सव है, बल्कि कोल इण्डिया परिवार के लिए भी आत्ममंथन और भविष्य की दिशा तय करने का अवसर लेकर आता है।

'कोयला दर्पण' के इस अंक का मुख्य विषय कोल इण्डिया का विविधिकरण एवं नवाचार है। विविधिकरण और नवाचार आज की आवश्यकता ही नहीं, बल्कि हमारी संगठनात्मक रणनीति का मूल आधार है। ऊर्जा क्षेत्र में बदलते परिदृश्य, पर्यावरणीय चुनौतियों और तकनीकी प्रगति को ध्यान में रखते हुए कोल इण्डिया ने कोयला उत्पादन के साथ-साथ नवीकरणीय ऊर्जा, क्रिटिकल मिनरल्स, कोल गैसीफिकेशन और अन्य वैकल्पिक क्षेत्रों में कदम बढ़ाए हैं। यह प्रयास न केवल हमारी कंपनी को भविष्य के लिए तैयार करता है, बल्कि राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा को भी सुदृढ़ करता है। कोल इण्डिया ने सदैव ऊर्जा क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई है और भविष्य में भी निभाती रहेगी।

साथ ही, हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। तकनीकी और औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का संवर्धन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि **'कोयला दर्पण'** का यह अंक हमारे कार्मिकों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और संवाद का एक सशक्त मंच बनेगी तथा उन्हें कोल इण्डिया के नवाचारों और विविधिकरण की यात्रा से परिचित कराएगी एवं हिंदी के संवर्धन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को उजागर करेगी।

इस अवसर पर मैं संपादकीय टीम और सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। आइए, हम सब मिलकर ऊर्जा, नवाचार और भाषा के इस संगम को आगे बढ़ाएँ और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को और अधिक सशक्त करें।

जय हिंद!

(बी. साईराम)

संदेश

डॉ. विनय रंजन
निदेशक (मानव संसाधन)
कोल इण्डिया लिमिटेड

यह बहुत ही आनंद का विषय है कि गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर हिंदी पत्रिका '**कोयला दर्पण**' के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल कोल इण्डिया की उपलब्धियों और प्रयासों का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारे कर्मचारियों की सृजनात्मकता, समर्पण और संगठनात्मक संस्कृति का भी दर्पण है। साथ ही पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रति कंपनी की निष्ठा एवं दायित्वबोध को उजागर करती है।

हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि कंपनी न केवल देश की ऊर्जा सुरक्षा में योगदान दे रही है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सतत विकास की राह भी प्रशस्त कर रही है। इस अंक में आपको कोल इण्डिया की उन परियोजनाओं और प्रयासों की झलक मिलेगी, जो आने वाले वर्षों में भारत को स्वच्छ और सुरक्षित ऊर्जा भविष्य की ओर अग्रसर करेंगे।

विविधिकरण और नवाचार मानव संसाधन विभाग के लिए विशेष महत्व का विषय है, क्योंकि किसी भी संगठन का वास्तविक बल उसके कर्मचारी होते हैं। नीम की कड़वाहट में औषधि छिपी होती है, उसी तरह कठिन परिस्थितियों में भी हमारे कर्मवीरों का श्रम, भविष्य की मिठास रचता है। विविधिकरण और नवाचार तभी सफल हो सकते हैं जब हमारे कर्मचारी, नई तकनीकों को अपनाने, नए विचारों को स्वीकार करने और बदलते समय के साथ कदम मिलाने के लिए तैयार हों। इस दिशा में प्रशिक्षण, कौशल विकास और सकारात्मक कार्य संस्कृति का निर्माण हमारी प्राथमिकता है। साथ ही, हिंदी के प्रचार-प्रसार से हम अपने कार्यस्थल को अधिक समावेशी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना सकते हैं। हिंदी हमारे राष्ट्र की आत्मा की भाषा है, और इसके माध्यम से हम अपने विचारों को अधिक सहजता और आत्मीयता से व्यक्त कर सकते हैं।

'**कोयला दर्पण**' के 19वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

जय हिंद!

वि० रंजन
(डॉ.विनय रंजन)

प्रधान संपादक की कलम से

राजेश वी नायर
महाप्रबंधक (मा. सं.-नीति/राजभाषा/ईई)
कोल इण्डिया लिमिटेड

प्रिय पाठकों,

'कोयला दर्पण' का 19वाँ अंक आपके हाथों में है और यह अंक कोल इण्डिया लिमिटेड की नई दिशा-विविधिकरण एवं नवाचार-को समर्पित है। आज जब ऊर्जा क्षेत्र तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब कोल इण्डिया ने भी अपनी पारंपरिक भूमिका से आगे बढ़ते हुए हरित ऊर्जा, कोल गैसीकरण, क्रिटिकल खनीजों का उत्पादन और डिजिटल तकनीकों को अपनाकर भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने का संकल्प लिया है। यह केवल कंपनी की रणनीतिक पहल नहीं है, बल्कि भारत की सतत विकास यात्रा का भी महत्वपूर्ण पड़ाव है।

'कोयला दर्पण' हिंदी के माध्यम से न केवल उद्योग की गतिविधियों को प्रस्तुत करता है, बल्कि भाषा के प्रसार और गौरव को भी आगे बढ़ाता है। हमारा उद्देश्य हैं कि **'कोयला दर्पण'** केवल सूचनाओं का संकलन न होकर, श्रमिकों की कहानियों, उनकी चुनौतियों और उनकी उपलब्धियों का मंच बने। हिंदी को प्रशासन, तकनीक और उद्योग की भाषा बनाकर हम इसे और अधिक सशक्त करें। मेरा मानना है जिस प्रकार पीपल की छाँव गाँव को शीतलता देती है, वैसे ही हिंदी हमारी संस्कृति को जीवंतता प्रदान करती है।

हमारा प्रयास है कि **'कोयला दर्पण'** के माध्यम से पाठकों को कंपनी की नवीनतम पहलों, उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की सजीव झलक मिले। मुझे विश्वास है कि यह अंक आपको प्रेरित करेगा और ऊर्जा क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन की गहन समझ प्रदान करेगा। इस पत्रिका को जीवंत बनाने में योगदान देने वाले सभी लेखक, संपादक, सहयोगी और पाठकगण का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। आपके सहयोग और सुझावों से ही **'कोयला दर्पण'** निरंतर समृद्ध हो रहा है।

नायर

(राजेश वी नायर)

संपादकीय

राजेश कुमार साव
प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

"कोयले की धड़कन में हिंदी की लय"

जब भी हम 'कोल इण्डिया' कहते हैं, तो एक विशाल परिवार की छवि सामने आती है - जहाँ कोयले की खदान से लेकर कॉर्पोरेट बोर्डरूम तक, हर जगह एक ही धुन गूँजती है: 'एकता, विकास, और समृद्धि'। और इस धुन को जो भाषा जीवंत बनाए रखती है, वह है - हिंदी। हिंदी सिर्फ शब्द नहीं, एक विचार है - जो हमें एकजुट रखता है। कोल इण्डिया में हमारा विश्वास है - जब तक हिंदी हमारे कर्मचारियों के दिल में है, तब तक हमारा विकास भी जीवंत रहेगा।

कोयले की गहराइयों से उठती हर चिंगारी केवल ऊर्जा नहीं, बल्कि हमारे श्रमिकों के पसीने और संकल्प की ज्योति है। **'कोयला दर्पण'** उसी ज्योति का प्रतिबिंब है-जहाँ उद्योग की कठोरता और मानवीय संवेदनाएँ एक साथ झलकती हैं। यह हमारी सामूहिक स्मृति है, जो आने वाली पीढ़ियों को बताएगी कि कोयला केवल खनिज नहीं, बल्कि राष्ट्र की धड़कन है।

26 जनवरी, 2026 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर कोयला दर्पण के 19वें अंक का विमोचन केवल एक प्रकाशन की औपचारिकता नहीं, बल्कि ऊर्जा क्षेत्र और सांस्कृतिक चेतना का संगम है। यह अंक कोल इण्डिया के विविधिकरण की दिशा में उठाए गए कदमों को रेखांकित करता है। विविधिकरण का अर्थ केवल ऊर्जा स्रोतों का विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसमें आर्थिक स्थिरता, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता तीनों का समावेश होता है। हमारी असली ताक़त केवल संसाधनों में नहीं, बल्कि उन लोगों में है जो अपनी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में सपने देखते हैं, संवाद करते हैं और भविष्य गढ़ते हैं। जब हम अपनी मातृभाषा में सोचते और लिखते हैं, तो विचार अधिक गहराई और आत्मीयता से व्यक्त होते हैं। कोल इण्डिया के कार्यक्षेत्र भी देश के विभिन्न राज्यों में फैले हैं। वहाँ की क्षेत्रीय भाषाएँ श्रमिकों, स्थानीय समुदायों और प्रबंधन के बीच सेतु का काम करती हैं। जब उद्योग और भाषा साथ-साथ चलते हैं, तभी विकास सर्वसमावेशी बनता है।

भारत की ऊर्जा संरचना में कोयले का स्थान आज भी केंद्रीय है। बिजली उत्पादन से लेकर इस्पात उद्योग तक, कोयला हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ बना हुआ है। लेकिन बदलते वैश्विक परिदृश्य में जब कोल इण्डिया कोयले से आगे बढ़कर सौर, गैस और अन्य ऊर्जा स्रोतों में निवेश कर रहा है, तब यह विविधिकरण भारत की ऊर्जा सुरक्षा को नई दिशा देता है। इस प्रक्रिया में भाषा की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी तकनीक की। मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाएँ ही वह माध्यम हैं जिनसे श्रमिक अपनी समस्याएँ स्पष्ट कर पाते हैं, समुदाय अपनी अपेक्षाएँ व्यक्त कर पाता है और नीतियाँ जनसामान्य तक पहुँच पाती हैं और उनकी सहभागिता बढ़ती है। यदि विविधिकरण केवल उद्योगों तक सीमित रहे और भाषाई विविधता को न अपनाए, तो उसका लाभ अधूरा रह जाएगा। **'कोयला दर्पण'** का यह अंक इस बात का प्रतीक है कि ऊर्जा का भविष्य भाषाई आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक विविधता के साथ आगे बढ़ रहा है। यही वह दृष्टि है जो कोल इण्डिया को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी उसे भारत की आत्मा से जोड़ देगी।

इस पत्रिका को जीवंत बनाने में योगदान देने वाले सभी कलमकार, सहयोगी और पाठकगण का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। **'कोयला दर्पण'** केवल उद्योग का दर्पण नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक चेतना का आईना है, उन हाथों का सम्मान है जो अंधेरे को उजाले में बदलते हैं। आइए, हम सब मिलकर इसे और अधिक सार्थक, प्रेरक और उपयोगी बनाएँ, ताकि हर पाठक को इसमें अपने श्रम, अपने सपनों और अपने देश का प्रतिबिंब दिखाई दे।

"कोयले की धारा, हिंदी की धुन,
एक साथ चलें, एक साथ सुनें।
जहाँ खदान है, जहाँ ऊर्जा है,
वहीं हिंदी की गूँज, वहीं हमारा सपना है!"

राजेश कु० साव

(राजेश कुमार साव)

प्रबंधकीय मंडल

प्रधान संरक्षक

बी. साईराम

अध्यक्ष

संरक्षक

डॉ.विनय रंजन

निदेशक (मानव संसाधन)

प्रधान संपादक

राजेश वी नायर

महाप्रबंधक (मा.सं.-नीति/राजभाषा/ईई)

संपादक

राजेश कुमार साव

प्रबंधक (राजभाषा)

सह - संपादक

प्रियांशु प्रकाश

उप प्रबंधक (राजभाषा)

तकनीकी सहयोग

सीरज कुमार सिंह, प्रबंधक (जनसंपर्क)
रौशन पाठक, प्रबंधक (वित्त)
स्वप्निल सिंह, प्रबंधक (विपणन)
आलोक कुमार, प्रबंधक (प्रणाली)

संपादन सहयोग

संदीप सोनी, कनिष्ठ अनुवादक
राकेश देवगड़े, अनुवादक (प्रशिक्षु)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करें। यह QR कोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर दिया गया है। दाईं ओर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दी गयी सभी रचनाओं को सुन सकते है।

अनुक्रमणिका

क्र	शीर्षक	पृष्ठ
1	अध्यक्ष महोदय का संदेश	3
2	निदेशक महोदय का संदेश	4
3	प्रधान संपादक की कलम से	5
4	संपादकीय	6
	गद्य लेखन	
5	कोल इण्डिया के विविधिकरण पहल	8
6	कोयला और हीरा : एक जैसा तत्व, पर अलग कहानी! : अयन दाश	14
7	डिजिटल माध्यमों में हिंदी का विकास : भाषायी क्रांति का नया युग : उदयवीर सिंह	15
8	काम के घंटों का सम्मान.... उत्पादकता की कुंजी : सुभाषिनी पात्रा	19
9	सेवानिवृति : एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन : डॉ. आर एन पात्रा	21
10	दैनंदिनी : सफल जीवन के लिए मैनेजमेंट सूत्र : रिंकु दुबे वैष्णवी	23
11	बक्खाली और हेनरी आइलैंड की यात्रा : रोहित छत्री	26
12	नवाचार और विविधिकरण के आयाम : राकेश देवगड़े	28
13	हंसी भरी वह एक शाम : निकिता भदानी	32
14	जागृति का स्वप्न : स्व. इंदिरा देवी	33
	कविता कुसुम	
15	नील वस्त्र : गोपेश द्विवेदी	34
16	छोड़ते वक्त.. : ओमप्रकाश मिश्र	35
17	छोड़ दिया है- : राजपाल यादव	36
18	सतर्कता है जरूरी : गजेंद्र तंवर	36
19	आजकल 'मैं' : रोशन कुमार सिंह	37
20	ताख बुझ गई : राजेश कुमार साव	37
21	कूड़ामित्र : गजानन कुमार दूबे	38
22	तेरी मेरी कीमत : रौशन पाठक	39
23	संबलपुर (एमसीएल) की यादें : नयंका जायसवाल	40
24	कोयले की धरती, मेहनत की गाथा : रामजीत पटेल	41
25	सीसीएल की लाडली का अभिलाषा : रवि प्रकाश यादव	41
26	कर्तव्यपथ का प्रहरी : राजकमल	42
27	विश्व सामाजिक न्याय दिवस : लक्ष्मन दास वैष्णव	42
28	कोयले की सुनहरी लौ : पूरनापुष्कला रामचंद्रन	43
29	विशालकाय वृक्ष : व्ही. आर. भंडारी	43
30	अभिनंदन अभिनंदन हिन्दी : संतोष कुमार श्रीवास	44
	गतिविधियाँ	
31	राजभाषा संबंधी विशिष्ट गतिविधियाँ	45-50
32	कोल इण्डिया की विशिष्ट गतिविधियाँ	51-58
33	सुर्खियों में कोल इण्डिया	59

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक, संपादकीय मंडल तथा कोल इण्डिया प्रबंधन किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

कोल इण्डिया के विविधिकरण पहल

डॉ चन्द्र शेखर सिंह
महाप्रबंधक एवं तकनीकी सचिव,
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में कोल इण्डिया लिमिटेड की भूमिका ऐतिहासिक रही है। परंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, पर्यावरणीय चुनौतियों और सतत विकास की आवश्यकता ने कंपनी को पारंपरिक कोयला उत्पादन से आगे बढ़कर नए क्षितिज तलाशने के लिए प्रेरित किया है। विविधिकरण और नवाचार को अपनी रणनीतिक प्राथमिकता बनाते हुए कोल इण्डिया अब हरित ऊर्जा की दिशा में सौर परियोजनाओं में निवेश कर रही है, जिससे भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को बल मिलेगा। साथ ही कोल गैसीकरण, कोल-टू-केमिकल्स और कोल-टू-लिक्विड, क्रिटिकल मिनरल्स जैसी परियोजनाओं के माध्यम से स्वच्छ ईंधन और रसायन उत्पादन की संभावनाएँ तलाश रही है, जो न केवल ऊर्जा क्षेत्र में नई पहचान देंगे बल्कि आय के विविध स्रोत भी खोलेंगे। डिजिटल तकनीकों का प्रयोग-जैसे ड्रोन सर्वेक्षण, सेंसर आधारित निगरानी, डेटा एनालिटिक्स और स्वचालित मशीनरी-खनन कार्यों को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और दक्ष बना रहा है। पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए कंपनी कार्बन उत्सर्जन घटाने, खदान पुनर्वास, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी पहलों को अपनाकर सतत विकास की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। मानव संसाधन विकास भी इस रूपांतरण का अहम हिस्सा है, जहाँ कर्मचारियों को नई तकनीकों और कौशलों में प्रशिक्षित कर भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा रहा है। इन पहलों के साथ कोल इण्डिया केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं रहकर भारत की सतत विकास यात्रा का अभिन्न हिस्सा बन रही है, और हरित, सुरक्षित तथा प्रतिस्पर्धी ऊर्जा भविष्य की ओर अग्रसर है।

सीआईएल ने अपने मुख्यालय में एक समर्पित नवीकरणीय ऊर्जा विभाग स्थापित किया है जो स्वच्छ ऊर्जा की ओर परिवर्तन का नेतृत्व कर रहा है। सीएमपीडीआई परियोजना प्रबंधन सलाहकार के रूप में साइट विकास, डीपीआर आयोजन और तकनीकी परीक्षण में अनुषंगी कंपनियों को सहयोग प्रदान कर रहा है।

वर्षवार नवीकरणीय क्षमता लक्ष्य (प्रगतिशील)

सीआईएल ने वित्त वर्ष 2029–30 तक विस्तारित एक संरचित क्षमता वृद्धि मार्ग तैयार किया है। वर्षवार स्थापित तथा नियोजित क्षमता निम्नवत है:

- अभी तक स्थापित: 210 MW
- वित्त वर्ष 2025–26: 670 MW
- वित्त वर्ष 2026–27: 911 MW
- वित्त वर्ष 2027–28: 2,827 MW
- वित्त वर्ष 2028–29: 8,192 MW
- वित्त वर्ष 2029–30: 9,437 MW

कोल इण्डिया के विभिन्न विविधिकरण पहलों को इस प्रकार देखा जा सकता है-

1. सौर ऊर्जा : कोल इण्डिया लिमिटेड, देश की सबसे बड़ी कोयला खनन कंपनी और एक प्रमुख राष्ट्रीय ऊर्जा संपत्ति के रूप में, भारत की स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन यात्रा के अनुरूप नवीकरणीय ऊर्जा में विविधीकरण हेतु व्यापक कदम उठा रही है। सीआईएल की पहलें 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित क्षमता प्राप्त करने के राष्ट्रीय लक्ष्य में सहायक बनना हैं और सरकारी स्वामित्व वाले औद्योगिक ढांचे के कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देना हैं।

क. पीएम सूर्य घर योजना – संपूर्ण सीआईएल में रूफटॉप सोलर का क्रियान्वयन : सीआईएल, पीएम सूर्य घर योजना को कार्यान्वित कर रही है जिसका उद्देश्य सीआईएल तथा इसकी

अनुषंगी कंपनियों के सभी प्रशासनिक, आवासीय और परिचालन भवनों में रूफटॉप सोलर की स्थापना करना है। इसके तहत सीआईएल ने 39.18 MW का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। अब तक, सीआईएल ने 61.25% (24 MW) रूफटॉप सोलर स्थापना पूरी कर ली है। हाल के महीनों में विक्रेता सक्रियता, अनुषंगी कंपनियों के स्तर पर निगरानी और साइट-रेडिनेस चुनौतियों के समाधान के फलस्वरुप क्रियान्वयन की गति तेज हुई है। वर्तमान प्रगति के आधार पर, दिसंबर 2025 तक 86.75% (33.99 MW) लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है। शेष स्थापना मार्च 2026 तक पूरी कर ली जाएगी।

ख. सौर ऊर्जा विस्तार - ग्राउंड-माउंटेड एवं यूटिलिटी-स्केल परियोजनाएँ :सौर ऊर्जा का प्रसार, सीआईएल की नवीकरणीय ऊर्जा विविधीकरण कार्यनीति के मूल में है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2027–28 तक 3,000 MW सौर क्षमता प्राप्त करने का संकल्प लिया है, जो आगे वित्त वर्ष 2029–30 तक 9,500 MW तक बढ़ेगी। इन लक्ष्यों को पूरा करने हेतु, सीआईएल एक मिश्रित विकास योजना अपना रहा है जिसमें राज्य की उर्जा उत्पादक कंपनियों के साथ संयुक्त उपक्रम, धारा 63 के अंतर्गत प्रतिस्पर्धी निविदा, अपनी भूमि पर आंतरिक उपभोग हेतु कैप्टिव परियोजनाएँ तथा वाणिज्यिक एवं औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए परियोजनाएँ विकसित कर रही है। वर्तमान में सीआईएल की स्थापित क्षमता 210 MW है और लगभग 675 MW की परियोजनाएँ क्रियान्वयनाधीन हैं, जिनमें से 460 MW की परियोजना वित्त वर्ष 2025–26 तक पूर्ण होने की संभावना है। उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (UPRVUNL) के साथ जालौन जिले में 500 MW सौर परियोजना विकसित की जा रही है। गुजरात में, सीआईएल

खवड़ा नवीकरणीय ऊर्जा पार्क में 300 MW सौर परियोजना पर काम कर रहा है। इसके अलावा, पाटन में 100 MW की सौर स्थापना विकसित की जा रही है। अनुषंगी कंपनियों में, ग्राउंड-माउंटेड और रूफटॉप परियोजना की एक सुदृढ़ योजना पर काम चल रहा है, जिसमें 275 MW के प्रोजेक्ट अभी बन रहे हैं और लगभग 550 MW के प्रोजेक्ट डीपीआर या फिजिबिलिटी असेसमेंट के अधीन हैं। ये परियोजनाएँ बीसीसीएल, सीसीएल, ईसीएल, एमसीएल, एनसीएल, एसईसीएल, तथा डब्ल्यूसीएल, तक विस्तृत हैं।

ग. सीआईएल राजस्थान अक्षय ऊर्जा लिमिटेड (सीआरएयूएल) : कोल इण्डिया लिमिटेड (सीआईएल), देश की वृह्द कोयला उत्पादक कंपनी, नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन हासिल करने और स्वच्छ ऊर्जा की ओर परिवर्तन को तेज़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। अपने दीर्घकालिक विजन के एक भाग के रूप में, सीआईएल ने अपने नवीकरणीय ऊर्जा पोर्टफोलियो को उल्लेखनीय रूप से विस्तार देने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए हैं, जिससे भारत के सतत विकास लक्ष्यों को सहायता मिलेगा और समग्र कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी। इस कार्यनीति के

अनुरूप, सीआईएल ने राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (आरवीयूएनएल) के साथ 10 मार्च, 2024 को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया, तदुपरांत 23 सितंबर, 2024 को एक संयुक्त उद्यम समझौता (जेवीसी) किया गया। इस समझौता के तहत एक संयुक्त उद्यम कंपनी (जेवीसी) की स्थापना की गई, जिसमें सीआईएल की हिस्सेदारी 74% और आरवीयूएनएल की हिस्सेदारी 26% है। यह कंपनी 09 जून, 2025 को औपचारिक रूप से सीआईएल राजस्थान अक्षय ऊर्जा लिमिटेड (सीआरएयूएल) के रूप में पंजीकृत हुई, जो राजस्थान में

नवीकरणीय ऊर्जा विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक समर्पित मंच है।

सीआईएल की विविधीकरण कार्यनीति के अनुरूप, सीआरएयूएल का प्रारंभिक लक्ष्य कुल 2100 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता विकसित करना है। इस योजना के तहत कंपनी ने प्रमुख सौर परियोजनाओं पर काम शुरू कर दिया है, जिनमें आरवीयूएनएल के

2000 मेगावाट सौर पार्क पुगल, बीकानेर में 875 मेगावाट सौर पीवी परियोजना एवं सूरतगढ़ सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन में 100 मेगावाट सौर पीवी परियोजना शामिल हैं। आगे चलकर, सीआरएयूएल अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा पहलों जैसे सौर, पवन और पंप-स्टोरेज परियोजनाओं का भी अन्वेषण और क्रियान्वयन करेगा, जिससे राजस्थान और भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों में योगदान होगा। सीआईएल की मज़बूत परियोजना निष्पादन क्षमता और आरवीयूएनएल के व्यापक विद्युत उत्पादन अनुभव का लाभ उठाकर, सीआरएयूएल नवीकरणीय ऊर्जा अवसंरचना को सुदृढ़ करने और एक सतत, हरित भविष्य के निर्माण में सहायक बनने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

इस प्रकार सीआईएल ने रूफटॉप और यूटिलिटी-स्केल नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने में उल्लेखनीय प्रगति की है। पीएम सूर्य घर योजना के अंतर्गत आधे से अधिक रूफटॉप स्थापना पूर्ण हो चुकी है और बहु-गिगावॉट सौर एवं पवन परियोजनाएँ विभिन्न राज्यों में प्रगति पर हैं। सीआईएल वित्त वर्ष 2027–28 तक 3,000 MW नेट-जीरो लक्ष्य प्राप्त करने और वित्त वर्ष 2029–30 तक 9,500 MW नवीकरणीय पोर्टफोलियो की ओर अग्रसर है। विविधीकृत परियोजना प्रगति और राज्य जेनकोस व औद्योगिक उपभोक्ताओं के साथ चल रही साझेदारियाँ भारत की राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन में सीआईएल की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती हैं।

2. कोल गैसीकरण : कोल इण्डिया लिमिटेड (CIL) घरेलू कोयले के स्वच्छतम एवं मूल्य वर्धित उपयोग के लिए कोयला गैसीकरण को एक मुख्य साधन के तौर पर प्राथमिकता दे रही है। यह कार्यनीतिक पहल भारत सरकार के 2030 तक 100 मिलियन टन (MT) कोयले के गैसीकरण के विज़न के साथ जुड़ी हुई है, जिसका उद्देश्य नेचुरल गैस और कच्चे तेल पर आयात निर्भरता को कम करना और साथ ही वैकल्पिक ऊर्जा विकल्पों को बढ़ावा देना है।

नेशनल कोल गैसिफिकेशन मिशन के अंतर्गत, कोल इण्डिया लिमिटेड ने तीन कोल गैसिफिकेशन परियोजना शुरू किए हैं, जिनके नाम- ओडिशा में कोल टू अमोनियम नाइट्रेट परियोजना, पश्चिम बंगाल में कोल टू एसएनजी परियोजना और महाराष्ट्र में कोल टू एसएनजी परियोजना हैं। परियोजनायें विकास के अलग-अलग चरणों में इस प्रकार हैं:

1. **भारत कोल गैसिफिकेशन एंड केमिकल्स लिमिटेड (सीआईएल एवं भेल का एक संयुक्त उपक्रम) के द्वारा कोयले से अमोनियम नाइट्रेट परियोजना:** ओडिशा के लखनपुर में 0.66 मिलियन टन प्रति वर्ष की क्षमता वाला कोल गैसिफिकेशन आधारित अमोनियम नाइट्रेट परियोजना के लिए दिनांक 21.05.2024 को बीसीजीसीएल का गठन किया गया। परियोजना के लिए डीएफआर अनुमोदित किया गया है तथा यह कार्यान्वयन के चरण में है। इसके 2029-30 में शुरु होने की संभावना है।

2. **कोल गैस इण्डिया लिमिटेड (सीआईएल एवं गेल का एक संयुक्त उपक्रम) के द्वारा कोयले से एसएनजी परियोजना:** पश्चिम बंगाल के बर्धमान में 633.6 मिलियन Nm3

(1.83 MMSCMD) क्षमता वाली कोयले से एसएनजी संयंत्र लगाने के लिए 25.03.2025 को सीजीआईएल का गठन किया गया। यह परियोजना अभी निविदा चरण में है तथा इसके 2030-31 में शुरु होने की संभावना है।

3. **सीआईएल-बीपीसीएल संयुक्त उपक्रम के द्वारा कोयले से एसएनजी परियोजना:** सीआईएल तथा बीपीसीएल के बीच महाराष्ट्र के चंद्रपुर में 633.6 मिलियन Nm3 (1.83 MMSCMD) कैपेसिटी वाली कोयले से एसएनजी संयंत्र लगाने के लिए दिनांक 02.12.2024 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है। यह परियोजना अभी टेंडरिंग के चरण में है, तथा इसके 2030-31 में चालू होने की संभावना है।

यह सर्वविदित हैं कि देश में उच्च राख वाला कोयला उपलब्ध होने के कारण कोल गैसीफिकेशन परियोजना में टेक्नोलॉजिकल चुनौतियाँ आती हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, भारत सरकार ने आर्थिक मदद प्रदान कर गैसीफिकेशन प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा देने के लिए कई पहल शुरू की हैं। सीआईएल के तीनों कोल गैसीफिकेशन परियोजनाओं को फाइनेंशियल स्कीम के तहत चुना गया है। तदुपरांत, तीनों प्रोजेक्ट्स के लिए कोयला मंत्रालय के साथ समझौता साइन किए गए हैं, जिसके तहत हर परियोजना को विनिर्माण के दौरान भारत सरकार से ₹1350 करोड़ की आर्थिक मदद मिलेगी।

केंद्र सरकार के सहयोग के अलावा, ओडिशा सरकार की हाई लेवल क्लीयरेंस अथॉरिटी ने बीसीजीसीएल परियोजना को सैद्धांतिक अनुमति प्रदान की है। तदुपरांत, परियोजना को जल्दी लागू करने के लिए ओडिशा सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन साइन किया गया है। इन कदमों का उद्देश्य ओडिशा में कोयले से अमोनियम नाइट्रेट परियोजना को विकसित करने के लिए सुविधा देना और विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन प्रदान करना है।

3. थर्मल पावर प्लांट : सार्वजनिक क्षेत्र की दो प्रमुख सरकारी कंपनी कोल इण्डिया लिमिटेड (CIL), जो देश की प्रमुख कोयला उत्पादक है, तथा दामोदर घाटी निगम (DVC), जो पश्चिम बंगाल और झारखंड में बिजली उत्पादन हेतु संचालनरत है, ने 7 नवंबर को एक कार्यनीतिक संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता झारखंड में डीवीसी के चंद्रपुरा टीपीएस की मौजूदा साइट पर 1600 MW क्षमता के थर्मल पावर परियोजना के ब्राउनफील्ड विस्तार के लिए है। यह संयुक्त उद्यम मिलकर दूसरे थर्मल पावर और रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स शुरू करने की संभावनाओं पर भी विचार करेगा। प्रस्तावित कोल फायर्ड परियोजना में 800MW की दो अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल यूनिट होंगी, जिनकी कुल स्थापित क्षमता 1,600 MW होगी। इन परियोजनाओं के लिए कोयला सीआईएल की झारखंड स्थित अनुषंगी, सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड से प्राप्त किया जाएगा। परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 21,000 करोड़ रुपये है और यह 50:50 इक्विटी शेयरिंग पर होगा। परियोजना की लागत में दोनों यूनिट्स का विकास, निर्माण और कमीशनिंग शामिल है। भारत की बढ़ती ऊर्जा की मांग को देखते हुए, इन प्लांट्स से

वित्तीय वर्ष 2031-32 तक व्यावसायिक उत्पादन शुरू करने का लक्ष्य रखा गया है।

कोल इण्डिया और डिवीसी के बीच इस तालमेल का उद्देश्य देश की बेसलोड उत्पादन क्षमता को मज़बूत करना है, जिसके लिए चंद्रपुरा साइट पर मौजूदा आधारभूत संरचना का उपयोग करके तथा उपलब्ध संसाधन का उचित प्रयोग कर तेज़ी से काम पूरा किया जाएगा। यह परियोजना राष्ट्रीय और क्षेत्रीय बिजली की मांग को काफी हद तक पूरा करेगा। यह परियोजना कोयला क्षेत्र में स्थापित हो रही है, इसलिए बिजली की उत्पादन लागत कम होने की उम्मीद है। यह परियोजना एक ब्राउनफील्ड विस्तार है, इसलिए भूमि सहित अन्य सभी आधारभूत संरचना सुविधाएं, जो किसी भी नए परियोजना के लिए प्रमुख बाधा होती हैं, पूर्व से ही हमारे पास उपलब्ध हैं।

4. क्रिटिकल मिनरल्स : क्रिटिकल मिनरल्स भारत की आर्थिक सुरक्षा, प्रौद्योगिकीय उन्नति और ऊर्जा संक्रमण के लिए बहुत ज़्यादा रणनीतिक महत्व रखते हैं। जैसे-जैसे भारत अपने नेट-ज़ीरो लक्ष्यों की ओर बढ़ रहा है, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को अपनाना, नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार और मेक-इन-इण्डिया उत्पादन पर ज़ोर देना, इस तरह के क्रिटिकल मिनरल्स (महत्वपूर्ण खनिज) तक पहुंच को आवश्यक बना देता है। यद्यपि, भारत अभी इन मिनरल्स के लिए काफी हद तक आयात पर निर्भर है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला भू-राजनीतिक जोखिमों और बाज़ार के उतार-चढ़ाव के कारण कमज़ोर हो जाती है।

देश की क्रिटिकल मिनरल्स सुरक्षा को मज़बूत करने और तेज़ी से बदलते एनर्जी और इंडस्ट्रियल माहौल में कॉम्पिटिटिव बने रहने के उद्देश्य से, कोल इण्डिया लिमिटेड ने अपने विविधिकरण पहलों के तहत क्रिटिकल मिनरल्स को एक संभावित क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया है और सीआईएल के व्यवसाय विकास विभाग के अंतर्गत क्रिटिकल मिनरल्स और इंटरनेशनल कोऑपरेशन वर्टिकल को यह ज़िम्मेदारी प्रदान की गई है। सीआईएल भारत और विदेशों में, जिसमें ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, चिली और कनाडा शामिल हैं, लिथियम, ग्रेफाइट, निकेल, रेयर अर्थ एलिमेंट्स, पोटाश जैसे महत्वपूर्ण खनिज में अवसरों की तलाश कर रहा है। सीआईएल ने क्रिटिकल मिनरल्स सेक्टर में कदम रखने के लिए घरेलू पहल (डोमेस्टिक इनिशिएटिव्स) और विदेशी पहल (ओवरसीज इनिशिएटिव्स) वाली दो-तरफ़ा रणनीति अपनाई है और वित्तीय वर्ष 2025-26 में उल्लेखनीय प्रगति की है:

घरेलू पहल : कोल इण्डिया लिमिटेड, खान मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जा रहे महत्वपूर्ण खनिजों के ई-ऑक्शन चरणों में भाग ले रहा है। सीआईएल ने वित्त वर्ष 2025-26 में ई-ऑक्शन के तहत निम्नलिखित ब्लॉक हासिल किए हैं-

क.ओरंगा-रेवतीपुर ग्रेफाइट और वैनेडियम ब्लॉक (बलरामपुर, छत्तीसगढ़): सीआईएल ई-ऑक्शन में ओरंगा-रेवतीपुर ग्रेफाइट और वैनेडियम ब्लॉक के लिए पसंदीदा बोली लगाने वाली कंपनी के रूप में उभरी है और छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने उसे लेटर ऑफ इंटेंट दिया है। साइट पर प्री-प्रोजेक्ट गतिविधियां शुरू हो गई हैं और 2028 तक खदान को चालू करने का लक्ष्य रखा गया है। एक बार चालू होने के बाद, यह खदान सीआईएल की पहली गैर-कोयला उत्पादन करने वाली खदान बन जाएगी और ग्रेफाइट के लिए देश की आयात पर निर्भरता को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

भारत सरकार के माननीय कोयला और खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने ओरंगा-रेवतीपुर ग्रेफाइट और वैनेडियम ब्लॉक के लिए CIL को प्रेफर्ड बिडर डॉक्यूमेंट प्रदान किया।

ख. ओंटिल्लू-चंद्रगिरी आरईई एक्सप्लोरेशन ब्लॉक, आंध्र प्रदेश: कोल इण्डिया, खान मंत्रालय की पहली ई-नीलामी में ओंटिल्लू-चंद्रगिरी रेयर अर्थ एलिमेंट एक्सप्लोरेशन ब्लॉक के लिए

पसंदीदा बोली लगाने वाली कंपनी के रूप में उभरी है। आंध्र प्रदेश राज्य सरकार द्वारा लेटर ऑफ इंटेंट जारी कर दिया गया है। इसके अलावा, अन्वेषण से जुड़ी गतिविधियां भी शुरू हो गई हैं। यह परियोजना भविष्य के विकास के लिए दुर्लभ खनिज की खोज स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

भारत सरकार के माननीय कोयला और खान मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी, ओंटिल्लू-चंद्रगिरी रेयर अर्थ एलिमेंट एक्सप्लोरेशन ब्लॉक के लिए सीआईएल को प्रेफर्ड बिडर डॉक्यूमेंट प्रदान करते हुए।

सीआईएल ने क्रिटिकल मिनरल्स सेक्टर में सहयोग के लिए हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड, छत्तीसगढ़ मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड और मध्य प्रदेश मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ भी समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किए हैं। इनमें से हर संस्था के साथ संयुक्त सहयोग के लिए प्रोजेक्ट के अवसरों की तलाश की जा रही है, और कुछ परियोजनाओं की ड्यू डिलिजेंस चल रही है।

मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री की उपस्थिति में सीआईएल और एमपीएमडीसी के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह।

विदेशी पहल :सीआईएल घरेलू मांग-आपूर्ति अंतर को कम करने के लिए, खनिजों को भारत लाने के उद्देश्य से विदेशों में ज़रूरी मिनरल एसेट्स के अधिग्रहण की सक्रिय रूप से तलाश कर रही है। प्रोजेक्ट के अवसरों की खोज सीआईएल द्वारा स्वतंत्र रूप से और साथ ही केबीआईएल (KABIL) और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के सहयोग से की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान, सीआईएल ने संभावित कंपनियों के साथ कई नॉन-डिस्क्लोजर एग्रीमेंट किए, प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों में पहचाने गए एसेट्स की ड्यू डिलिजेंस की और इनमें से कुछ एसेट्स के अधिग्रहण से संबंधित गतिविधियाँ उन्नत चरण में हैं।

5. पवन ऊर्जा कार्यक्रम : सीआईएल, अपनी क्षमता योजना में विस्तार के लिए राज्य और केंद्र की निविदाओं में भाग लेकर सौर-पवन-बीईएसएस हाइब्रिड संयोजन की भी संभावनाएँ तलाश रही है। सीआईएल ने राजस्थान, गुजरात और आंध्र प्रदेश जैसे पवन-समृद्ध क्षेत्रों में पवन ऊर्जा पोर्टफोलियो विकसित करने के कदम उठाए हैं। योजना में व्यवस्थित भूमि अधिग्रहण, निकासी गलियारों का निर्माण और चरणबद्ध स्थापना शामिल है। पवन ऊर्जा, हाइब्रिड आरई आपूर्ति मॉडल सक्षम करने एवं वाणिज्यिक एवं औद्योगिक उपभोक्ताओं को चौबीसों घंटे स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह प्रगति सीआईएल के नवीकरणीय कार्यक्रम के स्केलिंग नेचर को दर्शाती है जिसमें भूमि, जेवी संरचना और कनेक्टिविटी पर प्रारंभिक कार्य आगे के वर्षों में तीव्र वृद्धि का आधार बनेगा।

इस प्रकार विविधिकरण और नवाचार के माध्यम से भविष्य में कोल इण्डिया न केवल अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखेगी, बल्कि हरित और सुरक्षित ऊर्जा भविष्य की दिशा में भी अग्रसर होगी।

कोयला और हीरा: एक जैसा तत्व, पर अलग कहानी!

अयन दाश
वरिष्ठ प्रबंधक (भूविज्ञान)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

हीरा दुनिया का सबसे लोकप्रिय और बहुमूल्य रत्न है। इतिहास गवाह है कि इस पत्थर के लालच में अनेक युद्ध हुए, रक्त बहा और राजवंशों का उत्थान-पतन हुआ। हीरा प्राचीन काल से ऐश्वर्य और वैभव का प्रतीक रहा है। बचपन से ही हममें से कई लोगों ने यह सुना है कि हीरे कोयला खदानों से निकलते हैं। क्योंकि कोयला और हीरा - दोनों ही कार्बन तत्व से बने होते हैं, इसलिए यह धारणा काफी प्रसिद्ध है। परंतु क्या वास्तव में कोयला खदानों में हीरे मिलते हैं? आइए इस वैज्ञानिक और भू-वैज्ञानिक तथ्य को सरल भाषा में समझें।

सबसे पहले जानते हैं कि कोयला कैसे बनता है। लगभग 30 से 35 करोड़ वर्ष पहले (कार्बोनिफेरस युग में) पृथ्वी पर विशाल जंगल हुआ करते थे। इन वनों के वृक्ष बाढ़ और तूफ़ानों में नष्ट होकर दलदलों में जमा हो जाते थे। समय के साथ मिट्टी और पपड़ी की परतों के नीचे दबकर, ताप और दाब के प्रभाव से यह वनस्पति कार्बन में परिवर्तित हो जाती है - यही कोयला है। यह सामान्यतः पृथ्वी की सतह से 3–3.5. किमी की गहराई में पाया जाता है।

अब बात करते हैं हीरा बनने की प्रक्रिया की। प्राकृतिक हीरा चार प्रमुख तरीकों से बनता है -

1. पृथ्वी के मैंटल (Mantle) में बनने वाले हीरे: व्यावसायिक हीरे पृथ्वी के लगभग 150 किमी गहराई में और लगभग 1050°C तापमान पर बनते हैं। यहाँ अत्यधिक ताप और दाब की स्थिति में प्राचीन कार्बन क्रिस्टलीय रूप में परिवर्तित होकर हीरा बन जाता है। यह क्षेत्र "हीरा स्थिरता क्षेत्र" (Diamond Stability Field) कहलाता है। जब ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान मैंटल की गहराई से लावा ऊपर उठता है, तो हीरे भी किम्बरलाइट (Kimberlite) या लैम्प्रोइट (Lamproite) नामक विशेष चट्टानों के साथ ऊपर आ जाते हैं। इन्हीं से हीरा निकाला जाता है। तो यह स्पष्ट होता है कि कोयले का हीरे से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। लेकिन यदि यह लावा पाइप ऊपर उठते समय किसी कोयले की परत को भेद दे, तो उस कोयले में यह लावा पाया जा सकता है और उसमें हीरा मिलने की संभावना रहती है। हालांकि इस प्रकार का लावा विस्फोट अत्यंत दुर्लभ होता है।

2. अवगमन क्षेत्र (Subduction Zone) में बनने वाले हीरे: जब दो पृथ्वी की प्लेटें आपस में टकराती हैं, तो एक प्लेट दूसरी के नीचे चली जाती है। इस प्रक्रिया को अवगमन कहते हैं। यहाँ लगभग 80–100 किमी की गहराई और 200°C तापमान पर यदि चूना पत्थर या डोलोमाइट जैसी कार्बनयुक्त चट्टानें हों, तो बहुत छोटे हीरे बन सकते हैं। ये व्यावसायिक रूप से उपयोगी नहीं होते।

यदि कोयले की कोई परत अवगमन (सबडक्शन) क्षेत्र में प्रवेश कर जाए, तो इस प्रक्रिया से हीरा बनने की संभावना तो रहती है, लेकिन भूवैज्ञानिक अभिलेखों में ऐसे किसी उदाहरण का उल्लेख नहीं मिलता।

3. उल्कापात से बनने वाले हीरे: कभी-कभी जब उल्का पिंड पृथ्वी से टकराते हैं, तो अत्यधिक दाब और ताप के कारण कार्बनयुक्त चट्टानों में सूक्ष्म हीरे बन जाते हैं। यदि इस स्थान पर कोयले की परत मौजूद हो तो उसमें भी हीरा बनने की संभावना होती है, पर यह घटना अत्यंत दुर्लभ और संयोगवश ही होती है।

4. अंतरिक्ष में बनने वाले हीरे: वैज्ञानिकों ने पाया है कि कई उल्कापिंडों में सूक्ष्म हीरे पाए जाते हैं जो अंतरिक्ष में ही अत्यधिक गति और टकराव के कारण बने होते हैं। इस प्रक्रिया में भी कोयले की कोई भूमिका नहीं होती।

इन चारों प्रक्रियाओं से यह स्पष्ट है कि हीरे का निर्माण कोयले से नहीं होता। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी पर जितने भी हीरा-समृद्ध क्षेत्र मिले हैं, वे "प्री-कैम्ब्रियन युग" (4600 से 582 मिलियन वर्ष पहले) के बने हुए हैं। जबकि पृथ्वी पर पहली बार स्थल वनस्पति लगभग 450 मिलियन वर्ष पहले अस्तित्व में आई थी - यानी कि कोयला बनने की प्रक्रिया हीरे के बनने के बहुत बाद में शुरू हुई।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि कोयला खदानों में हीरा मिलने की संभावना लगभग असंभव है। यदि कभी ऐसा पाया भी गया हो, तो वह केवल एक संयोग मात्र है। इस प्रकार हमने एक प्रचलित मिथ का वैज्ञानिक विश्लेषण कर यह समझा कि हीरा और कोयला - दोनों का मूल तत्व भले ही कार्बन हो, लेकिन इनकी उत्पत्ति की प्रक्रिया और स्थान पूरी तरह भिन्न हैं।

(स्रोत: भूवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक शोधों पर आधारित लेख)

डिजिटल माध्यमों में हिंदी का विकास : भाषायी क्रांति का नया युग

उदयवीर सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

इस लेख में हिंदी भाषा और प्रौद्योगिकी के संगम का विश्लेषण करते हुए जाँच-पड़ताल की गयी है कि सोशल मीडिया, ऑनलाइन सामग्री और मोबाइल एप्लिकेशन जैसी डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ हिंदी भाषा के विस्तार और विकास में कैसे योगदान दे रही हैं। साथ ही, उन कारकों, मंचों, सामाजिक प्रभावों और चुनौतियों का भी मूल्यांकन किया गया है जो डिजिटल युग में हिंदी के भविष्य को आकार दे रहे हैं।

इंटरनेट के युग में हिंदी का पुनर्जागरण

डिजिटल मीडिया और प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक, हिंदी, एक महत्वपूर्ण बदलाव और विकास को दौर से गुजर रही है। यह केवल एक भाषाई बदलाव नहीं, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण सदृश प्रक्रिया है, जहाँ उन्नत डिजिटल मंचों ने हिंदी को अपनी पारंपरिक सीमाओं से परे जाकर बदलते संचार परिदृश्य के साथ अनुकूलित होने में सक्षम बनाया है। इंटरनेट के इस युग ने हिंदी के लिए एक नई क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया है, जो इसे पहले से कहीं अधिक सुलभ, गतिशील, प्रासंगिक और जीवंत बना रहा है।

डिजिटल लहर में हिंदी के विकास के पीछे प्रमुख कारण

डिजिटल मंचों पर हिंदी की लोकप्रियता और उपयोग में वृद्धि के पीछे कई महत्वपूर्ण कारक काम कर रहे हैं। ये कारक मिलकर एक ऐसा वातावरण बना रहे हैं जहाँ हिंदी भाषा न केवल फल-फूल रही है, बल्कि बदलते स्वरूप में अपनी नई पहचान भी बना रही है।

- **स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुंच :** स्मार्टफोन के व्यापक उपयोग और कम लागत वाले इंटरनेट की उपलब्धता ने भाषाई बाधाओं को तोड़ा है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि अब हिंदी भाषी आबादी केवल निष्क्रिय उपभोक्ता भर नहीं है, बल्कि सक्रिय भागीदार है जो अपने मोबाइल उपकरणों पर आसान संवाद के साथ डिजिटल सामग्री का निर्माण कर रही है।
- **स्थानीय भाषा सामग्री की मांग :** भारत में तेजी से बढ़ते इंटरनेट नेटवर्क और उपयोगकर्ताओं के भविष्य पर केंद्रित इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (IAMAI) और रिसर्च फर्म कंटार की एक रिपोर्ट के अनुमान के आधार पर 2025 में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या 90 करोड़ के पार पहुंच जाएगी, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी। ये उपयोगकर्ता स्थानीय भाषा की सामग्री को प्राथमिकता देंगे। यह एक महत्वपूर्ण बाजार और सांस्कृतिक बदलाव का संकेत है। विशेष रूप से ग्रामीण आबादी मनोरंजन और संचार के लिए इंटरनेट का उपयोग कर रही है, जिससे प्रामाणिक हिंदी सामग्री की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
- **स्थानीय भाषा की प्राथमिकता :** शहरी भारत में 57% इंटरनेट उपयोगकर्ता भारतीय भाषाओं में इंटरनेट सामग्री

पसंद करते हैं। वर्तमान में ग्रामीण आबादी कुल ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं का लगभग 55% हिस्सा है, जो डिजिटल सेवाओं के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाता है। लोग मुख्य रूप से वीडियो स्ट्रीमिंग (OTT) और डिजिटल लेनदेन के लिए इंटरनेट का सहारा ले रहे हैं, जिससे भाषाई विविधता और क्षेत्रीय सामग्री की मांग बढ़ी है।

- **सरकारी पहल :** भारत सरकार द्वारा ग्रामीण भारत को डिजिटल बनाने की महत्वाकांक्षी यात्रा एक उत्प्रेरक के रूप में काम कर रही है। इस पहल की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि ऑनलाइन सामग्री स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध हो, जिससे पहली बार इंटरनेट का उपयोग करने वाले भी प्रौद्योगिकी का पूरा लाभ उठा सकें और सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में सशक्त डिजिटल नागरिक बन सकें।

इस बढ़ती मांग, व्यापक पहुंच और राष्ट्रीय प्रोत्साहन के संगम ने ही उन डिजिटल मंचों के लिए एक उपजाऊ भूमि तैयार की है, जहाँ हिंदी ने नए और अप्रत्याशित तरीकों से अपनी जड़ें मजबूत की हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म: हिंदी भाषा के विकास का इंजन

भारत में डिजिटल क्रांति ने हिंदी भाषा के उपयोग और प्रसार को अभूतपूर्व रूप से बदल दिया है। नए डिजिटल मंच उल्लेखनीय भाषायी बदलाव ला रहे हैं। कई डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये मंच न केवल हिंदी की डिजिटल सामग्री के लिए एक माध्यम प्रदान करते हैं, बल्कि भाषा और उसके उपयोगकर्ताओं के बीच एक गतिशील संबंध भी स्थापित कर रहे हैं। उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म और उपकरणों के उपयोग के कारण, हिंदी भाषा की पहुंच विस्तारित हुई है और यह बदलती संचार दुनिया के अनुकूल होने में भी सक्षम हो रही है।

यह बदलाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में लगभग 870 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता (कुल उपयोगकर्ताओं का 98%) अब क्षेत्रीय भाषाओं में इंटरनेट का उपयोग करने को प्राथमिकता देते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, इंग्लिश-भाषा साइटों के लिए 11% की वार्षिक वृद्धि दर की तुलना में, स्थानीय भाषाओं की वृद्धि दर 56% वार्षिक है, जो तेजी से बढ़ रही है।

आइए अब एक नजर डालते हैं कि सोशल मीडिया, स्ट्रीमिंग सेवाएं और ऑनलाइन समाचार जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी के विकास में कैसे योगदान दे रहे हैं:

1. सोशल मीडिया : बोलचाल की भाषा का मंच

सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को आपस में बातचीत करने, सामग्री साझा करने और समान भाषाई विरासत वाले लोगों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाता है। भारत की आधिकारिक भाषा होने और व्यापक रूप से बोली जाने के कारण हिंदी भाषा सोशल मीडिया पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **विस्तारित उपस्थिति :** Facebook, Twitter, Instagram और WhatsApp जैसी प्रमुख नेटवर्किंग साइटों ने हिंदी भाषा की ऑनलाइन उपस्थिति को काफी बढ़ाया है।
- **व्यक्तिगत अभिव्यक्ति :** लोग इन प्लेटफार्मों पर दोस्तों और अपने प्रशंसकों (फॉलोअर्स) के साथ हिंदी में बातचीत करते हैं और अपने स्टेटस अपडेट करते हैं। सोशल मीडिया चर्चाओं में हिंदी का लगातार उपयोग अब उपयोगकर्ताओं को अपनी भाषाई विरासत साझा करने वालों के साथ संवाद करने और अपनी खुद की भाषा में खुद को अभिव्यक्त करने की सुविधा देता है।
- **सामग्री निर्माण :** सामग्री निर्माता (कंटेंट क्रिएटर्स) हिंदी-भाषी लोगों के लिए प्रासंगिक सामग्री देने के लिए हिंदी में टेक्स्ट पोस्ट, चित्र और वीडियो बनाते हैं। सोशल-नेटवर्किंग भारतीय भाषाओं में की जाने वाली शीर्ष ऑनलाइन गतिविधियों में से एक है। चूंकि इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से भारत दुनियाभर के प्रमुख बाजारों में से एक है, इसलिए भारतीयों के साथ-साथ अब विदेशी कंटेंट क्रिएटर्स भी हिंदी में डिजिटल सामग्री तैयार करके लोकप्रिय हो रहे हैं। इससे हिंदी को एक वैश्विक पहचान मिल रही है।
- **व्यावसायिक जुड़ाव :** व्यवसाय अपने लक्षित बाजार से जुड़ने और मजबूत ऑनलाइन उपस्थिति स्थापित करने के लिए हिंदी में विपणन और ब्रांडिंग गतिविधियां भी करते हैं।

2. स्ट्रीमिंग सेवाएँ और मनोरंजन क्रांति (OTT)

डिजिटल मीडिया मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी की पहुंच को काफी

बढ़ा रहा है। स्ट्रीमिंग सेवाएँ हिंदी भाषा के कंटेंट क्रिएटर्स के लिए एक मंच प्रदान करती हैं और मनोरंजन के माध्यम से भाषा के उपयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

- **वीडियो और संगीत की पहुँच :** OTT (ओवर-द-टॉप) मीडिया सेवाओं (जैसे YouTube, Hotstar, Prime Video, Gaana, JioSaavn) के माध्यम से वीडियो या संगीत सामग्री तक पहुंच ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सबसे अधिक लोकतांत्रिक ऑनलाइन गतिविधियों में से एक है।
- **शीर्ष गतिविधियाँ :** भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर की जाने वाली शीर्ष गतिविधियाँ वीडियो देखना (81%) और संगीत सुनना (69%) हैं। इनमें हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की काफी मांग है।
- **साहित्य का प्रचार :** हिंदी साहित्य को सोशल मीडिया साइटों के साथ-साथ हिंदी ऑडियो, ई-बुक्स, और Kuku Fm जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से भी बढ़ावा दिया जाता है। अध्ययन बताते हैं कि हिंदी साहित्य की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से तेज है।
- **यू-ट्यूब का योगदान :** यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों ने हिंदी भाषा की सामग्री निर्माताओं के लिए व्यापक अवसर उपलब्ध कराएं हैं, जहां प्रतिदिन लाखों हिंदी भाषा के वीडियो बनाए और देखे जाते हैं।

3. ई-कॉमर्स और व्यवसाय

अमेज़ॅन, फ्लिपकार्ट और पेटीएम जैसी ई-कॉमर्स वेबसाइट हिंदी भाषी लक्षित ग्राहकों के साथ जुड़ने, विश्वास बनाने और करोड़ों लोगों के एक बड़े बाजार तक पहुंचने के लिए इस भाषा का उपयोग प्रमुखता से कर रही हैं। आज ऑनलाइन खरीदारी, टैक्सी बुकिंग से लेकर खाना डिलीवरी करने वालों तक, लगभग सभी ई-कॉमर्स व्यवसायों ने अपनी वेबसाइट और शॉपिंग ऐप को हिंदी भाषा में आरंभ कर दिया है।

4. डिजिटल समाचार और सूचना

इंटरनेट समाचार और सूचना तक पहुँचने का एक प्रमुख माध्यम बन गया है। आजकल परंपरागत समाचार साधनों की तुलना में लोग ऑनलाइन माध्यमों में अधिक सक्रिय हैं।

- **व्यापक पहुँच :** इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से 3 में से 5 उपयोगकर्ता (58 करोड़ या 66% इंटरनेट उपयोगकर्ता) ऑनलाइन विभिन्न समाचार ऐप/वेबसाइटों, सोशल मीडिया पोस्ट, मैसेज फॉरवर्ड और यूट्यूब के माध्यम से समाचार और जानकारी तक पहुँचते हैं।
- **मीडिया का एकीकरण :** भारतीय मीडिया ने रिपोर्टिंग में सोशल मीडिया का उपयोग के लाभों को स्वीकार कर लिया है। अब प्रमुख हिंदी समाचार संगठन अब अपनी रिपोर्टिंग में सोशल मीडिया को एकीकृत करने की रणनीतियों पर काम करते हैं।
- **अंग्रेजी का घटता ग्राफ :** प्रेस गजट की एक रिपोर्ट के अनुसार 2024–25 में टॉप 50 अंग्रेज़ी समाचार वेबसाइटों में से अधिकांश पर साल-दर-साल (YoY) ट्रैफिक में गिरावट देखी गयी है। हालांकि उपभोक्ता बढ़ रहे हैं और ये बढ़े हुए उपभोक्ता क्षेत्रीय भाषाओं से आ रहे हैं, इनमें भारत में हिंदी का प्रमुख स्थान है।

नई तकनीकी रुझान और ग्रामीण विकास

डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी को भारत के उन हिस्सों तक भी पहुंचा रहे हैं जहां पहले कम पहुंच थी:

- **ग्रामीण उपयोगकर्ताओं का उदय :** ग्रामीण इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की वृद्धि दर शहरी उपयोगकर्ताओं (5% की तुलना में 10% वार्षिक वृद्धि) की तुलना में दोगुनी अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में अब शहरी क्षेत्रों की तुलना में 90 मिलियन अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं।
- **वॉयस कमांड :** लगभग 140 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता (15%) अब इंटरनेट तक पहुंचने के लिए वॉयस-आधारित कमांड का उपयोग कर रहे हैं। गूगल असिस्टेंट और अन्य स्मार्ट डिवाइस हिंदी में बातचीत को समझ सकते हैं और उनका जवाब दे सकते हैं। इन वॉयस उपयोगकर्ताओं में 55% ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। इससे डिजिटल दुनिया में हिंदी भाषा को सहज विस्तार मिल रहा है।

इन मंचों का प्रभाव केवल प्रौद्योगिकी तक सीमित नहीं रहा; इसने भारतीय समाज और सांस्कृतिक संवाद की संरचना को बदलना शुरू कर दिया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक पर प्रभाव

डिजिटल मीडिया में हिंदी के बढ़ते उपयोग का प्रभाव केवल भाषाई दायरे तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका समाज और संस्कृति पर भी गहरा असर पड़ रहा है। यहां कुछ पहलुओं का उल्लेख किया जा रहा है -

1. **भाषा का सामान्यीकरण :** डिजिटल मीडिया पर हिंदी का बढ़ता उपयोग इसे रोजमर्रा की बातचीत और संचार में सामान्य बनाने में मदद कर रहा है, जिससे यह भाषा केवल औपचारिक या अकादमिक दायरे से बाहर निकलकर आम जीवन का हिस्सा बन रही है और इससे इसका भौगोलिक दायरा भी बढ़ रहा है।
2. **नए उपयोगकर्ताओं का सशक्तिकरण :** स्थानीय भाषा की सामग्री पहली बार इंटरनेट का उपयोग करने वालों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को, सूचना और सेवाओं तक पहुंचने में मदद कर रही है। यह डिजिटल विभाजन को कम करने और अधिक समावेशी ऑनलाइन दुनिया बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
3. **विपणन और ब्रांडिंग :** रणनीतिक दृष्टिकोण से, ब्रांड और व्यवसाय अब केवल हिंदी का अनुवाद नहीं कर रहे हैं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक संवाद बना रहे हैं। वे सोशल मीडिया मार्केटिंग में मूल रूप से हिंदी का उपयोग करके अंग्रेजी से जुड़ी औपचारिक बाधा को तोड़ते हैं और उपयोगकर्ता की भाषाई पहचान से जुड़कर एक भावनात्मक संबंध बनाते हैं, जो एक साधारण लेन-देन से कहीं अधिक गहरा होता है और विश्वास पैदा करता है।

जहाँ एक ओर ये सकारात्मक प्रभाव हिंदी के विकास को गति दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस तीव्र विकास ने कुछ अंतर्निहित चुनौतियों को भी उजागर किया है।

डिजिटल पथ पर चुनौतियाँ

हालांकि हिंदी का डिजिटल विस्तार प्रभावशाली है, लेकिन कुछ चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। हिंदी के डिजिटल विकास की राह में कुछ महत्वपूर्ण बाधाएँ भी हैं जिन्हें दूर करना आवश्यक है -

- **औपचारिक क्षेत्र में अंग्रेजी का प्रभुत्व :** अंग्रेजी अभी भी भारत के अभिजात वर्ग और शैक्षिक प्रणालियों में प्रमुख भाषा बनी हुई है। यह औपचारिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी के पूर्ण विकास को बाधित करता है, जिससे इसकी स्वीकार्यता एक निश्चित दायरे तक सीमित हो जाती है।
- **भाषाई अंतर :** यह एक गंभीर चिंता का विषय है कि डिजिटल मीडिया में हिंदी पर ध्यान केंद्रित करने से भारत में हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के बीच भाषाई अंतर बढ़ सकता है। यह सफलता अनजाने में एक नए भाषाई पदानुक्रम को जन्म दे सकती है।
- **तकनीकी सीमाएँ :** डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के लिए सीमित संख्या में फ़ॉन्ट (जैसे, कृति देव, मंगल, और निर्मला) उपलब्ध हैं। यह अंग्रेजी टाइपफेस की तुलना में हिंदी उपयोगकर्ताओं के लिए बहुत कम विकल्प प्रदान करता है, जो रचनात्मक अभिव्यक्ति और उपयोगिता को सीमित कर सकता है।

इन कुछ चुनौतियों को स्वीकार करते हुए भी यह मानना महत्वपूर्ण है कि हिंदी का डिजिटल भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है।

हिंदी का डिजिटल भविष्य

संक्षेप में कहें तो, यह स्पष्ट है कि डिजिटल मीडिया ने हिंदी भाषा के विकास में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, वीडियो और संगीत स्ट्रीमिंग सेवाओं तथा ई-कॉमर्स ऐप्स ने हिंदी को एक नया वैश्विक मंच प्रदान किया है, जिससे इसकी पहुंच और प्रासंगिकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच, स्थानीय सामग्री की मांग और सरकारी पहलों ने इस विकास को और गति दी है, जिससे हिंदी एक जीवंत डिजिटल भाषा के रूप में उभरी रही है।

अंग्रेजी के प्रभुत्व और तकनीकी सीमाओं जैसी चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल माध्यमों में हिंदी भाषा के विकास और अनुकूलन के लिए अभूतपूर्व अवसर उपलब्ध हैं। इससे न केवल भाषा संरक्षित हो रही है, बल्कि इसे डिजिटल युग की जरूरतों के अनुसार विकसित भी होने में मदद मिल रही है। इसलिए, असली चुनौती केवल तकनीकी नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि यह डिजिटल विकास भाषाई समावेशन को बढ़ावा दे, न कि नए डिजिटल विभाजन पैदा करे।

काम के घंटों का सम्मान .... उत्पादकता की कुंजी

श्रीमती सुभाषिनी पात्रा
पत्नी : डॉ. आर.एन पात्रा, महाप्रबंधक,
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

उत्पादकता और सेहत बनाए रखने के लिए हमें अपने कामकाजी समय की कद्र करना आवश्यक है। जैसे के शीर्षक से ही पता चलता है कि इसका लक्ष्य एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना और कार्मिकों को उनके तय काम के समय का सम्मान करने के लिए बढ़ावा देकर कार्यक्षमता में सुधार करना है। अपने कार्य समय का सम्मान करने के लिए आपके हाथ में जो मुख्य चीज़ें हैं, वे हैं समय का पाबंद होना, अपने और साथ काम करने वालों के समय की कद्र करना, स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना, कार्यों को प्राथमिकता देना और कार्यभार को प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना और अपने कार्य से संतुष्ट रहना।

आज की आधुनिक डिजिटल दुनिया में रिमोट वर्क, फ्लेक्सिबल शेड्यूल और काम की बढ़ती डिमांड के साथ, हमें टाइम बाउंड काम पूरे करने के लिए स्मार्ट तरीके से काम करना पड़ता है। जब हर कोई अपने कामकाजी समय का सम्मान करता है तो इससे उत्पादकता बढ़ती है और समय का बेहतर प्रबंधन होता है। जब हम अपने समय का सम्मान करते हैं तो इससे न केवल कार्यक्षमता बढ़ती है बल्कि कई और अच्छे अवसर भी जुड़ जाते हैं जैसे-

- हम असरदार तरीके से अपने कार्यों की प्राथमिकता तय कर सकते हैं ।
- काम को टालमटोल की प्रवृत्ति कम होती है ।
- कम समय में ज़्यादा काम पूरा कर सकते हैं ।
- हमारे कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि होती हैं ।
- व्यक्ति का आत्म-सम्मान और छवि में वृद्धि ।
- यह आपके चरित्र (विश्वसनियता) को दर्शाता है ।
- यह पहचान हमारे आत्म-सम्मान और खुशी को बढ़ाती है ।

अपने कामकाजी समय का सम्मान करना कोई कला नहीं बल्कि ज़िंदगी जीने का एक तरीका है। यह जीवन के सबसे गैर-नवीकरणीय संसाधन को महत्व देने सदृश्य है जो न केवल हमारी उत्पादकता को बढ़ाता है तथा रिश्ते को बेहतर बनाने के साथ-साथ, इज्ज़तदार, शांतिपूर्ण और पूरी जीवन की राह भी बनाता है।

कार्य संतुलन को प्राथमिकता देना, कार्य की सीमाएँ स्थापित करना तथा तनाव से बचने के लिए कार्य के बीच बीच मे विराम लेना एक स्वस्थ कार्य वातावरण बनाने के लिए ज़रूरी हैं।

आराम करने से मन प्रफुल्लित और उत्साहित होता है, जिससे ध्यान और एकाग्रता मे वृद्धि होती है। बर्नआउट कार्य-जीवन संतुलन को अनदेखा करने का एक गंभीर नतीजा है आप काम पहले से तय कर लें ताकि यह पक्का हो सके कि काम तय काम के घंटों में पूरा हो सके।

जब आप थका हुआ महसूस करें तो खुद को रिचार्ज करने के लिए सात तरह के आराम करें:

शारीरिक आराम ...

- हमारे शरीर को ठीक होने के लिए समय चाहिए, चाहे गहरी नींद हो या हल्की सी नींद की झपकी। शारीरिक विश्राम ऊर्जा को वापस भरने तथा तनाव को रोकने में मदद करता

है।

- शरीर को सहज रखे, योग करें या धीरे-धीरे टहलें।
- ज़्यादा देर तक बैठे रहने के बाद विश्राम अवश्य लें।

मानसिक आराम ...

- जब मानसिक तौर पर उलक्षन या बहुत ज़्यादा दबाव महसूस हो, तो अपने दिमाग को आराम दें। मानसिक आराम से अनावश्यक दबाव दूर होता हैं ताकि आप ज़्यादा अच्छा सोच सकें।
- अपने काम की सीमाएँ तय करें ।
- कामों के बीच छोटे-छोटे विश्राम लें ।
- सचेतनता ध्यान, योगा अथवा गहरी साँस लेने का अभ्यास करें।

संवेदी विश्राम ...

- लगातार नोटिफ़िकेशन देखना, स्क्रीन टाइम और शोर थका देने वाला हो सकता हैं, संवेदी विश्राम का मतलब है अत्यधिक चिंता कम करना ताकि हमारा शरीर और दिमाग आराम कर सके।
- अपने मोबाइल के नोटिफ़िकेशन साइलेंट करें और मोबाइल से दूर रहें।
- शांत जगह पर समय बिताएं।
- आपने आसपास का शोर कम करें।

रचनात्मक विश्राम ...

- रचनात्मक विश्राम का मतलब कुछ न करना नहीं है, बल्कि सुंदरता, प्रेरणा या आश्चर्य का अनुभव करके अपनी कल्पना को फिर से जगाना होता है।
- किसी प्राकृतिक सुंदर जगह पर घूमने जाएं या किसी आर्ट गैलरी में जाएं।
- संगीत सुनें या कुछ प्रेरणा देने वाला लेख पढ़ें।
- नए विचार लाने के लिए अपने आस-पास का माहौल को बदलें।

भावनात्मक विश्राम ...

- जब आप लगातार खुद या दूसरों के भावनाओं को मैनेज कर रहे होते हैं, तो आपको खुद के असली रूप में दिखाने के लिए स्पेस चाहिए होता है। भावनात्मक विश्राम आपके एकत्रित तनाव को कम करने में मदद करता है।
- किसी ऐसे व्यक्ति से खुलकर बात करें जिस पर आप भरोसा करते हों।
- भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कोई कविता या लेख लिखें।
- नकारात्मक विचार तथा नकारात्मक ऊर्जा के लिए सीमा तय करें।

सामाजिक विश्राम ...

- सामाजिक विश्राम का मतलब है उन लोगों के बीच समय को व्यतीत करना जो आपको अच्छा महसूस कराते हैं और उन लोगों से दूर रहना जो आपको थकान देते हैं। हमेशा ये बातें याद रखना होगा।
- हर सामाजिक कार्य हमेशा उत्साहवर्धक नहीं होता हैं।
- निकट दोस्तों के साथ ज़्यादा समय बिताएं।
- उन सामाजिक ज़िम्मेदारियों को ना कहें जो आपको बोझ देने वाली लगती हैं।
- जब आपको ज़रूरत हो, खुद के लिए समय निकालें।

आध्यात्मिक विश्राम ...

- जब हम अलग-थलग या अधूरा महसूस करते हैं, तो आध्यात्मिक आराम हमें मतलब, मकसद और खुद से बड़ी किसी चीज़ से फिर से जुड़ने में मदद करता है।
- हमारे लिए सच में क्या मायने रखता है, इस पर सोचने में समय बिताएं।
- ध्यान लगाए, प्रार्थना करें और आभार जताने का अभ्यास करें।
- स्वयंसेवक बनें या निस्वार्थता के साथ काम करें।

एक स्वस्थ संतुलित कार्य जीवन अच्छी सेहत के लिए जरूरी होता है।

सबका किसी का तनाव दूर करने और अपनी बात कहने का अपना-अपना तरीका होता है।

अपना तरीका खुद चुनें ...

खुश रहें...

सेवानिवृत्ति : एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

डॉ. आर एन पात्रा
महाप्रबंधक (दूरसंचार)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

सेवानिवृत्ति केवल एक शारीरिक परिवर्तन नहीं; बल्कि एक गहरा मनोवैज्ञानिक बदलाव भी है। जैसे ही हम अपने पेशेवर भूमिका को अलविदा कहते हैं, हम अपनी पहचान, सामाजिक संबंध और रोज़ाना की दिनचर्या के एक महत्वपूर्ण हिस्से को भी अलविदा कहते हैं। यह परिवर्तन कई तरह की भावनाएं ला सकता है, जैसे उत्साह और राहत से लेकर भय और अनिश्चितता तक की भी भावना निर्माण कर सकता है।

सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन दशकों की कड़ी मेहनत के बाद मिलने वाला सर्वोत्तम प्रतिफल है, लेकिन यह तनाव, चिंता, निराशा और उदासी का कारण भी बन सकती है। यह खुद को रीचार्ज करने, आराम करने और अपने अधूरे शौक पूरे करने का समय है। यह ज़िंदगी का एक बड़ा बदलाव है जिसके लिए थोड़ा बहुत समायोजन की ज़रूरत होती है। सेवानिवृत्त लोग अक्सर कहते हैं कि सेवानिवृत्ति का सबसे अच्छा हिस्सा आज़ादी है, यानी घूमने-फिरने, शौक पूरे करने और अपनों के साथ समय बिताने की आज़ादी का मौक़ा हैं। सेवानिवृत्ति के बाद की ज़िंदगी की प्लानिंग एक सफ़र है और एक संतोषजनक और मकसद वाली ज़िंदगी बनाने के लिए सोच-समझकर कदम उठाना आवश्यक है। सेवानिवृत्ति जीवन में एक बड़ा बदलाव हो सकता है और जीवन में स्थिरता लाने तथा समन्वय लाने में समय लगता है।

कुछ सामान्य चुनौतियाँ (मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझना) :

1. **मूड बदलना:** काम के मोड से आराम के मोड में परिवर्तन करने में दिक़्क़तें आना।
2. **वित्तीय प्रबंधन:** सीमित निश्चित आय पर आर्थिक प्रबंधन करना।
3. **पहचान खोने का भय:** पेशेवर भूमिका के बिना जीवन में तालमेल बिठाना।
4. **सामाजिक अलगाव:** सहकर्मियों तथा सामाजिक मेलजोल की कमी महसूस होना।
5. **स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता:** शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना।
6. **ऊबाउपन तथा लक्ष्य विहिनता:** सार्थक गतिविधियाँ और मकसद ढूँढना।
7. **रिश्तों में परिवर्तन:** परिवार और दोस्तों के साथ नए समीकरणों के साथ तालमेल बिठाना।
8. **टाइम मैनेजमेंट:** बिना काम के शेड्यूल के दिनों को व्यवस्थित करना।
9. **भावनात्मक उतार-चढ़ाव:** अचानक मिली आज़ादी से एक प्रकार की मुक्ति का एहसास हो सकता है, लेकिन भविष्य के बारे में चिंता और अनिश्चितता भी हो सकती है।

भगवद गीता: अध्याय 6, श्लोक 35 यह बताता है कि

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥ 35। ।

अर्थात : हम देखते हैं कि मन अपनी पसंद की चीज़ों की ओर भागता है, उसी दिशा में भागता है जिस दिशा में उसे अतीत में भागने की आदत पड़ी हुई है। लगाव को खत्म करने से मन की बेकार की भटकन खत्म हो जाती है।

सेवानिवृत्त जीवन में लगाव और अनासक्ति का सबक यह है कि: बाहरी नतीजों, स्टेटस और भौतिक चीज़ों से लगाव दुख और चिंता का कारण बनता है, जबकि अपने कर्तव्यों, व्यक्तिगत ग्रोथ और आध्यात्मिक जीवन से स्वस्थ अनासक्ति स्थायी शांति और संतुष्टि की ओर ले जाती है।

अपने पेशेवर भूमिका, पावर और स्टेटस ("कुर्सी") से मज़बूत भावनात्मक या पहचान वाला जुड़ाव सेवानिवृति जीवन में बदलाव को मुश्किल बना सकता है, जिससे मनोवैज्ञानिक संतुलन बिगड़ सकता है, अवसाद, चिंता और लक्ष्य की भावना कम हो सकती है। लगाव से बचने की आदत ज़बरदस्ती आत्मनिर्भरता के रूप में सामने आ सकती है। शक्ति वाली भूमिका का नुकसान

कंट्रोल खोने जैसा लग सकता है और लोग इससे निपटने के लिए इनकार या दबाने जैसी चीज़ों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जो ज़्यादा रिसोर्स लेने वाली और लंबे समय तक समायोजन के लिए असरदार नहीं हो सकती हैं।

किसी ताकतवर या महत्वपूर्ण पद को छोड़ने से जो खालीपन आता है, उससे मकसद की कमी, बेचैनी और बोरियत या अधूरापन महसूस हो सकता है, ये ऐसे लक्षण हैं जो अक्सर सडन रिटायरमेंट सिंड्रोम (SRS) से जुड़े होते हैं।

परिवर्तन को समझें: (उन लोगों के लिए टिप्स जिन्हें रिटायरमेंट के बाद की ज़िंदगी मुश्किल लगती है):

1. **पहले से योजना बनाएँ:** नई रुचियों और शौक को अपनाकर रिटायरमेंट की तैयारी करें।
2. **जुड़े रहें:** परिवार, दोस्तों और एक समान सोच वाले लोगों के साथ रिश्ते बनाए रखें।
3. **नये मकसद ढूंढें:** ऐसी कार्यक्रमों में हिस्सा लें जो आपको मतलब और संतुष्टि का एहसास कराएँ।
4. **खुशहाली पर ध्यान दें:** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें।
5. अपनी समग्र कल्याण की भावना को बेहतर बनाने के लिए योग, ध्यान, विकसित मांसपेशियों को आराम देने जैसे आराम अभ्यास को अपनाएं।
6. **सक्रिय रहें:** शारीरिक व्यायाम आपके मूड को बेहतर बनाने और तनाव/स्ट्रेस को कम करने का एक असरदार तरीका है।
7. **कृतज्ञता का अभ्यास करें:** जीवन की छोटी-छोटी चीज़ों की सराहना करने के लिए कुछ समय निकालें, चाहे वह किसी दोस्त का फ़ोन कॉल हो या संगीत का कोई दिल को छू लेने वाला कोई गीत।
8. **प्रकृति के साथ समय बिताएं:** हरी-भरी जगहों पर समय बिताने से तनाव कम होता है, आपके चेहरे पर मुस्कान आती है और आपको अच्छा महसूस होता है।
9. **चिंता करने की आदत छोड़ें:** लगातार चिंता करना एक मानसिक आदत है जिसे आपको छोड़ना सीखना चाहिए। ज़िंदगी को ज़्यादा संतुलित तरीके से देखें और चिंता करने में बिताया जाने वाला समय कम करें।
10. **जुनून और शौक को पूरा करें:** पुराने शौक या नई चीज़ों में शामिल होने से खालीपन को भरने में मदद मिल सकती है और आपको नई ऊर्जा और सकारात्मक नज़रिया मिल सकता है।
11. **चरणबद्ध सेवानिवृत्ति:** पार्ट-टाइम काम या ब्रिज एम्प्लॉयमेंट के ज़रिए धीरे-धीरे ट्रांज़िशन करने से बदलाव आसान हो सकता है, जिससे लोग नई जीवन-शैली में समायोजित होते हुए अपने उद्देश्य और सामाजिक संपर्क को बनाए रख सकते हैं।

इन मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझकर और उन पर ध्यान देकर, सेवानिवृत्त होने वाले लोग जीवन के इस महत्वपूर्ण बदलाव को ज़्यादा आसानी से पार कर सकते हैं और उद्देश्य तथा संतुष्टि की एक नई भावना पा सकते हैं।

सेवानिवृत्ति में वास्तविक खुशी एक ऐसी विवेकपूर्ण जीवनशैली को अपनाना है, जिसमें काम से आज़ादी को सार्थक गतिविधि की तलाश के साथ परिपूरित किया जाता है। एक खुशहाल सेवानिवृत्त जीवन एक स्वयं द्वारा लिखी हुई सफलता की कहानी है, जो हर दिन प्रतिबद्धता, जुड़ाव, व्यक्तिगत विकास और खोज के इरादे से बनाई जाती है।

आइए हम एक उत्कृष्ट नजरिए के साथ अपने जीवन को फिर से प्रारंभ करें... हमारा प्रत्येक दिन व्यवस्थित गतिविधियों से भरा रहे।

वानिवृत्ति में खुशी एक सफ़र है, मंज़िल नहीं।

विवेकशील रहें, जिज्ञासु रहें और इस सफ़र का भरपूर आनंद ले।

दैनंदिनीः सफल जीवन के लिए मैनेजमेंट सूत्र

रिंकु दुबे वैष्णवी
लिपिक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

समय

जो लोग समय का सदुपयोग करना नहीं जानते उनका जीवन भी अनुपयोगी बन जाता है। समय काटना अर्थात समय का दुरूपयोग करना और समय को जीना अर्थात समय का सदुपयोग करना। हमारे शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य अपनी नासमझी में अपने जीवन को व्यर्थ गँवाता है।

"कालो न यातो वयमेव याताः"

अर्थात मनुष्य समझता है कि वह समय काट रहा है मगर सच्चाई यह है, कि वह समय को नहीं अपितु समय ही उसे काट रहा है। समय उन लोगों द्वारा ही जीया जाता है जो निरंतर पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। जो नयें सृजन और सफल होने के लिए निरन्तर कर्म करने में विश्वास रखते हैं।

मेहनत को छोड़ केवल किस्मत में विश्वास रखने वाले मनुष्य ही समय को जीने की अपेक्षा काटने में लगे रहते हैं। प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिये ताकि आपका प्रभात शुभप्रभात और रात्रि शुभरात्रि बन सके एवं स्वयं के जीवन को भी आप उन्नति और उत्थान की ओर अग्रसर कर सकें।

समयबद्धता

समय को अपना समझने की भूल कभी मत करें। जीवन में अवसर बार बार नहीं मिला करते इसलिए अवसर को कभी चूकना नहीं चाहिए। अपने काम को समय पर करने की आदत बनाओ क्योंकि आप घड़ी तो खरीद सकते हो मगर समय को नहीं। आप सिर्फ घड़ी को अपने हाथों में बाँध सकते हैं, वक्त को कदापि नहीं। वक़्त को कोई नहीं रोक पाया।

घड़ी भले ही पीछे भी हो सकती है मगर वक्त पीछे नहीं हो सकता और घड़ी तो बंद भी हो जाती है मगर उससे समय चक्र नहीं बंद हो जाता। वक़्त का सम्मान ना करने वाले का एक दिन वक़्त भी सम्मान नहीं करता है।

अतः याद रखना कि काम समय पर ही पूरा किया जाये क्योंकि घड़ी भले ही आपकी हो मगर वक्त अपनी चाल से चलता है किसी और की चाल से नहीं। दुनियाँ में कोई भी ऊँचे मुकाम पर पहुंचा है तो मेहनत और समयबद्धता के कारण। कोई भी कार्य हो उसकी पूरे होने की समय सीमा जरूर हो

बुद्धि

आज संसार में बुद्धि की कहीं कमीं नहीं है पर शुद्धि की बहुत कमीं है। बुद्ध बनने के लिए बुद्धि नहीं शुद्धि की आवश्यकता है। बुद्धि सृजन में कम विध्वंश में ज्यादा लगी हुई है। बुद्धि जोड़ने में कम तोड़ने में ज्यादा लग रही है। जीवन किसी को नहीं थकाता, बुद्धि थका देती है।

संसार में कुछ बुद्धिमान तो केवल मीमांसा करने में ही लगे रहते हैं। अँधेरे को कोसने में ही जीवन लगा देते हैं। काश ! एक पल दीपक जलाने का भी बिचार उन्हें आ जाता। कुछ बुद्धिमान गतिशील नहीं है, कुछ की गतिशीलता गलत दिशा में चली गई है।

इस बुद्धि का शोधन कैसे किया जाये? सत्संग के आश्रय से ही बुद्धि का शोधन सम्भव है। आपके पास ऊर्जा की कोई कमीं नहीं है पर चेतना की कमी है। कर्मशील तो हो पर चिन्तनशील भी बनना चाहिए। जिससे संसार का उपकार हो और संसार आपका ऋणी रहे।

प्रतिबद्धता

आपके द्वारा संपन्न किसी भी कार्य का मुल्यांकन लोगों द्वारा दो तरह से होता है। एक लोग जो उससे कुछ सीखते हैं और दूसरे जो उसमें कुछ गलती निकालते हैं। ऐसा कोई अच्छा काम नहीं जो आप करो और कुछ लोगों के लिए वो प्रेरणा न बन सके तो ऐसा भी कोई काम नहीं जो करो और दूसरे उसमें गलती न निकालें। इस दुनियाँ में सदा सबको एक साथ संतुष्ट करना कभी किसी के लिए भी आसान और संभव नहीं रहा। भगवान सूर्य नारायण उदित होते हैं तो कमल के पुष्प प्रसन्न होकर खिल खिलाने लगते हैं। वहीं दूसरी ओर उलूक पक्षी आँख बंद करके बैठ उसी मंगलमय प्रभात को कोसने लगता है, कि ये नहीं होता तो मैं स्वच्छंद विचरण करता। नदी जन - जन की प्यास बुझाकर सबको अपने शीतल जल से तृप्ति प्रदान करती है मगर कुछ लोगों द्वारा नदी को ये कहकर कभी-कभी यह दोष भी दिया जाता है कि नदी का ये प्रवाह न होता तो कई लोग डूबने से बच जाते। हताश और निराश होने के बजाय ये सोचकर आप अपना श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम और महानतम सदा समाज को देते रहने के लिए प्रतिबद्ध रहें कि निंदा और आलोचना से देवता नहीं बच पाये तो हम क्या

चीज हैं..?

आशा

जब-जब हमारी दृष्टि अभाव की ओर जायेगी, तब-तब जीवन में अशांति का प्रवेश एवं मन में उद्वेग होगा। आज हमारी स्थिति यह है कि जो हमें प्राप्त है उसका आनंद तो लेते नहीं, वरन जो प्राप्त नहीं है उसका चिन्तन करके जीवन को शोकमय कर लेते हैं। आज हमारी आशा स्वयं से ज्यादा दूसरों से हो गई है और दूसरों से हमारी यही अपेक्षा हमें कभी सुख से रहने नहीं देती।

दुःख का मूल कारण हमारी आवश्यकताएँ नहीं हमारी इच्छाएँ हैं। हमारी आवश्यकताएं तो कभी पूर्ण भी हो सकती हैं मगर इच्छाएँ नहीं। प्रकृति का एक अटूट नियम है और वो ये कि यहाँ आवश्यकता छोटे-छोटे कीट पतंगों की भी पूरी हो जाती है मगर इच्छाएँ तो बड़े-बड़े सम्राटों की भी अधूरी रह जाती है। एक इच्छा पूरी होती है तभी दूसरी खड़ी हो जाती है। इसलिए शास्त्रकारों ने लिखा है-

आशा हि परमं दुखं नैराश्यं परमं सुखं।

दुःख का मूल हमारी आशा ही हैं। हमें संसार में कोई दुखी नहीं कर सकता, हमारी अपेक्षाएँ ही हमें रुलाती हैं। यह भी सत्य है कि यदि इच्छायें न होंगी तो कर्म कैसे होंगे? इच्छा रहित जीवन में नैराश्य आ जाता है लेकिन अति इच्छा रखने वाले और असंतोषी हमेशा दुखी ही रहते हैं।

सत्कर्म

जिस प्रकार असली फूलों को इत्र लगाने की जरूरत नहीं होती वो तो स्वयं ही महक जाया करते हैं। उसी प्रकार अच्छे लोगों को किसी प्रशंसा की जरूरत नहीं होती। वो तो अपने श्रेष्ठ कर्मों की सुगंधी से स्वयं के साथ-साथ समष्टि को महकाने का सामर्थ्य रखते हैं। इत्र की खुशबु तो केवल हवा की दिशा में बहती है मगर चरित्र की खुशबु वायु के विपरीत अथवा सर्वत्र बहती है। अपने अच्छे कार्यों के लिए किसी से प्रमाणपत्र की आशा नहीं रखें, आपके अच्छे कर्म ही स्वयं में सर्वश्रेष्ठ प्रमाणपत्र भी हैं।

जीवन में एक बात हमेशा याद रखना चाहिए कि आपके अच्छे कार्यों को जगत में किसी ने देखा हो या नहीं मगर जगदीश ने अवश्य देखा है। उस प्रभु ने अवश्य देखा है। आपके चाहने से आपको कोई पुरस्कार मिले या नहीं मगर आपके अच्छे कर्मों के फलस्वरूप एक दिन उस प्रभु द्वारा आपको अवश्य पुरस्कृत और सम्मानित किया जायेगा। ये बात भी सत्य है कि आपकी प्रशंसा तब नहीं होती जब आप चाहते हैं।

अपितु तब होती है, जब आप अच्छे कर्म करते हैं। पानी पीने से प्यास स्वतः बुझती है,अन्न खाने से भूख स्वतः मिटती है और औषधि खाने से आरोग्यता की प्राप्ति स्वतः हो जाती है। इसी प्रकार अच्छे कर्म करने से जीवन में श्रेष्ठता आती है और समाज में आपका सम्मान स्वतः बढ़ जाता है। अतः सम्मानीय बनने के लिए नहीं अपितु सराहनीय कार्य करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहें।

आत्मानुशासन

स्वयं के बनाए नियमों पर चलने वाला व्यक्ति एक दिन अपनी मंजिल तक अवश्य पहुंच जाता है। जो लोग अपने लिए नियम नहीं बनाते, उन्हें फिर दूसरों के बनाये हुए नियमों पर चलना पड़ता है। मंजिल तक पहुँचने के लिए रास्ता मिल जाना ही पर्याप्त नहीं है अपितु एक अनुशासन, समर्पण, प्रतिबद्धता और एक बहुत बड़े जुनून की भी आवश्यकता होती है।

जीवन में छोटे-छोटे नियम आपको बड़ी-बड़ी परेशानियों से बचा लेते हैं। बड़ी परेशानियों की वजह सिर्फ इतनी सी होती है छोटे नियमों का पालन ना करना।

कोई दूसरा आप पर आकर राज करे इससे अच्छा है, आप स्वयं ही अपने पर राज कीजिये। अपने जीवन के लिए कुछ नियम जरूर बनाना और उनका पालन भी करना चाहिए, नियम से ही निर्वाण है अर्थात् नियम से ही चरम का मार्ग प्रशस्त होता है।

इच्छाशक्ति

दुनियाँ में सबसे अधिक कोई बलवान है तो वो है इच्छाशक्ति। दुनियाँ की हर चीज इसके माध्यम से तुम्हें मिल सकती है। चाह होगी तो राह अपने आप मिल जाएगी। वो हर चीज तुम्हें प्राप्त होती है जो तुम्हारे लिए जुनून बन जाती है।

स्वामी विवेकानंद जी कहते थे कि आगे बढ़ने की, महान बनने की, सफल होने की, कुछ अलग करने की इच्छा जरूर रखो। संसार के जितने भी साधन हैं, वो इंसान के लिए ही बने हैं। तुमने अपने दोनों हाथ आँखों पर रखे हैं और चिल्ला रहे हो कि अँधेरा है।

अपने हाथ अलग करो, देखो चारों तरफ प्रकाश है। कमजोर को कुछ भी नहीं मिलता। साहसी को सब कुछ मिलता है। कायरता के अंधेरे से बाहर निकलो और आगे बढ़ने का सपना देखो, उसी को जियो। हर चीज तुम्हें प्राप्त होगी।

सृजनात्मकता

यदि कोई यह कहता है कि उसने अपने जीवन में कभी कोई गलती नहीं की, तो इसका मतलब हुआ कि उसने अपने जीवन में कुछ हटके नहीं किया, कुछ नया नहीं किया।

गलती करना कोई बुरी बात नहीं, एक गलती को बार-बार करना बुरी बात है। कोई भी गलती आप दो बार नहीं कर सकते,

अगर आप गलती दोहराते हैं तो फिर ये गलती नहीं आपकी इच्छा है।

उपलब्धि और आलोचना दोनों बहन हैं। उपलब्धियाँ बढ़ेंगी तो निश्चित ही आपकी आलोचना भी बढ़ेंगी। लोग निंदा करते हैं या प्रशंसा ये महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण ये है कि जिम्मेदारियाँ ईमानदारी से पूरी की गई हैं या नहीं ?

और एक बात ! जिस काम को करने में डर लगे, उसी को करने का नाम साहस है। मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है, जैसा वह विश्वास करता है, वैसा बन जाता है। खुद पर भरोसा रखना। छोड़िए यह बात कि लोग क्या कहेंगे? लोगों की परवाह किये बिना अपने विचारों को सृजन का रूप दे ताकि हर कोई कह सके "मान गए आपको"

ईर्ष्या

ईर्ष्या में जलने वाला व्यक्ति अपनी खुशियों को भी जला डालता है। किसी की उन्नति, वैभव को देखकर ईर्ष्या मत करो क्योंकि आपकी ईर्ष्या से दूसरों पर तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा मगर आपकी प्रवृत्ति जरूर बिगड़ जाएगी। किसी दूसरे की समृद्धि या उसकी किसी अच्छी वस्तु को देखकर यह भाव आना कि यह इसके पास न होकर मेरे पास होनी चाहिए थी, बस इसी का नाम ईर्ष्या है।

ईर्ष्या सीने की वो जलन है, जो पानी से नहीं अपितु सावधानी से शांत होती है। ईर्ष्या की आग बुझती अवश्य है किन्तु बल से नहीं अपितु विवेक से। ईर्ष्या वो आग है जो लकड़ियों को नहीं अपितु आपकी खुशियों को ही जला डालती है अत: संतोष और ज्ञान रूपी जल से इसे और अधिक भड़कने से रोको ताकि आपके जीवन में खुशियाँ नष्ट होने से बच सकें। जलो मत, साथ-साथ चलो, क्योंकि खुशियाँ जलने से नहीं अपितु सदमार्ग पर चलने से मिला करती है।

त्याग

जीवन में केवल प्राप्ति का ही स्थान नहीं अपितु त्याग का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। कई बार प्राप्ति से नहीं अपितु आपके त्याग से आपके जीवन का मूल्यांकन किया जाता है। माना कि जीवन में पाने के लिए बहुत कुछ है मगर इतना ही पर्याप्त नहीं क्योंकि यहाँ खोने को भी बहुत कुछ है। जीवन में बहुत सी चीजें अवश्य प्राप्त करनी चाहिए मगर बहुत सारी चीजों का त्याग भी कर देना चाहिए।

प्राप्ति ही जीवन की चुनौती नहीं, त्याग भी जीवन के लिए एक चुनौती है। अतः जीवन दो शर्तों पर जिया जाना चाहिए। पहली यह कि जीवन में कुछ प्राप्त करना और दूसरी यह कि जीवन में कुछ त्याग करना।

एक जीवन को पूर्ण करने के लिए आपको प्राप्त करना ही नहीं अपितु बहुत कुछ त्यागना भी होता है,आत्म-चिन्तन के बाद क्या प्राप्त करना है और क्या त्याग करना है, यह भी आप सहज ही समझ जाओगे। श्रेष्ठ की प्राप्ति एवं निकृष्ट का त्याग यही जीवन उन्नति का मूल है। एक फूल को सबका प्रिय बनने के लिए खुशबू तो लुटानी ही पड़ती है।

दृढ़ इच्छाशक्ति

सही अर्थों में सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि हमने जिंदगी में कितनी ऊँचाई हासिल की है, अपितु इस बात से मापी जाती है कि हम जिंदगी की राहों में कितनी बार गिर कर खड़े हुए हैं। किसी व्यक्ति की सफलता का आंकलन उसकी गिर कर उठने की क्षमता से ही किया जाता है।

सफलता कुछ कर सकने की इच्छा से आती है और असफलता कुछ न कर सकने की इच्छा से आती है। यदि जीवन में इच्छाशक्ति है तो सफलता संभव है और इच्छाशक्ति नहीं है तो सफलता भी असंभव है।

सफल जीवन और असफल जीवन में बल और बुद्धि का अंतर नहीं होता। बल और बुद्धि तो असफल लोगों में भी बहुतायत में मिल जाती है मगर उनमें अगर किसी बात का मुख्य अंतर है तो वो है, दृढ़ इच्छा शक्ति।

जीवन में सफलता पाने का एक अचूक मंत्र यह भी है कि हम बस उन सलाहों पर चलते रहें जो सलाह हम अक्सर लोगों को दिया करते हैं।

जिस दिन आदमी अपने द्वारा दूसरों को दी जाने वाली सलाह पर खुद चलना सीख जायेगा, उसी दिन उसकी सफलता भी सुनिश्चित हो जायेगी।

अग्नि चाहे दीपक की हो, चिराग की हो अथवा मोमबत्ती की लौ से हो, इसके दो ही कार्य है जलना और प्रकाश करना। यह हमारे विवेक के ऊपर निर्भर करता है कि हम इसका कहाँ उपयोग करें।

यही लौ मनुष्य के शरीर को शांत भी कर देती है, यही लौ अंधकार को दूर कर सम्पूर्ण जगत को प्रकाशमय कर देती है। चिन्तन की बात यह है कि उपयोग करने के ऊपर निर्भर है वो उसी वस्तु से पुण्यार्जन कर सकता है तो थोड़ी चुक होने पर पापार्जन भी कर सकता है। संसार में किसी भी वस्तु को, व्यक्ति को, स्थिति को कोसने की आवश्यकता नही है। जरुरत है उसका गुण, स्वभाव और प्रकृति समझकर समाज के हित में उपयोग करने की। दुनिया बड़ी खूबसूरत है इसे अपने विवेक, चिन्तन और शुभ आचरण से और अधिक सुन्दर बनाया जाए, यही सच्चा यज्ञ होगा।

बक्खाली और हेनरी आइलैंड की यात्रा

रोहित छत्री
लिपिक श्रेणी - II
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

दिन 1: ड्राइव, पुल पार करना, और तटीय आगमन

हमारी यात्रा भोर से पहले शुरू हुई, लेकिन इस बार नामखाना पुल के कारण हमें नौका के इंतजार की चिंता नहीं थी, जिसने यात्रा की समय-सीमा को काफी कम कर दिया।

विस्तृत ड्राइव मार्ग: कोलकाता से नामखाना (लगभग 125 किमी)

1. कोलकाता से डायमंड हार्बर (बजबज रोड के माध्यम से) (लगभग 50 किमी): हमने कोलकाता से बजबज (Budge Budge) रोड का मार्ग चुना। यह रूट हुगली नदी के किनारे के समानांतर चलता है। बजबज को पार करने के बाद सड़क की गुणवत्ता सुधरी। यह मार्ग हमें औद्योगिक क्षेत्रों से निकालकर धीरे-धीरे ग्रामीण बंगाल के करीब लाता है। नदी की निकटता के कारण हवा में खारे पानी की हल्की गंध पहले से ही महसूस होने लगती है।

2. डायमंड हार्बर से नामखाना (लगभग 75 किमी): डायमंड हार्बर के बाद, सड़क अच्छी बनी रहती है, लेकिन यातायात अधिक स्थानीय हो जाता है-अधिक स्थानीय बसें और गाँव के बाज़ार अब भी देखने को मिलते हैं। परिदृश्य स्पष्ट रूप से ग्रामीण बंगाल का हो जाता है, जिसमें नारियल और सुपारी (सुपारी) के पेड़ों के साथ धान के खेतों के खंड फैले हुए हैं।

हटानिया-दोआनिया क्रीक क्रॉसिंग: अब एक निर्बाध पुल!

यात्रा का सबसे बड़ा बदलाव हटानिया-दोआनिया क्रीक पर बना नया पुल है।

- **पुराना अनुभव बनाम नया:** जहाँ पहले घंटों नौका के इंतज़ार में बिताने पड़ते थे, वहीं अब यह पारगमन पूरी तरह से निर्बाध है। पुल का निर्माण न केवल समय बचाता है, बल्कि यह यात्रा को अधिक आरामदायक और तेज़ भी बनाता है।
- **पुल का दृश्य:** नदी के ऊपर से ड्राइव करना अपने आप में एक अद्वितीय अनुभव है। पुल की ऊँचाई से मुरीगंगा नदी और इसके आस-पास के मैंग्रोव डेल्टा का एक शानदार, विस्तृत दृश्य दिखाई देता है। यह क्षण भी विश्राम और प्रकृति से जुड़ने का एक नया तरीका प्रदान करता है।

नामखाना से बक्खाली (लगभग 25 किमी)

पुल पार करने के बाद, सड़क एकल-लेन है लेकिन अच्छी तरह से पक्की है, जो सीधे गाँवों और बिखरे हुए मत्स्यपालन तालाबों (भेरी) के मिश्रण से होकर गुजरती है। अंतिम खंड आपको सीधे बक्खाली के मुख्य शहर क्षेत्र तक पहुँचाता है, जहाँ आप चेक-इन के लिए तैयार होते हैं।

बजट प्रवास: आराम और लागत का संतुलन

बक्खाली और फ्रेजरगंज में ₹800–₹1,500 प्रति रात की सीमा में स्वच्छ और आरामदायक गैर-एसी डबल रूम आसानी से मिल जाते हैं।

- **गेस्टहाउस सुविधाएँ:** हमने मुख्य बक्खाली बस स्टैंड/चौरास्ता के पास एक गेस्टहाउस चुना।
- **आवास:** कमरे साफ़-सुथरे और बुनियादी सुविधाओं (कार्यात्मक बाथरूम) से सुसज्जित थे।
- **स्थान:** मुख्य समुद्र तट तक पैदल पहुँच 5-10 मिनट थी।
- **भोजन:** गेस्टहाउसों में अक्सर इन-हाउस रसोई होती है जो ताज़ा बंगाली-शैली का भोजन (फिश थाली) परोसती है, जो सुविधाजनक और बजट के अनुकूल है।
- **हेनरी आइलैंड इको-स्टे (Sundari Tourist Complex):**

थोड़े उच्च बजट पर, हेनरी आइलैंड पर यह कॉम्प्लेक्स प्रकृति प्रेमियों के लिए अद्वितीय है। यहाँ मैंग्रोव के बीच रहना और मछली फार्मों के नज़ारे देखना एक सच्चा इको-टूरिज्म अनुभव है, हालाँकि यहाँ बुकिंग बहुत पहले करनी पड़ती है।

दिन 2: ग्रे किनारा और लाल केकड़ा साम्राज्य

बक्खाली बीच: अनूठा तटीय सौंदर्य

बक्खाली का समुद्र तट अपनी विशिष्ट ग्रे, सघन रेत के लिए जाना जाता है, जो इसे भारत के अन्य रेतीले समुद्र तटों से अलग बनाता है।

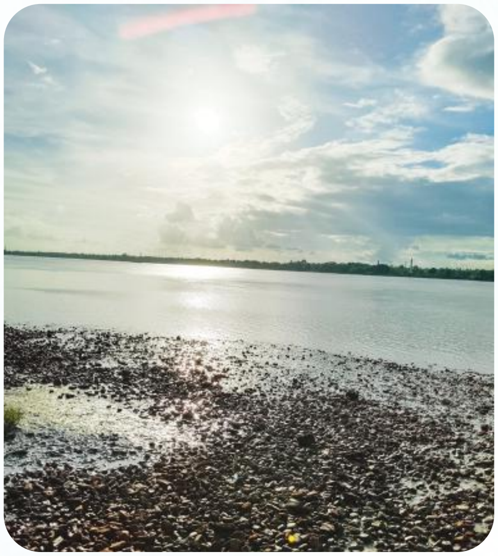

- **एकांत सैर:** हमने फ्रेजरगंज की ओर लंबी सैर की। समुद्र तट यहाँ सपाट और कठोर है, जो शांत सुबह या शाम की सैर के लिए एकदम सही है।
- **शांत वातावरण:** यहाँ की लहरें आमतौर पर कोमल और मंद होती हैं। सीगल की दूर की आवाज़ और हल्की समुद्री गर्जना मिलकर एक शांत और ध्यानपूर्ण वातावरण बनाते हैं।

हेनरी आइलैंड: मैंग्रोव और लाल केकड़े (10 मिनट की ड्राइव)

बक्खाली से लगभग 5-7 किमी दूर स्थित, हेनरी आइलैंड एक प्राचीन, एकांत स्वर्ग है।

- **मैंग्रोव की ओर:** यहाँ पहुँचने के लिए सड़क भेरी (मत्स्यपालन फार्म) से होकर गुजरती है, जिसके बाद आपको मैंग्रोव के घने पैच के बीच से गुजरते हुए एक छोटे बांस के पुल/पैदल मार्ग को पार करना पड़ता है। यहाँ की हवा में मिट्टी और खारे पानी की एक स्वस्थ गंध आती है।
- **लाल केकड़ों का साम्राज्य:** कम ज्वार के दौरान लाल फ़िडलर केकड़ों का नज़ारा अविश्वसनीय होता है। वे हजारों की संख्या में समुद्र तट को एक जीवंत लाल कालीन की तरह ढक लेते हैं, लेकिन मानव उपस्थिति महसूस होते ही तुरंत अपने बिलों में गायब हो जाते हैं।
- **वॉच टॉवर का दृश्य:** सुंदरी कॉम्प्लेक्स के वॉच टॉवर पर चढ़ना आवश्यक है। यहाँ से मैंग्रोव, खाड़ी का नीला विस्तार, और चांदी-नीले भेरी (फिश फार्म) का अद्भुत 360-डिग्री पैनोरमा देखने को मिलता है।

शानदार भोजन: बजट में ताज़ा समुद्री व्यंजन

बक्खाली समुद्री भोजन प्रेमियों के लिए एक पाक स्वर्ग है, जहाँ भोजन पूरी तरह से दिन की ताज़ा पकड़ पर निर्भर करता है।

- **'चुनो और पकाओ' मॉडल:** मुख्य बाज़ार क्षेत्र में, आप खुले स्टालों पर वेटकी, पोम्फ्रेट, जंबो प्रॉन (चिंगरी), और स्थानीय मछली की विस्तृत श्रृंखला देख सकते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि आप अपनी मछली चुनते हैं, कीमत तय करते हैं, और उसे तुरंत बगल के ढाबे में पकाने के लिए दे देते हैं।

  • **हमारे पसंदीदा व्यंजन:** जंबो प्रॉन करी (बड़ा चिंगरी मलाईकरी) और स्थानीय मसालों में तला हुआ पोम्फ्रेट फ्राई। दो लोगों के लिए एक शानदार, ताज़ा समुद्री भोजन रात के खाने का खर्च अक्सर ₹500–₹700 से कम था।
- **पारंपरिक भोजन:** दोपहर के भोजन के लिए, फिश थाली (₹150–₹250 के आसपास) एक पारंपरिक और पेट भरने वाला विकल्प है।

दिन 3: फ्रेजरगंज, पवनचक्की, और विदाई

फ्रेजरगंज मछली पकड़ने का बंदरगाह

बक्खाली से 5 मिनट की ड्राइव पर स्थित, फ्रेजरगंज में एक बड़ी पवनचक्की पार्क है। विशाल टर्बाइनों को खारे पानी की हवा में घूमते देखना प्रकृति और प्रौद्योगिकी का एक अनूठा संगम है। बंदरगाह पर मछली पकड़ने वाली रंगीन नावों को देखना और स्थानीय अर्थव्यवस्था की हलचल को महसूस करना विदाई से पहले एक बेहतरीन अनुभव था।

नामखाना पुल के कारण वापसी की यात्रा तेज और तनावमुक्त थी। बक्खाली और हेनरी आइलैंड की यात्रा ने अप्रदूषित, शांत सुंदरता और सस्ते भोजन का एक गहरा अनुभव दिया, जो बंगाल डेल्टा के किनारे एक आदर्श बजट-अनुकूल तटीय विश्राम प्रदान करता है।

नवाचार और विविधीकरण के आयाम

राकेश देवगड़े
अनुवादक (प्रशिक्षु)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

विविधीकरण की अवधारणा

विविधीकरण का सरल सा अर्थ होता है कि, पूंजी को किसी एक संपत्ति या क्षेत्र में केंद्रित करने के बजाय विभिन्न प्रकार के निवेश में बांटकर जोखिम को कम किया जा सकता है। चूंकि अलग-अलग निवेश आर्थिक स्थितियों के बदलाव पर अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं, इसलिए विविधीकरण विफलताओं के समग्र प्रदर्शन पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करता है। वित्तीय सिद्धांत में विविधीकरण पोर्टफोलियो प्रबंधन से जुड़ा हुआ है, जहाँ निवेशक संपत्ति के उचित मिश्रण के माध्यम से जोखिम और मुनाफे को संतुलित करने की कोशिश करते हैं। भारत जैसी विकासशील और मिश्र अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए, सेक्टोरल और क्षेत्रीय जोखिमों को संतुलित करने के लिए विविधीकरण आवश्यक है। विविधीकरण इस विचार पर आधारित है कि एक क्षेत्र में खराब प्रदर्शन की भरपाई दूसरे क्षेत्र में अच्छे प्रदर्शन से की जा सकती है। यह सिद्धांत व्यक्तियों, वित्तीय संस्थानों, निजी कंपनी, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी तथा नीति बनाने वालों के लिए विवेकपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने का आधार है, विशेषत: ऐसे परिस्थिति में जब आर्थिक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव से भरा हो।

विविधीकरण का सिद्धांत

(Don't put all your eggs in one basket) - यह एक मुख्य जोखिम प्रबंधन रणनीति है, जिसका मतलब है कि निवेश को अलग-अलग एसेट्स, इंडस्ट्रीज़ और जगहों पर फैलाना (सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखना) ताकि एक क्षेत्र में खराब प्रदर्शन की भरपाई दूसरे क्षेत्र में होने वाले फायदे से हो सके, जिससे कुल पोर्टफोलियो जोखिम कम होती है और रिटर्न स्थिर होता है, हालांकि यह एक ही जगह से होने वाले संभावित फायदों को भी सीमित करता है। यह पूंजी को नुकसान से बचाने और लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों को पाने के लिए अलग-अलग जोखिम/रिटर्न को संतुलित करने के विषय में है।

यह कैसे काम करता है "अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें"- यह सुंदर उदाहरण है, अगर आप एक टोकरी (निवेश) गिरा देते हैं, तो आप अपने सारे अंडे (पैसे) नहीं खोते हैं।

विविधीकरण क्यों महत्वपूर्ण है:

- जोखिम कम करना : किसी एक उत्पाद से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए।
- राजस्व बढ़ाना : नए बाजारों और क्षमताओं में प्रवेश करके आय के स्रोत बढ़ाने के लिए।
- बाजार में प्रतिस्पर्धा : बदलते परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए ।

निजी क्षेत्र में विविधीकरण

भारत की प्रमुख डाइवर्सिफाइड कंपनियों में टाटा ग्रुप, ग्रासिम इंडस्ट्रीज आदित्य बिड़ला ग्रुप, JSW ग्रुप और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसे बड़ी कंपनियाँ शामिल हैं, जो सीमेंट, केमिकल्स, टेलीकॉम, रिटेल, इंजीनियरिंग, एग्री-बिजनेस, आईटी और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे कई सेक्टर में काम करते हैं। ये कंपनियाँ रिस्क कम करने और विकास के बड़े मौकों का फायदा उठाने के लिए अपने व्यवसाय को अलग-अलग इंडस्ट्री (जैसे, मैन्युफैक्चरिंग, सर्विस, फाइनेंस) में फैलाती रही हैं। इन सभी का बड़ा पोर्टफोलियो है, जो एक एकल सेक्टर के बजाय विविध /अलग-अलग बिजनेस प्रारूप को दिखाता है।

टाटा ग्रुप - टाटा ग्रुप एक भारतीय वैश्विक बहुत बड़ा व्यवसाय समूह है जिसके बिज़नेस आईटी (टीसीएस), ऑटोमोटिव (टाटा मोटर्स), स्टील (टाटा स्टील), कंज्यूमर गुड्स (टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स), टाइटन, वोल्टास), हॉस्पिटैलिटी (ताज होटल्स), पावर (टाटा पावर), केमिकल्स (टाटा केमिकल्स), टेलीकॉम (टाटा कम्युनिकेशंस), और फाइनेंशियल सर्विसेज़ (टाटा कैपिटल, टाटा एआईजी) जैसे कई क्षेत्र में फैले हुए हैं।

टेक्सटाइल से टेक तक विस्तारित, टाटा का व्यवसाय कपड़ा उद्योग से शुरू हुआ था और आज स्टील (टाटा स्टील),

हॉस्पिटैलिटी (ताज होटल्स), ऑटोमोबाइल (टाटा मोटर्स), आईटी (टीसीएस) तक विस्तारीत हैं। टाटा के विविधीकरण का मतलब एक मज़बूत, बहु-क्षेत्रीय साम्राज्य है जो वित्तीय स्थिरता को नवाचार और वैश्विक अवसरों के साथ संतुलित करता है। सामाजिक ज़िम्मेदारी और मज़बूत प्रबंधन के प्रति प्रतिबद्धता टाटा ब्रांड की विश्वसनीयता बढ़ाती है, जो रणनीति और व्यवसाय के अनुसार एक महत्वपूर्ण अमूर्त संपत्ति है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज - रिलायंस इंडस्ट्रीज की शुरुआत कपड़ा मिल व्यवसाय से हुई और बाद में विस्तार तथा विविधीकरण करते हुये आज ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स, खुदरा, दूरसंचार (जियो), मीडिया, मनोरंजन और नवीकरणीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा और अन्य स्वच्छ ऊर्जा जैसे कई क्षेत्रों में कारोबार करती है।

आईटीसी लिमिटेड- आईटीसी लिमिटेड कंपनी भारत की एक बड़ी और विविध व्यावसायिक समूह है, जिसकी स्थापना एक टोबैको कंपनी के रूप में हुई थी और अब यह एफएमसीजी, होटल, पैकेजिंग, पेपरबोर्ड, कृषि-व्यवसाय और आईटी सहित एक विशाल पोर्टफोलियो वाली एक क्लासिक कंपनी हैं जो कई क्षेत्रों में काम करती है, ये कंपनी तंबाकू व्यवसाय से शुरू होकर आज एक भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी बन चुकी है।

लार्सन एंड टुब्रो - लार्सन एंड टुब्रो कंपनी की शुरुआत एक साझेदारी फर्म के रूप में की गई थी, जिसका प्रारंभिक कार्य यूरोप से मशीनरी का आयात और व्यापार करना था लेकिन आज यह कंपनी बुनियादी ढांचे, रक्षा, ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय सेवाएँ तथा औद्योगिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर EPC (इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण) समाधान प्रदान करती है, जो देश के प्रमुख विकास क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है।

ग्रासिम इंडस्ट्रीज: ग्रासिम इंडस्ट्रीज आदित्य बिड़ला समूह का भाग हैं, जो सीमेंट (अल्ट्राटेक), रसायन, वस्त्र और वित्तीय सेवाओं में शामिल है।

हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड: हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड एक अग्रणी एफ़एमसीजी कंपनी जिसकी खाद्य और पेय पदार्थ व्यक्तिगत देखभाल और घरेलू देखभाल उत्पाद में गहरी बाजार पहुंच है।

सार्वजनिक क्षेत्र में विविधीकरण

सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां अपने लंबे समय के वित्तीय स्थिति को जोखिम-मुक्त करने, नए राजस्व स्रोत बनाने और मौजूदा विशेषताओं का लाभ उठाने के लिए अपने व्यवसाय पोर्टफोलियो में विविधता ला रहे हैं। अधिकांश सरकारी कंपनियाँ अपनी मुख्य विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, संबंधित और तकनीकी रूप से उन्नत क्षेत्रों में विविधता लाने को प्रयत्नशील हैं। विविधीकरण का एक प्रमुख क्षेत्र राष्ट्रीय नेट-जीरो लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाने के लिए स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ना है। बिजली क्षेत्र के कंपनी जैसे एनटीपीसी नवीकरणीय क्षमता का विस्तार कर रहे हैं और इलेक्ट्रिक बसों को तैनात कर रहे हैं। तेल और गैस कंपनियाँ हरित हाइड्रोजन और बायोफ्यूल के क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। कोल इण्डिया भविष्य की अनिश्चितता को कम करने के लिए बदलती ऊर्जा प्रणाली के भीतर अवसरों की तलाश कर रहे हैं।

विविधीकरण के तरीके

सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां विविधीकरण करने के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल कर रहें हैं, जिनमें शामिल हैं-

- आंतरिक विकास: नए उद्यम शुरू करने के लिए आंतरिक कौशल और संसाधन का इस्तेमाल करना।
- ज्वाइंट वेंचर/स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप: विशेषज्ञता शेयर करने और जटिल, ज़्यादा जोखिम वाले प्रोजेक्ट में निवेश करने के लिए दूसरे पीएसयू या प्राइवेट कंपनियों के साथ सहयोग करना
- अधिग्रहण: किसी नए इंडस्ट्री में जल्द प्रवेश के लिए मौजूदा उद्योग का अधिग्रहण करना।
- नवाचार - किसी मौजूदा उत्पाद, प्रक्रिया, सेवा में नयापन लाना, सुधार करना या उसे पूर्णत: से नया बनाना।

नवाचार उद्यमिता का खास तरीका है, जो संसाधन को संपत्ति में बनाने की नई क्षमता प्रदान करता है। इसका मकसद तेज़ी से आर्थिक विकास पर ध्यान देते हुए रोज़गार के मौके पैदा करना है। सरकार का मानना है कि नवाचार को प्रोत्साहन देने से आर्थिक विकास में तेज़ी आएगी। भारत में सार्वजनिक क्षेत्र नए इनोवेशन आधारित ईकाई के स्थापना से विकास की दिशा में एक बड़ी छलांग लगाने के लिए तैयार है।

सार्वजनिक क्षेत्र में विविधीकरण के उदाहरण

बाल्मर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड (Balmer Lawrie & Co. Ltd.)-भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में विविधीकरण के कार्य का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण बाल्मर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड का हैं। कंपनी अपनी नवाचार, गुणवत्ता और स्थिरता के लिए जानी जाती है। बाल्मर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है, जिसकी स्थापना 1867 में हुई थी यह औद्योगिक पैकेजिंग, ग्रीस और लुब्रिकेंट, यात्रा और पर्यटन, और लॉजिस्टिक्स जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एक विविध व्यवसाय है, जो अपनी विभिन्न व्यावसायिक इकाइयों और संयुक्त उद्यमों के माध्यम से देश के विकास में योगदान करती है। यह एक बहु-गतिविधि, बहु-प्रौद्योगिकी और बहु-स्थानिक समूह है, जो विभिन्न क्षेत्रों में काम करता है, जैसे औद्योगिक पैकेजिंग (स्टील ड्रम), ग्रीस और लुब्रिकेंट, प्रदर्शन रसायन आदि। इसी के साथ-साथ ये कंपनी यात्रा और पर्यटन, लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवाएँ, रिफाइनरी और ऑयल फील्ड सेवाएँ, कोल्ड चेन क्षेत्र में भी कार्यरत हैं।

SAIL (स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड)- अपने विविधीकरण के तहत उत्पादन क्षमता बढ़ाने, वैल्यू-एडेड उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करने, नई तकनीकों को अपनाने जैसे डिजिटलीकरण एवं एआई और हरित पहल (ग्रीन हाइड्रोजन, कार्बन कैप्चर) के साथ-साथ रक्षा, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विस्तार कर रहा है। SAIL के विविधीकरण के प्रमुख क्षेत्र मे शामिल हैं, वैल्यू-एडेड उत्पाद जैसे ऑटोमोबाइल, रेलवे, ऊर्जा और रक्षा जैसे क्षेत्रों के लिए उच्च-मूल्य वाले विशेष स्टील (जैसे नेवल-ग्रेड प्लेट) के उत्पादन पर जोर। परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिए ऑटोमेशन और डेटा-संचालित निर्णय लेना, हरित पहल और स्थिरता, हाइड्रोजन-आधारित स्टीलमेकिंग के लिए परीक्षण। नवीकरणीय ऊर्जा: फ्लोटिंग और रूफटॉप सोलर प्रोजेक्ट्स।

नए क्षेत्रों में प्रवेश जैसे रक्षा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण स्टील उत्पादों की आपूर्ति करना। संक्षेप में, SAIL केवल स्टील उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रौद्योगिकी, स्थिरता और नए व्यावसायिक क्षेत्रों में निवेश करके खुद को एक व्यापक 'स्टील और ऊर्जा' कंपनी के रूप में स्थापित कर रहा है।

BHEL (भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड)- अपने पारंपरिक इंजीनियरिंग और विनिर्माण क्षेत्र से आगे बढ़कर विविधीकरण पर जोर दे रहा है, जिसमें रक्षा, रेलवे (वंदे भारत ट्रेन), इलेक्ट्रिक वाहन, हरित हाइड्रोजन, तेल और गैस, और जल जैसे नए और उच्च-विकास वाले क्षेत्रों में प्रवेश करना शामिल है, ताकि 'आत्मनिर्भर भारत' में योगदान के साथ अपनी ऑर्डर बुक और राजस्व को बढ़ाया जा सके।

बीएचईएल के विविधीकरण के मुख्य क्षेत्र में शामिल हैं, एयर डिफेंस गन और गोला-बारूद जैसे रक्षा-ग्रेड घटकों का निर्माण। वंदे भारत ट्रेनों के लिए लोकोमोटिव और ट्रैक्शन सिस्टम का निर्माण। इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और ई-मोबिलिटी समाधानों में विस्तार।परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के लिए उपकरणों का स्वदेशीकरण। बीएचईएल पारंपरिक ताकत (बिजली) के साथ-साथ भविष्य के लिए तैयार एक वैश्विक इंजीनियरिंग संगठन बनने के लिए रणनीतिक रूप से विविधीकरण कर रहा है, जो देश के बुनियादी ढांचे और रणनीतिक क्षेत्रों के विकास को गति देगा।

ONGC (ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड)- अपने मुख्य तेल और गैस व्यवसाय को सुरक्षित बनाए रखने और भविष्य की ऊर्जा को पूरा करने के लिए सामुदायिक ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स और गैस (एलएनजी, सीजीडी) के क्षेत्र में तेजी से विविधता लाने का काम कर रही है, जिसके तहत उसने सौर और पवन ऊर्जा में बड़े पैमाने पर निवेश किया है, हरित और ऊर्जा उद्योग में प्रवेश किया है, और भविष्य के लिए पर्यावरणीय ऊर्जा उद्योग पर ध्यान केंद्रित किया है। कंपनी का लक्ष्य 2030 तक 10 गीगावॉट ऊर्जा क्षमता का निर्माण करना है। सौर एवं पवन ऊर्जा पर जोर तथा पीटीसी एनर्जी और एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी जेट कंपनी के साथ संयुक्त उद्यम का निर्माण करना है। तेल से रसायन (O2C) प्लांट स्थापित करने की योजना। संक्षेप में, ओएनजीसी एक बड़ी ऊर्जा कंपनी के रूप में खुद को केवल तेल और गैस तक सीमित नहीं रखती बल्कि एक व्यापक और वैकल्पित ऊर्जा आपूर्तिकर्ता की दिशा में एक साहसिक कदम उठा रही है।

NTPC (नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन)- के विविधीकरण में मुख्य रूप से सामुदायिक ऊर्जा (सौर, पवन, जलविद्युत), परमाणु ऊर्जा, ई-मोबिलिटी, भंडारण और अन्य ऊर्जा उपकरण (जैसे ग्रीन स्पेक्ट्रल) में विस्तार कर रही है, ताकि कोयला-आधारित बिजली से हटकर एक व्यापक, स्वच्छ ऊर्जा पोर्टफोलियो बनाया जा सके, जो भारत के नेट-जीरो प्रोजेक्ट का

उद्देश्य और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना है। नवीकरणीय ऊर्जा से 2032 तक 60 गीगावॉट विद्युतीय ऊर्जा स्थापित करने का लक्ष्य हैं। एनटीपीसी मुख्यत: सौर, पवन और जल विद्युत के क्षेत्र में निवेश कर रही हैं। एनवीवीएन (एनटीपीसी विद्युत व्यापार निगम) के माध्यम से पड़ोसी देश बांग्लादेश और नेपाल के साथ सहयोग कर रही है। रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स को 'बनाने के लिए एनटीपीसी रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड नाम की एक रिन्यूएबल एनर्जी सब्सिडियरी कंपनी बनाई। NTPC इंटरनेशनल सोलर अलायंस के साथ भी साझेदारी कर रहा है, जो सोलर एनर्जी को बढ़ावा देने वाले देशों का एक नेटवर्क है और सदस्य देशों में सोलर प्रोजेक्ट्स लागू करने वाला है। संक्षेप में, एनटीपीसी पारंपरिक कोयला-आधारित बिजली से हटकर एक व्यापक, पर्यावरणीय और विविध ऊर्जा कंपनी बन गई है जो दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है, जिसमें परमाणु और आधुनिक ऊर्जा समाधान शामिल हैं।

REC(रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड)- यह कंपनी सिर्फ बिजली क्षेत्र तक सीमित न रहकर अब गैर-विद्युत अवसंरचना जैसे सड़क, मेट्रो, हवाई अड्डे, आईटी संचार, सामाजिक और वाणिज्यिक बुनियादी ढांचे (अस्पताल, स्कूल) और बंदरगाहों जैसे क्षेत्रों में भी निवेश कर रही है, साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा , इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी भंडारण और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे नए क्षेत्रों में भी अपनी उपस्थिति बढ़ा रही है, ताकि अपने राजस्व स्रोतों को विस्तृत कर सके।

HAL (हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड)- में विविधीकरण का मतलब है रक्षा और एयरोस्पेस के अपने मुख्य काम के अलावा नए क्षेत्रों में विस्तार करना, जैसे वाणिज्यिक विमानों को कार्गो में बदलना (MMTT), रक्षा क्षेत्र के अन्य हिस्सों (जैसे एवियोनिक्स, रडार, सॉफ्टवेयर) में साझेदारी और स्वदेशीकरण पर जोर देना, ताकि केवल एक उत्पाद या क्षेत्र पर निर्भरता कम हो और नए राजस्व स्रोत बनें, जिससे जोखिम घटे और 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्यों में योगदान हो।

उपसंहार

1990 के दशक में Kodak में 1,50,000 कर्मचारी काम करते थे और वो दुनिया भर में 85% फ़ोटो पेपर बेचते थे। कुछ सालों में ही डिजिटल फोटोग्राफी ने उनको बाज़ार से बाहर कर दिया। Kodak दिवालिया हो गयी और उनके सब कर्मचारी सड़क पे आ गए। उसी तरह से आडिओ कैसेट और सीडी बनाने वाली कंपनियों का व्यापार डिजिटल युग आने से बंद हो गया है। HMT(घडी), BAJAJ(स्कूटर), DYNORA(टीवी) ,MURPHY (रेडियो), NOKIA (मोबाइल), RAJDOOT(बाईक), AMBASDOR (कार) इन सभी की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं थी, फिर भी बाजार से बाहर हो गए , कारण? क्यूंकी उन्होंने समय के साथ अपने उद्योग में बदलाव नहीं किया। आने वाले 10 सालों में दुनिया पूरी तरह बदल जायेगी और आज चलने वाले 70 से 80% उद्योग बंद हो सकते हैं। आज से 10 साल पहले ऐसी कोई जगह नहीं होती थी जहां PCO न हो। फिर जब सब की जेब में मोबाइल फोन आ गया, तो पीसीओ बंद होने लगे, फिर पीसीओ वालों ने फोन का रिचार्ज बेचना शुरू कर दिया। अब तो रिचार्ज भी ऑनलाइन होने लगा है। अभी बाज़ार में हर तीसरी दुकान मोबाइल फोन से संबंधित बिक्री, सेवा, रिचार्ज, एक्सेसरीज़, मरम्मत, रखरखाव की है। उबेर (Uber) सिर्फ एक software है, उनकी अपनी खुद की एक भी कार नहीं इसके बावजूद वो दुनिया की सबसे बड़ी टैक्सी कंपनी है। एयरबीएनबी (Airbnb) दुनिया की सबसे बड़ी होटल कंपनी है, जब कि उनके पास अपना खुद का एक भी होटल नहीं है। Paytm, ola cabs , oyo rooms जैसे अनेक उदाहरण हैं। अब सब नगदी व्यवहार सीमित होने लगा है , आज कल google pay/ Paytm से भुगतान हो जाता है, अब तो लोग रेल का टिकट भी अपने फोन से ही बुक कराने लगे हैं, अब पैसे का लेनदेन भी बदल रहा है, Currency Note की जगह पहले Plastic Money ने ली और अब Digital लेनदेन हो गया है अगले 10 सालों में दुनिया भर की सड़कों से 90% पेट्रोल कारें गायब हो जायेंगी... जो बचेंगी वो या तो इलेक्ट्रिक कारें होंगी या फिर हाइब्रिड होंगी, पेट्रोल की खपत 75 % घट जायेगी, इससे बचने के संबंधित कंपनियाँ प्रयास कर रही हैं। नोकिया ने एंड्रॉयड स्वीकार नही किया, इस से हमने क्या सीखा? बदलाव को स्वीकार कीजिये, यदि आपने वक्त के साथ खुद को नहीं बदला तो नाश तय है। दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही है समय के साथ बदलने की तैयारी करें। जो इस परिवर्तन के साथ कदम मिलाकर नहीं चलता, वह अक्सर पीछे छूट जाता है। परिवर्तन कठिन हो सकता है, लेकिन यह विकास का एकमात्र रास्ता है। इसे एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें तो बदलाव केवल एक चुनौती नहीं, बल्कि एक अवसर भी है।

हंसी भरी वह एक शाम

निकिता भदानी
प्रबंधक सीएसआर
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

पिछले हफ़्ते मेरी दोस्त सोनम ने उत्साहित होकर कहा, "निकिता, चलो ज़ाकिर खान का शो देखने चलते हैं! जितने दोस्त जोड़ सकें- उतना मज़ा!" मैंने हामी भर दी और दोस्तों को पूछना शुरू किया।

सबसे पहले प्रिया के पास गई।

"चलोगी स्टैंड-अप शो?"

वह बोली, "टिकट के पैसे देकर कौन हँसता है? मुझे तो ऑफिस में ही फ्री कॉमेडी मिल जाती है!"

मैं चुपचाप आगे बढ़ गई-उसे हँसाना था या खुद हँसना था, समझ नहीं आया। फिर रीना से पूछा। उसने सबसे पहले पूछा, "बच्चों को अलाउड है क्या?"

मैंने सोचा-स्टैंड-अप के बीच बच्चों का शोर... और जवाब खुद ही समझ गई। वह बोली, "नहीं, मैं नहीं आ पाऊँगी। मुझे तो घर में ही मेरे बच्चे काफी हँसी दे देते हैं।"

एक और ना।

आखिरी उम्मीद-संदीप। वह बोला, "स्टेडियम वाला शो? इतनी दूर बैठकर क्या देखूँगा? मुझे तो घर में ही मेरी बीवी की कॉमेडी काफी है।"

मैंने हार मान ली। निराश होकर मैं सोनम के पास पहुँची और बोली, "लगता है दुनिया में हर किसी के पास अपनी-अपनी कॉमेडी चल रही है... सिर्फ हम ही ज़ाकिर खान को देखने जा रहे हैं।"

सोनम मुस्कुराई, "चिंता मत कर, मैंने 3–4 लोग और मना लिए हैं। टिकट के लिए मैंने कहा -निकिता स्पॉन्सर कर रही है।"

मैं अवाक!

आख़िरकार हम आठ लोग चल पड़े। लेकिन मज़ा तो अभी शुरू हुआ था। कुछ टिकट-बैंड पहले से घर पर डिलीवर हुए थे- और जिसने उन्हें लिया था वही घर पर भूल आया! आधा रास्ता पहुँचकर याद आया और फिर गाड़ी वापस भेजनी पड़ी। गेट पर पहुँचकर 4 किलोमीटर लंबी लाइन देखकर लगा-कितना अच्छा होता, यह दृश्य प्रिया को दिखा पाती।

हम अंदर पहुँचे और ब्रॉन्ज सीटों से दूर-दूर दिखता स्टेज देखकर थोड़ा घबराए, पर बड़े स्पीकर और स्क्रीन देखकर संतोष हो गया।

अब सबसे बड़ा मिशन-सीट ब्लॉकिंग।

मेरे झूठों की एक सूची बन गई-

"वो वॉशरूम गए हैं..."

"वो बाहर से किसी को ला रहे हैं..."

"रेड टी-शर्ट वाला मेरा दोस्त है, अभी आता है..."

मैं बहाने उतनी तेज़ी से बना रही थी जितनी तेज़ी से शो शुरू होने वाला था।

तभी एक कपल आया और लड़का बोला, "देखिए, मैं 30 मिनट से आपको देख रहा हूँ। यहाँ मैं बैठूँगा।"

मैंने हार मान ली-कॉमेडी शो से पहले कौन बहस करता है!

आख़िरकार सारे दोस्त पहुँचे। हम अलग-अलग सीटों पर फैल गए, जैसे किसी ने बैटरियों की लाइन लगा दी हो।

और फिर शो शुरू हुआ...

ज़ाकिर खान मंच पर आए...

और अगले डेढ़ घंटे हम अपनी हँसी रोक ही नहीं पाए।

आज शायद उनकी सारी पंचलाइन याद न हों...

पर वह पूरा सफर याद है-

दोस्तों को मनाना,

टिकट-बैंड भूल जाना,

ट्रैफिक,

सीट ब्लॉकिंग,

और दिन भर की अफरातफरी।

तभी समझ आया-कॉमेडी उन्हीं छोटी-छोटी घटनाओं में छिपी है जो हम हर दिन जीते हैं। ज़िंदगी में हँसी की कमी नहीं...

बस उसे देखने की नज़र चाहिए।

तो बताइए...

क्या मैं भी स्टैंड-अप कॉमेडियन बन सकती हूँ?

जागृति का स्वप्न

स्व० इंदिरा देवी
माता : श्री बिमलेंदु कुमार
भूतपूर्व निदेशक (कार्मिक), एनसीएल

वसन्त ऋतु अंगराई ले रही है। कोयल की मादक कूक से सारा वातावरण मुखरित हो उठा है। वासन्तिक कुसुमों से सुशोभित, मधुमार मलयानिल हिल्लोलित, मंदगती द्वंदों से अभिनंदित स्वर्ण पराग पिंजरित वातावरण है। पछवा हवा थम थम कर नवपुष्पित आम्र तरुओं को झकझोर रही है। पूनम बाहर के दरवाजे पर खरी आम की टहनियों को हवा में झंकारे खाते देख रही है। पर न जाने उसका ध्यान कहाँ है? शांत वातावरण और एकांत स्थान पाकर वह अपने में खो गई है। वे बचपन के दिन और आकांक्षाओं से भरा हृदय याद आ रहा है।

एक बार मिडल स्कूल के कक्षा में ताजमहल की कहानी पढ़नी थी। उस निरीह बालिका का हृदय उसी समय इस चिंता में डूब गया कि क्या सचमुच एक औरत को एक पुरुष इतना प्यार कर सकता है? जो भारत का सम्राट है, धन धन्य से पूर्ण है, स्वजनों की कमी नहीं है, एक औरत की मृत्यु पर हज़ारों राजकुमारी उसका स्थान ग्रहण करने को प्रस्तुत है, उसकी यह दशा? धीरे-धीरे समय बीता। पूनम ने किशोरावस्था में प्रवेश किया। उम्र के साथ उसकी आकांक्षायें भी बढ़ती गई। अकेले में बैठकर वह सपनों का महल बनाया करती थी। अपने प्रणय देवता के लिए हृदय के कोने में न जाने कितनी मंजुल भावनायें संजो कर रखती थी । अगर चिंतन के समय कोई काग बोल देता तो राम - राम कह कर उस दोष को मिटाने का उपक्रम करती। हाय री निरीह बालिका - उसी समय कोई महर्षि नारद बनकर भविष्यवाणी कर देता कि 'काग का बोलना असत्य नहीं है'।

पिता की गरीबी देखकर उसे कुछ चिंता होती। ओह ! यह सब बातें बेकार सोचती हूँ, पर तुरंत आशा का संचार उसके हृदय में हो जाता था। वह सोचती थी 'पंक में ही तो कमल होते हैं। किसी गरीब के घर भी तो योग्य लड़का होगा। पिता भी सिर्फ योग्य लड़का चाहते हैं। फिर क्यों मैं अपनी दुनिया को स्वर्ग बनाना न सोचूँ। मैं स्वयं परिश्रम कर अपने देवता को योग्य बनाऊँगी। हर तरह के कष्टों को झेलूँगी।'

आखिरकार उसकी सपनों के लड़के से ही उसका पाणिग्रहण हुआ। पूनम के हर्ष का पारावार नहीं रहा। सखियाँ कहती 'पूनम कृष्णाष्टमी का तुम्हारा व्रत सफल हो गया। ओह! तुमने तो सबों की नाक काट ली।' रमेश कालेज का विद्यार्थी था। गरीबों के लिए कालेज में पहुँचना आसान नहीं था। फिर भी एक असहाय लड़का, जिसको किसी प्रकार का सहारा कहीं से ना मिला हो, कालेज में पढ़ रहा है। पूनम इसे दैवी वरदान समझती थी। रमेश के विद्यार्थी जीवन में पूनम को अनेक कष्ट सहने पड़े। पर उसके मुख पर चिंता की किंचित रेखा भी दृष्टिगोचर नहीं हो पाई थी। रमेश को पूनम की चिंता अवश्य रहती थी। पत्रों द्वारा वह उसे बराबर समझाता रहता था। ढाढ़स दिलाता रहता था कि एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा की हमलोग न सिर्फ अपना बल्कि सारे देश की गरीबी दूर कर देंगे। पूनम का छोटा हृदय बाँसो उछल जाता था। वह कल्पना के गहरे लोक में पहुँचकर आत्मविभोर हो जाती थी । काश वह जान पाती कि पूनम के साथ रमेश ने अपने माता पिता के दबाब में शादी की है और पूनम से उसका स्नेह भी सिर्फ दिखावा ही है। स्वाभाविक दृष्टी से वह एक नीरस, हृदयहीन प्राणी है। पत्नी के रूप में किसी को स्वीकार करना उसके प्रकृति के विरुद्ध है। पत्नी के रूप में पूनम को स्वीकार कर वह समझता है कि उसने पूनम के प्रति एहसान किया है।

धीरे - धीरे रमेश का विद्यार्थी जीवन समाप्त हुआ। पूनम के अरमान के दिन आये। पति के साथ रहकर पूनम ने रमेश के हृदय के विचारों को भाँप लिया । परंतु सोचती 'नम्रता वह गुण है जो कठोर पत्थर को भी पिघला देती है'। उसका यह सोचना भी व्यर्थ गया। नारी सुलभ सारे प्रयत्न कर वह हार गई। रमेश न उसका बहिष्कार कर सकता था न ही प्यार। बहिष्कार सामाजिक दृष्टि से वर्जित था और प्यार किसी अन्य के लिये। एक दिन ऐसा भी आया कि पूनम माता बनने की तैयारी में लग गई। रमेश के लिए यह जीवन की सबसे दुखद घटना थी। उसने पूनम से गलत प्रस्ताव भी किया परंतु पूनम ने उसे बड़ी निर्भयता से अस्वीकार कर दिया। आखिर वही हुआ जो रमेश चाहता था। बच्चा पैदा लेकर उपेक्षा के कारण चल बसा। पूनम सोचती, मैं अभागी हूँ।

मेरी संतान सौभाग्यशाली है, वह क्यों उपेक्षा बर्दाश्त करे। यही सब बातें एक - एक कर पूनम के मन में उठती थी और चित्र के भाँति दिखाई पड़ती थी। कभी अपने सुहाग रात की सोचती, कभी अपने बच्चे की सोचती और कभी अपने उपेक्षित जीवन की सोचती । इस प्रकार उसका हृदय अंतर्वेदनाओं से मन्थित था। अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने का वह जितना प्रयत्न करती उतना ही उलझन में पड़ती जाती थी। कभी सोचती 'रमेश का मन अवश्य बदलेगा, आखिर उसका भी तो जीवन है'। कभी सोचती 'चलूँ कहीं अलग अपनी कुटिया का निर्माण करूँ'। परंतु वह रमेश का तिरस्कार कर सकती थी बहिष्कार नहीं। इतने में रमेश आफिस से घर आ गया। उसको आते देखकर पूनम ने अपनी वेदनाओं को दबाने की कोशिश की लेकिन बरबस पूछ बैठी 'इतनी देर तुम कहाँ थे'।

डा गोपेश द्विवेदी
मुख्य प्रबंधक (खनन)
वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, नागपुर

नील वस्त्र

नील वस्त्र धारण करो तो, एक नया अवतार धरो,
नील नव अलोक से, हर अंधियारे का नाश करो॥

अनंत नील नभ आकाश में, पंछी संग तुम पंख धरो ,
पोखर का उथलापन छोडो, नील समुंदर अथाह बनो,
अभिलाषा नवीन रचो, तिमिरता का काल बनो,
नील नव अलोक में, उज्वल धवल प्रकाश बनो,
नील वस्त्र धारण करो, तो एक नया अवतार धरो॥

नील वस्त्र की आभा में,थोडा सा मुस्कान धरो,
स्वहित तजो कुंठा छोडो, मधुरता का दान करो,
मिटे द्वेष अहंकार निष्ठुरता, सौम्यता से मंगलाचार करो,
नील नव अलोक में, करुणा अपरम्पार करो,
नील वस्त्र धारण करो, तो एक नया अवतार धरो॥

भरो जगत को प्रेमभाव से, अपनों का विस्तार करो,
कर लो पुलकित मन को, आशा का संचार करो,
जब मन टूटे पीडाओं से, अंतरतम से ध्यान करो,
नील नव अलोक से, जड़ता का अब त्याग करो,
नील वस्त्र धारण करो तो, एक नया अवतार धरो॥

कर लो वश में चट्टानों को, बाधाओं को पार करो,
आने दो व्यवधानों को, तुम तो रण में बाण धरो,
पथिक हो तुम बढ़ते जाओ, कायरता का संहार करो,
नील नव अलोक से, मोह निशा का नाश करो,
नील वस्त्र धारण करो, तो एक नया अवतार धरो॥

लिखो वीर श्रमिकों की गाथा, उनका स्तुतिगान करो,
कोयला ही है हीरा पन्ना और उससे ही श्रृंगार करो,
श्यामल कोयला ज्योतिपुंज है, उसका ही तुम मुकुट धरो,
नील नव अलोक से, चिरउर्जा का सृजन करो,
नील वस्त्र धारण करो तो, एक नया अवतार धरो॥

कोयले के श्याम रंग से, स्वर्णिम पथ द्युतिमान करो,
भारत की है गौरव गाथा, सपना उसका साकार करो,
नील नव अलोक से नवअक्षय पात्र का निर्माण करो,
नील वस्त्र धारण करो तो, एक नया अवतार धरो॥
नील वस्त्र धारण करो तो, एक नया अवतार धरो॥

ओमप्रकाश मिश्र
कार्यकारी निदेशक (सीएसआर)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

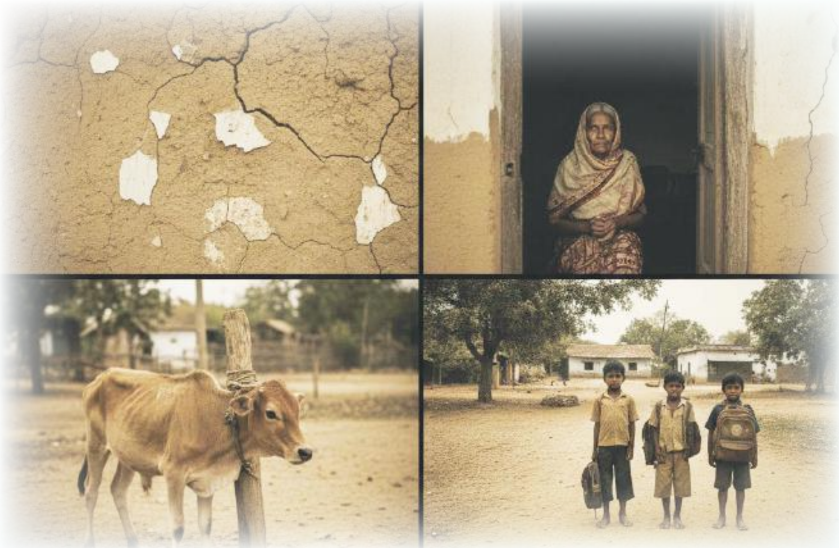

छोड़ते वक़्त ...

छोड़ते वक़्त ...
जब हाथ मिलाता हूं......उसे छूता हूं....
.....छूटते हुए हाथों से...
ताकते हैं दरवाज़े ...असहाय नजरों से ..
खिड़कियां ढंक लेती हैं खुद को परदों से
दादी मां ओसारे के किसी कोने में
खामोश नज़रों से निहारती...
न बोलती हैं... न चुप रहती हैं...
और...
दीवारें चश्मेनम हो...दरक पड़तीं हैं
भर भरा के गिर पड़ता है... पलस्तर
बाहर बथान पर बंधी बछिया...
घूम के देखती है...
....छोड़ते वक़्त

छोड़ते वक़्त
महुआ के पेड़ से टपक पड़ते हैं...
... महुआ के गुच्छे..मिठास मिट्टी को सौंपते
दो चार नंगे अधनंगे बच्चे..
...उदास चमकती आंखों से देखते...
धूल भरे रस्ते...
लिए धूल भरे बस्ते....
गांव के सीवान पर बने स्कूल तक फैले...
...अनायास...छा जाती है उदासी...
सूनी उन आंखों में झांकते...
उन्हीं में से निकले हम..उन्हीं को छोड़ते...
....छोड़ते वक़्त

छोड़ते वक़्त...
जब ट्रेन पकड़ने की जल्दी होती है
हवाई जहाज का चेक इन टाइम होता है पास
दरवाज़े के बाएं उग आए...
चंद अनचाहे पौधे....
अनचाहे जीव जंतु...चीटियां..गिरगिट और चूहे..
रेंगनी के कांटे...
सभी पुकारते लगते..
बोलते बतियाते...
पूछते हुए प्रश्न...जिनके उत्तर नहीं होते....
क्या याद आएंगे हम..?
क्या लौटेंगे कभी....??
क्या...क्यों.. कब..कैसे...????
बहुत सारे.. क्या...क्यों..कब..कैसे
साथ रहते हैं...साथ चलते हैं...
छोड़ते वक़्त....

राजपाल यादव
पूर्व महाप्रबंधक(कार्मिक/राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

छोड़ दिया है-

झूठों को अब घास डालना छोड़ दिया है।
भाई हमने साँप पालना छोड़ दिया है।

मतलब ख़ातिर गाँठे थे जो यारी हमसे;
हमने उनकी दाल गालना छोड़ दिया है।

खाते थे जो संग जीने मरने की क़समें-
मंशा भाँपी देख भालना छोड़ दिया है।

सोच समझकर मेहनत करनी है अब जाया;
औरों के हित शब्द ढालना छोड़ दिया है।

यारी को जो समझे थे बापू का बंदर;
हमने रोटी उन्हें डालना छोड़ दिया है।

दूध मलाई खाते थे जो मिल हमसे;
उनके घर का छाज़ छालना छोड़ दिया है।

करते थे उपयोग फ़कत निज स्वार्थ ख़ातिर;
उनके नख़रे नाज़ टालना छोड़ दिया है !!

गजेंद्र तंवर
प्रबंधक (विपणन एवं बिक्री)
कोल इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली

सतर्कता है जरुरी

एक थे मैनेजर रामकिशोर
काम पर हीं रखते थे सदा जोर
खदान का कोई भी काम हो
ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां उनका नाम न हो।

पर नियमों से जी चुराते थे
सतर्कता विभाग से बड़ा घबराते थे
फिर एक दिन सतर्कता विभाग की टीम आई
कद दी रामकिशोर की अच्छे से खिंचाई। ।

टीम ने उन्हें प्रेम से समझाया
नियमों का अपना एक महत्व बताया
कहा नियम बड़े हीं सरल हैं
पानी की तरह पी जाओ, इतने तरल हैं

कोई भी खरीदी अकेले ना करो
तुरंत एक समिति बनाओ
धन की अत्यधिक भागीदारी हो तो टेंडर प्रक्रिया अपनाओ
सरकारी धन का कहीं अपव्यय न हो
सतर्कता निर्देशों का पालन करो, जिससे हमारी जय हो।।

रोशन कुमार सिंह
लिपिक, प्रशासन विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनवाद

आजकल 'मैं'

मैं नहीं लिखता हूँ आजकल,
क्योंकि मैं सुनता हूँ।
मैं सुनता हूँ-
पायल से झनकती बेड़ियों की आवाजें,
झूठी बातों पर उसका हामी भर जाना,
और मुस्कुराती आँखों में कैद
उसकी बरसों की सिसकियाँ।
मैं नहीं लिखता हूँ आजकल,
क्योंकि मैं देखता हूँ।
मैं देखता हूँ-
मेरे गाँव का शहर हो जाना,
दोपहर की धूप का आँगन तक न पहुँचना,
बंद कमरों में इंसानों का कैद हो जाना,
और "हम" का धीरे-धीरे
सिर्फ "मैं" बन जाना।
मैं नहीं लिखता हूँ आजकल,
क्योंकि मैं पढ़ता हूँ।
मैं पढ़ता हूँ-
अपनों के चेहरों पर चढ़े मुखौटे,
खिड़कियों से आती हवाओं में
दबी हुई भावनाएँ,
समंदर किनारे रेत पर
मीलों तक फैले पैरों के निशान।
मैं पढ़ता हूँ किस्मत की लकीरों को-
जिन्हें लिखकर,
फिर से मिटा दिया गया है।
मैं नहीं चलता हूँ आजकल,
क्योंकि मैं रुकता हूँ।
मैं रुकता हूँ-
जब बादल चलते हुए मुझे दिखते हैं,
जब मेरे किनारे से
ट्रेन की सीट पर बैठा व्यक्ति
मुझे खिड़की से झांकते हुए गुजर जाता है।
मैं रुकता हूँ-
जब कोई अपना इस दुनियावी भीड़ में
हमेशा के लिए खो जाता है।

राजेश कुमार साव
प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

ताख बुझ गई

ताख बुझ गई, पर धुआँ अब भी है,
कुछ अधूरी बातें, कुछ खामोश लब अब भी हैं।
जो रोशनी थी, वो कहीं खो गई,
पर दीवारों पर उसकी छाया अब भी है।

कभी जलती थी वो आस की लौ बनकर,
हर अंधेरे को चीरती थी, सूरज सी चमकती थी।
आज ताख बुझ गई है, पर राख कुछ कहती है,
बीते लम्हों की कहानी गूंजती है।

वह कह रही है धीमे स्वर में,
"बुझना मेरा अंत नहीं है,
शायद फिर कोई हाथ बढ़ेगा,
किसी नए सवेरे में,
कोई फिर से मुझे जलाएगा।
किसी उम्मीद के छोटे से घेरे में।
कोई सपना फिर से मुस्काएगा
ज्ञान का उजास फिर से फैलेगा।

गजानन कुमार दूबे
उप प्रबन्धक (वित्त)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

कूड़ामित्र

दुर्गंधो को दूर हटाते
बस्ती बस्ती स्वच्छ बनाते
सबको शुद्ध बनाने वाले
स्वयं दूषित हो जाने वाले
मातृ धरा के असली सेवक
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

है स्वच्छ सफ़ाई से पहचान
शहरी करण के मूलाधार
कर्मस्थल जिसका अवशेष
कार्य तुम्हारा अत्यंत विशेष
सड़को गलियों के तुम चंदन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

जैसे सैनिक लड़ते सीमा पर
बंधु किसान हैं रमते खेतों में
हाथ पाँव सब सने हुए हैं
सारा दिन कूड़े के ढेरो में
तुम नित करते कुड़े का मर्दन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

नाली सड़क गटर या पुष्कर
तुम बिन जीवन होगा दुष्कर
घृणित गंदगी हम दूर फेंकते
जिसपर मक्खी सूकर कौए रमते
उसका तुम करते आलिंगन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

गर्मी सर्दी मौसम चाहे वर्षा हो
मेरे उत्सव की खुशियों में
नियमित सजग सशक्त तुम्ही हो
क्रिसमस, गुरु पर्व या ईद मुबारक
चाहे होली या हो रक्षा बंधन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

तुम सेवक नहीं सिपाही हो
सर्वोच्च सम्मान के अधिकारी हो
धरती के संसाधन पर पहला अधिकार
धन भी तौल सके ना, तेरे कृत्यों का उपकार
नहीं हो सकता हैं तेरा अवमूल्यन
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

ढोते हो परगृह दुर्गंधों को
पाने को स्वजीवन सुगंध को
नगर स्वच्छता के तुम नायक
किये एक दिन जो अवकाश
बढ़ जाता सबका स्पंदन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

धर्म जाति में भेद किया ना
गटर सफ़ाई या कचरा द्वार
सबका कचड़ा रहे उठाते
साफ सुरक्षित रखने वाले
तुम तो देश के सच्चे नंदन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

सड़ा गला या गीला सूखा
करे सफ़ाई पेट का भूखा
स्टेशन हो या रेल का डिब्बा
सुलभ शौचालय हवाई अड्डा
दहल गया मन देख के मंजर
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

अस्पताल या दफ्तर में थूका
मलमूत्र या अवशेष हो जूठा
विभतस् रस की सीमा के पार
अपने शरीर को कर तार तार
सब कुछ सुंदर तुमसे है भूनंदन
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन ।

जिसको आँखे देख सके ना
जिसको नाक से सूंघ सके ना
जिसको छूने में दिल घबराए
मन में सोच के जी मचलाये
उसको तुम देते हो गर्दन
धन्य हो कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

छोड़ दिया जो तुमने काम
चलना दुष्कर हो जायेगा
फिर रहना मुश्किल हो जायेगा
दुर्गंधों से साँसे भी थम जायेंगी
हथप्रब हूँ मै देख तेरा चौकन्नापन
हे कुड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

इतना कुछ न्योछावर ने वाले
तेरे चरण वंदन के अधिकारी हैं
जो तुमसे घृणा करे या कहे अछूत
वे अपराधी दंड के भागी हैं
तुझ में तो ईश्वर प्रतिबिंबन
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

गंदा होना कचरे का निज स्वभाव
गंदे को अति गंदा करते हम लापरवाह
यदि इसमें अनुशासन का हो जाए परवाह
तो तेरे काम में हो कुछ सहज प्रवाह
व्यक्त करूँ क्या मन का क्रन्दन
हे कूड़े वाले मीत मेरे,
हो तेरा भी अभिनंदन।

धन्यवाद हो तकनीकी विज्ञान का
कुछ हद तक तुमको सहज किया
आशा है भविष्य में हो अनुसंधान
करे पूर्ण मशिनीकरण का स्वप्न साकार
फिर यह पेशा भी बन जाए प्रियदर्शन
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

किसी विशेष का नहीं ये ठेका
हर घर घर का हो यह पेशा
सब भागीदारी कर हाथ बँटाये
आओ सीखें इसके निष्पादन को
यह तो है एक विषय प्रबन्धन
हे कूड़े वाले मीत मेरे
हो तेरा भी अभिनंदन।

रौशन पाठक
प्रबंधक (वित्त)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

तेरी मेरी कीमत

कौन देता है खंजर उन हाथों में,
जिनके रगों में नफरत दौड़ती है।
किसने दी कलम न्याय करने की उसको
जिसने संघर्षों को भी अन्याय समझा।
कौन देता है ये हक इन मुर्दों को
जिन्दा भावनाओं से खिलवाड़ करने की।
इतने वर्गों में बांट दिया है हमें,
घुटन होती है अपनो में ही जीने में।
कहां से पाते है ये हुनर बाटने का
पानी को पानी से पृथक कर देते हैं।
बागबान ने खुद छीन ली खुशबुएं सारी
फूलों के बीच कौन कराता है प्रतियोगिता।
ये अनुचित और खोखले है तौर नापने के
ऐसी सफलता पे इतराने वाले भी जान ले।
ये मालूम हो कि, अनपढ़ों के तर्क है अपने
मूर्खता है उसमे अपना भाग्य पढ़ना।
जहां फैसले आंखों पे पट्टी बांध कर हो,
मूर्खता है उस दौड़ में जीत की ख्वाइश रखना।
चंद पैसे नही है कीमत तेरी मेरी मेहनत की
उनके परे है समझना कीमत मेंरे हाथों के छालों की।
तुम्हें कैसे समझाए कोई कि तुम कौन हो
मुझको मुझसे और कौन मिलवा सकता है।
अभी तो किसी ने मुझे जमीं भर देखा है
रौशन के अंदर तो अभी पूरा आसमान बाकी है।

नयंका जायसवाल
प्रबंधक (मा.सं./कल्याण)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

संबलपुर (एमसीएल) की यादें

पहली पोस्टिंग का था... नया सवेरा,
दिल में उम्मीदें... आँखों में बसेरा।
रांची से निकला... मिला एक नया सफ़र,
सोचा न था... ठिकाना होगा - संबलपुर।
नाम सुना न था... उस शहर का कभी,
पर जड़ें वहीं जम गईं... धीरे-धीरे सभी।
जागृति विहार की गलियाँ... वो मस्ती भरे दिन,
दोस्तों के संग हँसी... रंगीन हर पल-छिन।
ऑफ़िस का सफ़र... सीखने का जुनून,
हर सुबह देता था दिल को... सुकून।
कभी पुरी-भुवनेश्वर की राह पकड़ ली,
समुद्र की लहरों में... ख़ुशी पढ़ ली।
कभी निकल पड़े... रायपुर की ओर,
दोस्ती और यात्राएँ... यादों का शोर।
और जब मन... उदास हो जाता कहीं,
तो हिराकुद डाइक... बुला लेती यहीं।
लहरों की गुनगुनाहट... मन को बहलाती,
रात के तारे... मुस्कान सिखलाती।
शांति का सागर... सुकून का सहारा,
संबलपुर ने दिया... हर ग़म से किनारा।
फिर आतीं रातें... Monopoly और पत्तों की,
हँसी और बहसें... उन जज़्बातों की।
सुबह चार बजे तक चलता ये खेल,
फिर दस बजे ऑफिस... थकान भी फेल।
शाम ढले... बैडमिंटन की धूम,
दोस्तों के संग... कटते थे ग़म और सूम।
न कोई बोझ... न टेंशन का भार,
बस ज़िन्दगी थी जैसे... त्योहार।
वक़्त गुज़र गया... पद भी बदल गए,
मैनेजमेंट ट्रेनी से... मैनेजर बन गए।
कोलकाता की भीड़ में... आया ठिकाना,
पर संबलपुर ही... दिल का तराना।
आज भी जब सोचता हूँ... वो दिन सुनहरे,
मन कहता है - काश लौट आते बसेरे।
संबलपुर की मिट्टी... अब भी दिल में महकती,
पहली पोस्टिंग की छाप... सदा ही चमकती।
संबलपुर ने दिया... जीवन को पहला रंग,
वहीं बसा है अब भी... बचपन-सा उमंग।
आँखें हो जातीं नम... मुस्कुराता है एहसास,
वो दोस्त, वो सपने... आज भी हैं ख़ास।
कहता है मन... लौट पाऊँ उन्हीं डगरों पर,
जहाँ ज़िन्दगी हँसती थी... संबलपुर के अंदर।

रामजीत पटेल
माइनिंग सरदार
साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, बिलासपुर

कोयले की धरती, मेहनत की गाथा

काली अंधेरी धरती के नीचे,
हौसलों का दीप जलाते हैं,
पसीने की बूंदों से हम,
भारत का भविष्य बनाते हैं।

पत्थरों के बीच सुनते हैं हम,
धरती माँ की धड़कन,
हर चोट के साथ निकलता है,
ऊर्जा का अनमोल धन।

सुरक्षा है सबसे पहला धर्म,
हेलमेट,जूते,लैंप, और दिल में दम,
साथी बनकर चलें सभी,
ये है हमारा कर्तव्य और कर्म।

कोयला सिर्फ पत्थर नहीं,
रोज़गार, विकास और शक्ति है,
हर खनिक की मेहनत में,
देश की असली भक्ति है।

सीसीएल की लाडली का अभिलाषा

रवि प्रकाश यादव
प्रबंधक (मा.सं.)
सेंट्रल कॉर्पोरेट लिमिटेड, रांची

मन के मंदिर की मुरत से,
हमने कर्म रूपी सुंदर महल बनाया है।

बिरसा की पावन धरती को,
खूबसूरत चहुओर सजाया है।

गरीब-ग्रामीण-श्रमिक जन का,
सीसीएल सदैव साथ निभाया है॥

है विश्वकर्मा जी की कृपा, माँ काली का सदैव सहारा
रत्नो में मिनिरत्न है, सीसीएल हमारा॥

चमकता है जैसे सूरज-चाँद-सितारा,
लगता है मनभावन, झारखंड को न्यारा।

इस खुशनुमा बगिया को, श्रमवीरों ने संवारा,
रत्नो से मिनिरत्न है, सीसीएल हमारा॥

सीसीएल की प्रगति देखकर एक लाइली बोली,
सीसीएल है मेरे पापा की फुलवारी, यही है रंगोली।

मनभावन-सुहावन लागे, हिन्दी संग खोरठा की बोली॥
जय सुरक्षा- जय उत्पादन, लगता यहाँ नारा॥
रत्नो में मिनिरत्न है, सीसीएल हमारा॥
सीसीएल है तो जीवन में खुशियाँ आई,

जब तबीयत खराब होती, कराते है दवाई।
छात्रवृति सुविधा देकर, कराते है पढ़ाई॥

सीसीएल ने अपने लाल-लाडली को, आई.आई.टीएन बनाया।
कही सिलाई, कहीं कम्प्युटर, कही विद्यालय खुलवाया॥

सच कहती हूँ सीसीएल है, जन-जन का सहारा।

रत्नो में मिनिरत्न है सीसीएल हमारा॥

अधिकारी-कर्मचारी-संवेदक, सबके चेहरे का मुस्कान है सीसीएल,

हीरा से जड़ा कोयला खदान है सीसीएल।

सिर उठा के जीने का स्वाभिमान है सीसीएल,
हमारी अस्मिता गौरव का अरमान है सीसीएल॥

सेल-सीमेंट-फेर्टिलाइजर-भेल, सबके प्रगति का पहचान है सीसीएल।
सुंदर-सलोना महारत्न कोल इण्डिया, भारत को लगता है प्यारा,
रत्नो मे मिनिरत्न है सीसीएल हमारा॥

राजकमल
पति: सोनाली कुमारी, उपप्रबंधक
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

कर्तव्यपथ का प्रहरी

वक्त की प्रहार है वार पे वार है,
सवारी घायल हो गया गिर चुका सवार है

ताकतवर भी हार जाते अंदेशे जो मान लेते हैं,
उम्मीदों की दामन थामे कर्तव्यपथ के प्रहरी की होती नहीं हार है,

हड्डियां चरमरा गई पसलियां जवाब दे चुकी,
फिर भी तिरंगा हाथ में खड़ा सर कभी नहीं झुकी,

युद्ध की यलगार है मातृभूमि की पुकार है,
शरीर कब चलती केवल शक्ति से ये तो हौसले की कर्णधार है,

मृत्युलोक में अपना केवल कर्म है जिसकी सदा जयजयकार है,
कायरों को केवल जीवन प्यारी मर जाते हैं होती गर बुखार है,

उम्मीदों की दामन थामे कर्तव्यपथ के प्रहरी की होती नहीं हार है,
जीवन तो गमन आगमन से जुड़ा एक सरल व्यापार है,

पूजे जाते हैं यहां मनुष्य भी जान जाते जो सार हैं,
टकरा गया अकेला सैकड़ों की टोली से और सीना छलनी गोली से,

आगे बढ़ते अभिमन्यु सा खेलते खुदके रक्तों की होली से,
साहस दुश्मनों का टूट गया हथियार हाथों से छूट गया,

आ गए वो औकात में सीमा छोड़ के हो गए फरार हैं,
उम्मीदों की दामन थामे कर्तव्यपथ के प्रहरी की होती नहीं हार है,

कल मैं रहूं ना रहूं कमल' तिरंगा यूं हीं फक्र से लहराएगा,
मातृभूमि से है प्रार्थना हर जन्म में ये कर्म मेरे हिस्से आयेगा,

हालांकि आंखें देख सकती अब है नहीं शरीर का हर हिस्सा लाचार है,
जय हिंद मै कहता रहूंगा बस अंतिम ये वाणी की पुकार है,

सामने भले ही हों लाखों हिंद का एक सैनिक की काफी ललकार है
उम्मीदों की दामन थामे कर्तव्यपथ के प्रहरी की होती नहीं हार है।

लक्ष्मण दास वैष्णव
इलेक्ट्रिशियन
साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, बिलासपुर

विश्व सामाजिक न्याय दिवस

विश्व समाजिक न्याय का, आज दिवस शुभ भोर।
समता का अधिकार हो,खुशियॉं हो चहुँ ओर।।

सामाजिक अन्याय का,हो सदा बहिष्कार।
भाई चारा नित बढ़े, सच्चे हों व्यवहार।।

भारत वासी को मिले, शिक्षा नित उपचार।
आजादी सम्मान दो,सादा उच्च विचार।।

अर्थ व्यवस्था में सदा,करो विवेकी काम।
ऊँच नीच के भेद को,कर दो पूर्ण विराम।।

जाति पाति या पंथ की, नहीं आज अपमान।
सामाजिक ये न्याय से, मिले आत्म सम्मान।।

नहीं गरीबी है यहॉं, होता सर्व विकास।
कानूनी निष्पक्षता, न्याय पूर्ण लें श्वास।।

न्याय दिवस से जान लो, मताधिकार प्रयोग।
पर्यावरण सुधारते,सहानुभौतिक भोग।।

ग़लती करे वगैर जो, वंचित रहते काम।
शिक्षा पोषण स्वास्थ्य का, देता दिन आराम।।

पूरनापुष्कला रामचन्द्रन
पत्नी : एस. रामचन्द्रन
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

कोयले की सुनहरी लौ

पचास वर्षों की गौरव गाथा,
अंधेरों में जलती रही आशा की ज्योतिमाला।
हर चिंगारी, हर अंगार,
कोल इण्डिया बना देश का उपहार।

"कोल इण्डिया एकता, अखंडता और सामाजिक कल्याण का प्रतीक है,"
एक संकल्प, एक ध्येय महान।
धरती की गहराई से निकला प्रकाश,
बना हर सपने का आधार विशेष।

खनिज हाथों की मेहनत प्यारी,
हर सुबह रची सफलता की सवारी।
सपनों को ईंधन, देश को शक्ति,
अंधेरों से लाई उजियाली भक्ति।

और साथ चला एक और सितारा,
राजभाषा विभाग - देश का प्यारा।
पचास वर्षों की भाषा की बयार,
संस्कृति, संवाद और एकता का उपहार।

हर शब्द में अपनापन लाया,
हिंदी को गौरव का स्थान दिलाया।
विविधता में एकता की डोर,
राजभाषा ने जोड़े हर ओर।

गूंज उठे अब गर्व के बोल,
कोयले की शक्ति, भाषा का मोल।
मिट्टी से सोना बनाया गया,
भारत को आगे बढ़ाया गया।

कलम से लिखते हैं हम आज,
गौरव के इन पचास सालों का राज।
एक इतिहास, एक उजाला,
हर युग के लिए एक अमर सन्देश वाला।

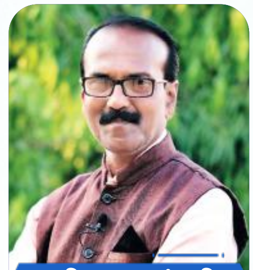

व्ही. आर. भंडारी
चालक
वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड, नागपुर

विशालकाय वृक्ष

नन्हा सा बीज था धरती में छिपा हुआ।
एक बूंद पानी के लिए तरसता हुआ।

सभी मौसम की मार वह सह रहा था।
फिर भी अपने आपको सम्हाल रहा था।

इस बीज की मुराद एक दिन पूरी होनी थी।
ग़मो को एक दिन खुशी में तब्दील होनी थी।

आखिर मौसम का वह वक्त आ ही गया।
बादल भी अब करवटें बदलने लगा।

रिमझिम-रिमझिम बरसात होने लगी।
बीज के चहरे पर मुस्कान आने लगी।

इसी मुस्कान से अब बीज खिलने लगा।
धरती माता के आंचल में खेलने लगा।

धीरे-धीरे अपना रूप धारण कर लिया।
विशालकाय वृक्ष बनकर अम्बर छू लिया।

कितने ही मौसम के मार सह कर।
अपने आपको सम्हालें रख कर।

"बाबू" बीज ने अपनी मुराद पूरी कर डाली।
एक सोये हुए को जागने की मिसाल दे डाली।

संतोष कुमार श्रीवास
डाटा एंट्री ओप्रेटर
साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, बिलासपुर

अभिनंदन अभिनंदन हिन्दी

अभिनंदन -अभिनंदन हिन्दी, तेरा ही अभिनंदन है।
भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।
अभिनंदन है...... अभिनंदन है..... अभिनंदन है....
कल्पवृक्ष हो तुम उपवन की,
तुमसे ही तो शोभा है!
पुण्य पुष्प बन खिले शब्द से,

शोभित मृदु मन लोभा है!!
कंचन कंचन काव्य कुसुम सम,सुरभित जन-मन नंदन है।
भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।
अभिनंदन है...... अभिनंदन है....अभिनंदन है...
विविध भांति भाषा भाषाई ,
पर प्रस्तर से पड़े हुए!

निष्कलंक ज्यों देवी अहिल्या,
त्याज्य लौह सम पड़े हुए!!
उन शोषित भाषाई शिला पर, हिन्दी पग रघुनंदन है।
भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।
अभिनंदन है...... अभिनंदन है..... अभिनंदन है....
सूर, तुलसी ,मीरा ने गायी,

तुझ पर ही हर मान लिखा!
सेनापति, पद्माकर, केशव,
श्रृंगारिक हर गान लिखा!!
बिहारी और घनानंद भी, लिखते जैसे चंदन हैं।
भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।
अभिनंदन है...... अभिनंदन है..... अभिनंदन है....

पंत, निराला, तुम प्रसाद की,
रचना की फुलवारी हो!
महादेवी की महिमा पावन,
जन-जन को अति प्यारी हो!!
रमणीय कमनीय है शोभा, झंकृत उरतल स्पंदन है।
भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।

अभिनंदन है...... अभिनंदन है..... अभिनंदन है.... है।
छायावाद, प्रयोगवाद, अरु,
प्रगतिवाद की तुम जननी!
रस,छंद,अलंकृत,नव कविता,
तुमसे ही तो सीखी पढ़नी!!
गंगा सी पावन पुनीत यश,शुचि शब्दों का सिंचन है।

भाल-तिलक तुम हो भारत की,तुमको शत-शत वंदन है।।
अभिनंदन है...... अभिनंदन है..... अभिनंदन है.... है।

राजभाषा विभाग की गतिविधियां

राजभाषा माह का आयोजन

कोल इण्डिया मुख्यालय, कोलकाता में दिनांक 01 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025 तक राजभाषा माह का आयोजन किया गया। समारोह की शुरुआत 01 सितम्बर को श्रुतलेखन प्रतियोगिता से हुई। माह के दौरान श्रुत लेखन, हिंदी निबंध लेखन, चित्रभिव्यक्ति प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, काव्य पाठ, यात्रा वृत्तांत लेखन, अनुवाद प्रतियोगिता, पत्र एवं टिप्पण लेखन, शॉर्ट फिल्म निर्माण, समूह चर्चा प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए निबंध प्रतियोगिता तथा हिंदी पुस्तक समीक्षा पर आधरित पीपीटी प्रस्तुतीकरण का आयोजन करवाया गया था। सीआईएल (मु.) में हिंदी माह के तहत आयोजित 11 प्रतियोगिताओं में कुल 210 प्रतिभागिता दर्ज की गयी। हिंदी दिवस के अवसर पर जारी गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमितशाह जी के संदेश, माननीय कोयला मंत्री श्री जी.किशन रेड्डी जी के संदेश तथा अध्यक्ष कोल इण्डिया के संदेश का वाचन किया गया एवं इसे सभी कार्मिकों के बीच वितरित किया गया। हिंदी माह के आयोजन से कार्मिकों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रति उत्साह एवं मनोबल में वृद्धि हुई।

राजभाषा हिंदी प्रशिक्षण

कोल इण्डिया लिमिटेड (मु.), कोलकाता के प्रांगण में अधिकारी / कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से भारत सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के सहयोग से हिंदी 'प्रवीण', 'प्राज्ञ' एवं 'पारंगत' की कक्षा का संचालन किया जा रहा है। जनवरी-2025 से दिसंबर -2025 के सत्र तक कुल 44 अधिकारी /कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं जिसमें से 18 प्रशिक्षार्थियों ने 'प्रवीण' एवं 'प्राज्ञ' तथा 26 प्रशिक्षार्थियों ने 'पारंगत' पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जाता है। कोल इण्डिया के प्रशिक्षण केंद्र में आस-पास के कार्यालयों के अधिकारी/ कर्मचारी भी प्रशिक्षण प्राप्त करते है।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा निरीक्षण

माननीय संसद संदस्य (लोकसभा) श्री भर्तृहारी महताब की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति ने दिनांक 20 सितम्बर, 2025 को कोल इण्डिया लिमिटेड तथा नराकास उपक्रम कोलकाता तथा नगर के कुछ अन्य सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संबंधी कार्यान्वयन का सफल निरीक्षण किया। समिति ने डॉ. विनय रंजन, निदेशक (मा.सं.), कोल इण्डिया लिमिटेड के नेतृत्व में संचालित नराकास उपक्रम कोलकाता द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट राजभाषा कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें “उत्कृष्ट प्रमाण–पत्र” प्रदान किया। यह उपलब्धि न केवल नराकास उपक्रम कोलकाता की राजभाषा प्रतिबद्धता का प्रमाण है, बल्कि हिंदी के संवर्धन और सरकारी उपक्रमों में उसके सशक्त क्रियान्वयन की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम भी है। संसदीय राजभाषा समिति के 18-21 सितम्बर, 2025 तक के कोलकाता दौरा के सुचारु रुप से कार्यान्वयन हेतु कोल इण्डिया को नोडल एजेंसी की ज़िम्मेदारी प्रदान की गई थी।

“सर्वश्रेष्ठ’ श्रेणी” में नराकास प्रोत्साहन सम्मान

दिनांक 15 सितम्बर 2025, गांधीनगर (गुजरात) में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित पांचवे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2024-25 के लिए कोल इण्डिया लिमिटेड की अध्यक्षता में संचालित नराकास उपक्रम, कोलकाता को ‘सर्वश्रेष्ठ’ श्रेणी में नराकास प्रोत्साहन सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर समिति की ओर से सदस्य सचिव एवं महाप्रबंधक (मा.सं./राजभाषा), कोल इण्डिया श्री राजेश वी. नायर तथा प्रबंधक (रा.भा.) श्री राजेश कुमार साव ने यह सम्मान भारत सरकार की सचिव (राजभाषा) श्रीमती अंशुली आर्या के कर-कमलों से ग्रहण किया। यह उपलब्धि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा प्रभावी क्रियान्वयन में नराकास उपक्रम कोलकाता के सतत प्रयासों का गौरवपूर्ण प्रमाण है।

कोल इण्डिया को 'निष्ठा की प्रतिष्ठा' सम्मान

दिनांक 12 नवम्बर, 2025 को माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के दौरान राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ क्रियान्वयन हेतु कोल इण्डिया को 'निष्ठा की प्रतिष्ठा' सम्मान प्राप्त हुआ है। कंपनी की ओर से हमारे अध्यक्ष श्री सनोज कुमार झा एवं निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन ने माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी के हाथों यह सम्मान ग्रहण किया।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और कार्य में इसके अधिकतम प्रयोग हेतु कोल इण्डिया ने कई सराहनीय पहलें की हैं। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के माध्यम से हिन्दी के उपयोग को सरल और व्यापक बनाया गया है। कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला दर्पण' को मल्टीमीडिया साधनों से अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा रहा है, एवं राजभाषा की तिमाही रिपोर्ट संकलन के लिए एक समर्पित पोर्टल का उपयोग किया जा रहा है। हमारे निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता का संचालन भी प्रभावी रूप से किया जा रहा है।

राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मान

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में दिनांक 19 नवम्बर 2025 को होटल द एमिरॉल्ड, मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) में पूर्वी क्षेत्र के नराकास अध्यक्षीय कार्यालयों के अध्यक्ष एवं सदस्य–सचिव हेतु एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नराकास उपक्रम, कोलकाता को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। समिति की ओर से सदस्य–सचिव एवं महाप्रबंधक (मा.सं./राजभाषा), कोल इण्डिया श्री राजेश वी. नायर तथा प्रबंधक (रा.भा.) श्री राजेश कुमार साव ने यह सम्मान ग्रहण किया।

कोल इण्डिया का राजभाषा निरीक्षण

भारत सरकार के कोयला मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार श्री माणिक चंद्र पंडित तथा संयुक्त निदेशक श्रीमती आस्था जैन ने हमारे कॉरपोरेट मुख्यालय, कोलकाता में कोल इण्डिया लिमिटेड के राजभाषा संबंधी क्रियान्वयन का निरीक्षण किया। निरीक्षण बैठक में कोयला मंत्रालय के अनुवाद अधिकारी श्री मनीष कुमार भी उपस्थित रहे। हमारे निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन ने निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता की एवं कोल इण्डिया द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिए जाने की प्रतिबद्धता दोहराई। बैठक में प्रस्तुत निरीक्षण रिपोर्ट के आधार पर, श्री पंडित एवं श्रीमती जैन ने, पत्राचार, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, प्रकाशन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिए जाने हेतु कोल इण्डिया द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। साथ ही, राजभाषा संबंधी पदों, पदोन्नति तथा पदस्थापना के संबंध में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में कोल इण्डिया के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कोल इण्डिया में वर्ष 2024-25 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए पर्यावरण विभाग, जनसंपर्क विभाग तथा नीति सेल को राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया ।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता की अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक

नराकास (उपक्रम) कोलकाता द्वारा 25 अगस्त 2025 को होटल ताज सिटी सेंटर, कोलकाता में आयोजित अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक के पहले सत्र के दौरान गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के हिंदी शिक्षण योजना और केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के पूर्वी क्षेत्र के प्रभारी अधिकारियों द्वारा अपने विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गई । इसी सत्र में दो तकनीकी सत्रों का भी आयोजन किया गया जिसमें 'राजभाषा कार्मिकों के कार्यक्षेत्र एवं दायित्व तथा नराकास की भूमिका' विषय पर श्री नवीन प्रजापति, सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय द्वारा और 'कंप्यूटर पर हिंदी संबंधी आईटी टूल्स का अनुप्रयोग' विषय पर डॉ. राजीव कु. रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईआईटी खड़गपुर द्वारा प्रभावी व्याख्यान दिया गया।

समीक्षा बैठक के दौरान समिति की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका अभिव्यक्ति के 32वें अंक का विमोचन किया गया। पत्रिका का यह अंक विशेष है क्योंकि यह राजभाषा हिंदी की स्वर्णिम यात्रा को समर्पित है। साथ ही समीक्षा बैठक के दौरान क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र) राजभाषा विभाग के उप निदेशक डॉ विचित्रसेन गुप्त द्वारा रचित पुस्तक प्रेरणा पुंज महामना का भी विमोचन किया गया। समीक्षा बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन एवं श्रेष्ठ हिंदी पत्रिका प्रकाशन हेतु सदस्य कार्यालयों को नराकास राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। साथ ही वर्ष के दौरान नराकास के तत्वावधान में विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार भी वितरित किए गए।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 15 जनवरी, 2026 को कोल इण्डिया लिमिटेड के सभागार में संध्या 6:30 बजे से एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित गीतकार डॉ. विष्णु सक्सेना-आगरा, बॉलीवुड के प्रसिद्ध कॉमेडियन तथा ग्रेट लाफ्टर चैलेंज के विजेता श्री सुनील पाल-मुम्बई, कॉमेडी का गुलीवर श्री गौरव शर्मा-मुम्बई, हास्य के वायरल कवि श्री विकास सिंह 'बौखल'-बाराबंकी तथा प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. सोनरुपा विशाल-बदायूं ने अपनी मर्मस्पर्शी, हास्य-व्यंग्य और श्रृंगार रस की कविताओं से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज, जीवन, प्रेम और मानवीय मूल्यों की गहनता को उजागर किया। यह आयोजन साहित्य, संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रति समर्पण का सशक्त प्रतीक बनकर सामने आया। कोल इण्डिया लिमिटेड ने साहित्य और कला के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित करते हुए इस कार्यक्रम का आयोजन किया, ताकि हिंदी काव्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सके और उसकी प्रभावशीलता व्यापक जनमानस तक पहुँचे।

इस गरिमामयी समारोह में कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री बी. साईराम, निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन, निदेशक (विपणन) श्री मुकेश चौधरी, निदेशक (वित्त) श्री मुकेश अग्रवाल, निदेशक (व्यवसाय विकास) श्री आशीष कुमार, सीवीओ श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी सहित वरिष्ठ अधिकारियों, कार्यकारी निदेशक, विभागाध्यक्ष, नराकास उपक्रम कोलकाता तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी सपरिवार इस कार्यक्रम के साक्षी बने। कार्यक्रम का स्वागत संबोधन निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री ओमप्रकाश मिश्र, कार्यकारी निदेशक (सीएसआर) ने किया।

कोल इण्डिया की विशिष्ट गतिविधियां

कोल इण्डिया में 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त, 2025 को कोल इण्डिया के कॉर्पोरेट मुख्यालय में राष्ट्र के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की शुरुआत अध्यक्ष, कार्यकारी निदेशकगण तथा सीवीओ द्वारा शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई। अध्यक्ष सीआईएल श्री पी.एम. प्रसाद ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अपने संबोधन में अध्यक्ष श्री प्रसाद ने कहा कि कोल इण्डिया सुरक्षित भविष्य के लिए मज़बूती से तैयार है और उन्होंने उत्पादन लागत कम करने, गुणवत्ता एवं स्थिरता सुनिश्चित करने तथा विविधीकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। इस अवसर पर 'कोयला दर्पण' के राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा का स्वर्णिम अर्धशतक विशेषांक का विमोचन किया गया तथा 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत पौधों का वितरण किया गया। राष्ट्र प्रेरणा से जुड़ी सांस्कृतिक आयोजन के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई। इस अवसर पर सीआईएल के निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन, निदेशक (विपणन) श्री मुकेश चौधरी, निदेशक (वित्त) श्री मुकेश अग्रवाल, निदेशक (तकनीकी) श्री अच्युत घटक और मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी उपस्थित के साथ बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वागतम्
श्री आशीष कुमार, निदेशक (व्यवसाय विकास)

श्री आशीष कुमार ने 21.08.2025 से कोल इण्डिया के निदेशक (व्यवसाय विकास) का कार्यभार संभाला। श्री आशीष कुमार के पास कोयला क्षेत्र में संचालन, अनुबंध प्रबंधन, सतर्कता, नीति निर्माण, परियोजना निगरानी और रणनीतिक योजना में 30 वर्षों से अधिक का व्यापक अनुभव है। उन्होंने वर्ष 1994 में कोल इंडिया की अनुषंगी कंपनी सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) में ग्रेजुएट इंजीनियरिंग ट्रेनी (खनन) के रूप में अपना करियर शुरू किया था। उन्होंने आईआईटी आईएसएम धनबाद से बी.टेक. और बीआईटी मेसरा से एमबीए किया है। यह पदभार ग्रहण करने से पहले, श्री कुमार भारत सरकार के कोयला मंत्रालय में ओएसडी के रूप में कार्यरत थे। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में कोल गैसीफिकेशन परियोजनाओं का नेतृत्व करना, कोल इंडिया के क्रिटिकल मिनरल्स डाइवर्सिफिकेशन को आगे बढ़ाना और भविष्य की क्षमताओं के निर्माण के लिए वैश्विक साझेदारियां स्थापित करने से जुड़े कार्य शामिल हैं।

कोल इण्डिया की 51वीं वार्षिक आम बैठक

कोल इण्डिया लिमिटेड की 51वीं वार्षिक आम बैठक (एजीएम) 28 अगस्त, 2025 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित हुई। अध्यक्ष श्री पी.एम. प्रसाद, निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन, निदेशक (वित्त) श्री मुकेश अग्रवाल; निदेशक (तकनीकी) श्री अच्युत घटक; निदेशक (व्यवसाय विकास) श्री आशीष कुमार, स्वतंत्र निदेशक के साथ बैठक में शामिल हुए। श्रीमती रूपिंदर बरार, अपर सचिव, कोयला मंत्रालय और निदेशक (विपणन) श्री मुकेश चौधरी वर्चुअली एजीएम में शामिल हुए। शेयरधारकों को संबोधित करते हुए कोल इण्डिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री पी.एम. प्रसाद ने वर्ष 2024-25 में हुए कंपनी के भौतिक और वित्तीय प्रगति के बारे में विस्तार से बताया। शेयरधारकों द्वारा पूछे गए सवालों का उत्तर देते हुए, अध्यक्ष सीआईएल श्री पी.एम. प्रसाद ने कहा कि कोल इण्डिया सुरक्षा बनाए रखते हुए देश की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि कोल इण्डिया भारत की ऊर्जा सुरक्षा का एक मुख्य आधार बना हुआ है, जो देश के कुल कोयला उत्पादन में लगभग 75% का योगदान देता है और कोल इण्डिया का लक्ष्य एक व्यावसायिक रूप से सफल, आधुनिक और प्रोफेशनल संगठन बनना है जो उपभोक्ता-अनुकूल हो और राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के साथ जुड़ा हो।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 की कड़ी में तीन महीने का अभियान

कोल इण्डिया लिमिटेड में "सतर्कता: हमारी साझा ज़िम्मेदारी" थीम पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 की कड़ी में 18 अगस्त–17 नवम्बर तक तीन महीने का अभियान चलाया गया। इस अभियान में सतर्कता निवारक के विभिन्न पहलुओं पर केन्द्रित रहा, जिसमें लंबित शिकायतों और मामलों का निपटारा, क्षमता-निर्माण कार्यक्रम, संपत्ति प्रबंधन और डिजिटल पहल शामिल हैं। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह 27 अक्टूबर से 2 नवंबर के बीच मनाया गया, जिसका उद्देश्य विजिलेंस के बारे में जागरूकता फैलाना और ईमानदारी के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को मजबूत करना है। सतर्कता सप्ताह 2025 कार्यक्रम की शुरुआत कोल इण्डिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री पी. एम. प्रसाद द्वारा सतर्कता शपथ दिलाने के साथ हुई। समारोह के दौरान भारत के माननीय राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री और केंद्रीय सतर्कता आयुक्त के संदेश पढ़े गए। कार्यक्रम में बोलते हुए अध्यक्ष श्री प्रसाद ने एक पारदर्शी, जवाबदेह और कुशल प्रणाली के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सभी से लंबित मामलों को कम करने और जांच पूरी करने में तेजी लाने का आग्रह किया। लगातार सीखने के महत्व पर जोर देते हुए, उन्होंने सभी स्तरों पर सतर्कता और अनुपालन को मजबूत करने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की वकालत की। आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल के संदर्भ में, उन्होंने लागत को नियंत्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया और इस बात पर जोर दिया कि नियमों और दिशानिर्देशों का पालन करने में साझा जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है। अपने संबोधन में मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी ने दक्षता और जवाबदेही बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में लंबित मामलों के निपटारे के महत्व पर प्रकाश डाला। कर्मियों के निरंतर प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के माध्यम से क्षमता निर्माण पर भी जोर दिया गया। संपत्ति प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया, जिससे संगठनात्मक संसाधनों के उपयोग और निगरानी में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित हो सके। इस अवसर पर एकीकृत नियंत्रण एवं कमान केंद्र (ICCC) के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SoPs) और परिचालन पारदर्शिता एवं दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से नई आईटी पहलों का भी विमोचन किया गया। सप्ताह के दौरान एक वॉकथॉन का भी आयोजन किया गया।

कोल इण्डिया में श्री गौड़ गोपाल दास

दिनांक 19 सितम्बर, 2025 को कोल इण्डिया की स्वर्ण जयंती व्याख्यान श्रृंखला के तहत कोल इण्डिया कॉर्पोरेट कार्यालय, कोलकाता में श्री गौड़ गोपाल दास को आमंत्रित किया गया । उन्होंने "सुख, शांति और उद्देश्य का संतुलन" विषय पर प्रेरक व्याख्यान दिये। अपने ज्ञानवर्धक सत्र में श्री दास ने बताया कि संवाद और गहरी समझ, समाधान की बुनियाद तैयार करते हैं। उनका संदेश था, सपनों का पीछा करने पर कम और प्रक्रिया को पूर्ण करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करें। खुशी सफलता में नहीं है, बल्कि अपना सर्वश्रेष्ठ देने में है, और सच्ची खुशी तब मिलती है जब हम अपने काम से प्यार करते हैं और वही करते हैं, जो हमें पसंद है। इस सत्र में कोल इण्डिया के निदेशक (विपणन), श्री मुकेश चौधरी; निदेशक (वित्त), श्री मुकेश अग्रवाल; निदेशक (तकनीकी), श्री अच्युत घटक; निदेशक (व्यवसाय विकास), श्री आशीष कुमार और कोल इण्डिया के अधिकारी और कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

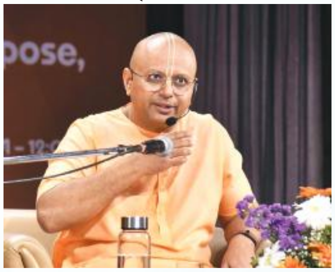

स्वच्छता ही सेवा 2025 का आयोजन

दिनांक 17.09.2025 को कोल इण्डिया मुख्यालय, कोलकाता में स्वच्छता ही सेवा 2025 के शुभारंभ के उपलक्ष्य में निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. विनय रंजन ने कर्मचारियों को "स्वच्छता शपथ" दिलाई। स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह अभियान 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक "स्वच्छोत्सव" थीम के तहत मनाया गया। अभियान अवधि के दौरान कई गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री मुकेश चौधरी (निदेशक विपणन), श्री आशीष कुमार निदेशक (व्यवसाय विकास) और श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी (मुख्य सतर्कता अधिकारी) सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

गांधी जयंती का आयोजन

02 अक्टूबर, 2025 को कोल इण्डिया लिमिटेड मुख्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 156 जयंती और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती आयोजित की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री पी.एम. प्रसाद, विपणन निदेशक श्री मुकेश चौधरी, व्यवसाय विकास निदेशक श्री आशीष कुमार, वित्त निदेशक श्री मुकेश अग्रवाल, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी द्वारा दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान, जीवन के प्रति अपनाएं गये मूल्यों, सत्य, सरलता और उनके सेवाभाव को स्मरण किया गया ।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती का आयोजन

दिनांक 15 नवम्बर, 2025 कोल इण्डिया के अध्यक्ष श्री सनोज कुमार झा ने कोल इण्डिया के कार्यकारी निदेशकों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भगवान बिरसा मुंडा को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित कर न्याय, सम्मान और आदिवासी अधिकारों के लिए लड़ने वाले एक सच्चे नायक की विरासत का सम्मान किया । इस अवसर पर कोल इण्डिया मुख्यालय में कर्मचारियों और संविदा कर्मचारियों के लिए "आदिवासी संस्कृति, इतिहास और आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान" विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कोल इण्डिया का 51वाँ स्थापना दिवस समारोह

कोल इण्डिया का 51वाँ स्थापना दिवस पर केंद्रीय कार्यक्रम कोलकाता स्थित विश्व बांग्ला कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया इस अवसर पर माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने वर्चुअल माध्यम से कोल इण्डिया पर विशेष स्मारक डाक टिकट एवं सीएमपीडीआई द्वारा तैयार कोल एटलस का विमोचन किया तथा ईसीएल की गोपीनाथपुरा और चिनाकुरी एमडीओ परियोजनाओं एवं इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर का उद्घाटन किया। अपने वर्चुअल संबोधन में माननीय कोयला मंत्री ने कोयला कर्मियों को "कोल वॉरियर्स" और कोल इण्डिया को देश की "ऊर्जा जीवन रेखा" कहा । उन्होंने कंपनी से भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका जारी रखने का आग्रह किया। इस अवसर पर वित्त वर्ष 24-25 के दौरान विभिन्न परिचालन क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु कॉर्पोरेट पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

51वें स्थापना दिवस समारोह की शुरुआत कंपनी के कॉर्पोरेट कार्यालय से आरंभ, जहाँ अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक ने शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके पश्चात अध्यक्ष ने 'कोल इण्डिया ध्वज' फहराया और इस अवसर पर उपस्थित पूर्व वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मान किया। समारोह में 'भारत के लौह पुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 'राष्ट्रीय एकता दिवस' पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर कोल इण्डिया के पूर्व अध्यक्ष श्री गोपाल सिंह द्वारा जे. जी. कुमारमंगलम व्याख्यान मंगलम स्मारक व्याख्यान भी प्रस्तुत किया गया।

संविधान दिवस का पालन

26 नवम्बर, 2025 को कोल इण्डिया मुख्यालय, कोलकाता में संविधान दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर भारतीय संविधान के जनक डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित किया गया तथा निदेशक (विपणन), श्री मुकेश चौधरी द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया। कार्यक्रम में निदेशक (वित्त), श्री मुकेश अग्रवाल; निदेशक (व्यवसाय विकास), श्री आशीष कुमार; मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आरक्षण नीतियों और रोस्टर रखरखाव पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

12 दिसम्बर, 2025 को डॉ. विनय रंजन, निदेशक (मानव संसाधन) ने SC/ST/OBC/EWS/PwBD के लिए आरक्षण और रोस्टर रखरखाव पर एक दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने बदलती आरक्षण नीतियों, DoPT गाइडलाइंस और कानूनी ज़रूरतों के साथ तालमेल बनाए रखने के महत्व पर ज़ोर दिया। DoPT के श्री संदीप मुखर्जी ने तकनीकी सत्र का नेतृत्व किया, जिसमें आरक्षण प्रावधानों, संवैधानिक सुरक्षा उपायों और प्रमुख ऐतिहासिक फैसलों का विस्तृत और जानकारीपूर्ण अवलोकन प्रस्तुत किया गया।

स्वागतम्

श्री बी. साईराम, अध्यक्ष, कोल इण्डिया लिमिटेड

श्री बी. साईराम ने दिनांक 15 दिसंबर, 2025 को कोल इण्डिया के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया है। एनआईटी रायपुर से खनन इंजीनियर के रूप में स्नातक श्री साईराम ने कोयला उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया है, जिनमें खदान संचालन, परियोजना योजना, रसद और नियामक मामले शामिल हैं। उन्होंने एनटीपीसी स्कूल ऑफ बिजनेस, दिल्ली से ऊर्जा प्रबंधन में एमबीए किया है। श्री साईराम को कोयला क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक की समर्पित सेवा का अनुभव हैं। इस नियुक्ति से पहले वे नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के मुख्य प्रबंध निदेशक (सीएमडी) थे। NCL के CMD के रूप में, उन्होंने जयंत ओपनकास्ट प्रोजेक्ट के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसकी उत्पादन क्षमता 30 मिलियन टन प्रति वर्ष (MTPA) से बढ़ाकर 38 MTPA की गई, उस समय जब ज़मीन की कमी के कारण प्रोजेक्ट बंद होने का खतरा था। प्रोजेक्ट फाइनेंसिंग की व्यवहार्य संरचना और मुआवजे और R&R फ्रेमवर्क विकसित करके, उन्होंने शहरी बस्ती को इस तरह से स्थानांतरित किया कि प्रोजेक्ट से प्रभावित परिवारों ने इसे सौहार्दपूर्ण ढंग से स्वीकार कर लिया। एनसीएल के सीएमडी के रूप में नियुक्ति से पहले, वे सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड में निदेशक (तकनीकी) के पद पर कार्यरत थे, जहाँ उन्होंने कोयला लॉजिस्टिक्स, फर्स्ट माइल कनेक्टिविटी परियोजनाओं, वन एवं पर्यावरण स्वीकृतियों और ग्रीनफील्ड एवं ब्राउनफील्ड खदानों के परियोजनाकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कोल इण्डिया में कार्यकारी निदेशक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान श्री साईराम ने सामुदायिक विकास पहलों में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। कोयला खनन पारिस्थितिकी तंत्र के उनके बहुआयामी ज्ञान से आने वाले वर्षों में कोल इण्डिया को भविष्य में बहुत लाभ प्राप्त होने की उम्मीद हैं।

सुर्खियों में कोल इण्डिया

Date 17.08.25

Publication: Prabhat Khabar (Kolkata)

कोल इंडिया मुख्यालय में मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

कोलकाता. कोल इंडिया लिमिटेड के कॉर्पोरेट मुख्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर कंपनी के चेयरमैन पीएम प्रसाद ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया. समारोह के दौरान कंपनी के चेयरमैन, वित्त निदेशक और मुख्य सतर्कता अधिकारी ने 'कोयला दर्पण' के 18वें संस्करण का अनावरण भी किया. इस कार्यक्रम को खास बनाने के लिए 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत चेयरमैन और अन्य अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों को पौधे भी वितरित किये गये. इस अवसर पर निदेशक (मानव संसाधन) डॉ विनय रंजन, निदेशक (विपणन) मुकेश चौधरी, निदेशक (वित्त) मुकेश अग्रवाल, निदेशक (तकनीकी) अच्युत घटक और मुख्य सतर्कता अधिकारी ब्रजेश कुमार त्रिपाठी सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे.

B Sairam takes charge as Coal India chairman

SAKET KUMAR
New Delhi, 16 December

B Sairam (pictured) on Monday took over as chairman-cum-managing director of Coal India Limited (CIL), the country's largest coal producer, with effect ... Sanoj Kumar Jha, additional secretary in the Ministry of Coal, who had been holding interim charge as CIL chairman since November following the superannuation of P M Prasad on October 31.

Prior to his elevation, ...

... of Northern Coalfields Limited (NCL), a key coal-producing subsidiary of Coal India. He has ... (Technical) at Central Coalfields Limited, another CIL arm.

In his first remarks after assuming charge, Sairam said increasing coal production, improving the quality of coal supplies ... remain Coal India's focus ... demand. He added that the company was also expanding into newer areas in line with changes in the energy sector, including solar ...

महत्त्वपूर्ण खनिज के लिए कोल इंडिया की कवायद

Coal India floats 5 GW renewable power tenders

Singapore: Coal India has issued tenders to build 3 GW of solar and 2 GW of wind power ...

विदेश में निवेश की योजना पर आगे बढ़ रही कोल इंडिया

साकेत कुमार
नई दिल्ली, 31 अक्टूबर

कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) कोयले से इतर अपनी विविधीकरण रणनीति के तहत विदेशों में महत्त्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों में निवेश की योजना पर बढ़ रही है। कंपनी के निवर्तमान अध्यक्ष और निदेशक पीएम प्रसाद ने आज यह बात कही। उन्होंने इसे कोल इंडिया के लिए 'गेम चेंजर' बताया। ...

कोल इंडिया मुख्यालय कोलकाता में हुआ एमओयू

कोल इंडिया व डीवीसी लगाएगा 1600 मेगावाट का पावर प्लांट

- चंद्रपुरा थर्मल पावर स्टेशन परिसर में लगेगा प्लांट
- 2031-32 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने का लक्ष्य

विशेष संवाददाता | रांची

कोल इंडिया और दामोदर वैली कॉर्पोरेशन (डीवीसी) चंद्रपुरा में 1600 मेगावाट का अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट लगाएगा। इसके लिए शुक्रवार को कोलकाता स्थित कोल इंडिया मुख्यालय में दोनों संस्थानों के बीच एमओयू हुआ। इस पर कोल इंडिया के ...

21 हजार करोड़ की लागत से बनेंगी दो यूनिट

एमओयू के मुताबिक इस प्रोजेक्ट पर करीब 21 हजार करोड़ रुपए की लागत आएगी। पहले इसकी लागत 16,500 ...

Coal India eyes production target of 875 MT this fiscal

Kolkata, Nov. 9: Coal India Ltd will aspire to meet its production target of 875 MT in the current year ...

Coal India Shares Hit 7-Month High, Board Clears Plan To List MCL & SECL

» Coal India shares rose about 3 percent to a seven-month high after its board approved the proposal to list subsidiaries MCL ...

CIL Pavilion draws crowds with mining technology, eco-models

ANAMTA FATIMA

NEW DELHI: At the India International Trade Fair 2025, the Coal India Limited (CIL) pavilion representing the Maharatna public sector enterprise emerged as one of ...

कोल इंडिया 87.5 करोड़ टन उत्पादन का लक्ष्य हासिल करने का करेगी प्रयास

... नहीं कह सकता कि हम पूरा करेंगे। लेकिन हम प्रयास करेंगे कि लक्ष्य तक या उसके करीब पहुंच सकें।' सी.एम.डी. ने कहा कि मानसून की बारिश के कारण कोल इंडिया सितम्बर और अक्तूबर में अपने उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने से चूक गई। उन्होंने कहा कि कोयले की मांग बहुत सुस्त रही है और बिजली क्षेत्र की मांग में भी कमी आई है।

PMO directs Coal India to map & list all its subsidiaries by 2030

Move aims to streamline governance, enhance transparency & unlock value via asset monetisation in coal PSU

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: To improve governance and accountability, the Prime Minister's Office (PMO) has directed the coal ministry to map and list all the subsidiaries of state-run CIL by 2030, sources said.

The move aims to streamline governance, enhance transparency and unlock value through asset monetisation in the coal PSU.

Coal India Ltd (CIL) accounts for over 80 per cent of domestic coal output.

There are plans to list all of Coal India's subsidiaries by 2030, highly placed sources said on the condition of anonymity.

There is an instruction from PMO to list all the arms of Coal India by 2030 to improve the company's governance, sources said.

CIL operates through eight subsidiaries, namely Eastern Coalfields Ltd, Bharat Coking Coal Ltd, Central Coalfields Ltd, South Eastern Coalfields Ltd, Northern Coalfields Ltd, Mahanadi Coalfields Ltd and Central Mine Planning & Design Institute Ltd.

BCCL and Central Mine Planning & Design Institute Ltd are set to be listed on stock exchanges by March 2026, with all preparations completed, sources said.

The domestic and international roadshows of BCCL are completed, they added.

The listing process for Bharat Coking Coal Ltd is in full steam with absolutely no holds or delays, sources explained.

In a regulatory filing, Coal India said its board of directors had given the go-ahead for South Eastern Coalfields Ltd and Mahanadi Coalfields Ltd to be listed.

The decision follows a specific directive from the Ministry of Coal to CIL to initiate concrete steps to ensure the listing of two of its primary subsidiaries, Mahanadi Coalfields Ltd and SECL, within the next financial year.

Bharat Coking Coal Ltd, a few months back, filed its draft red herring prospectus (DRHP) with capital market regulator SEBI for its proposed initial public offering.

In a regulatory filing, CIL had said the DRHP pertains to an offer for sale (OFS) of up to 46.57 crore equity shares by Coal India. The IPO remains subject to receipt of necessary approvals, market conditions, and other considerations, it had added.

Central Mine Planning and Design Institute Ltd had also filed its DRHP with SEBI for its proposed IPO via the offer-for-sale route.

Coal India Ltd is targeting a production of 875 million tonnes for the current financial year.

Coal India Ltd (CIL) accounts for over 80 per cent of domestic coal output and operates through its eight subsidiaries

... chief calls for biz overhaul to stay ... amid changing energy landscape

... from underground operations by 2035 through upgraded technology, new equipment, and enhanced manpower training ...

बी. साईं राम कोल इंडिया के चेयरमैन बने, आदेश जारी

वित्तीय संकट से जूझ रही ईसीएल के दौरे पर आज आएंगे

धनबाद, विशेष संवाददाता। कोल इंडिया के नए चेयरमैन बी साईं राम बने। कोयला मंत्रालय की ओर से कोल इंडिया चेयरमैन के रूप में साईं राम की नियुक्ति का आदेश जारी कर दिया गया। ...

अनुमान ईसीएल दौरे के बाद कोल इंडिया के नए चेयरमैन कुछ दिनों में बीसीसीएल के दौरे पर भी आ सकते हैं।

फिलहाल उन्होंने वित्तीय संकट से जूझ रही कोल इंडिया की सहायक कंपनी ईसीएल जाने का निर्णय लिया है। बीसीसीएल के पीछे एरिया में केंद्रीय अस्पताल जैसे रिसाव की विस्तृत जानकारी उन्होंने बीसीसीएल के सीएमडी से ली है। संभव है कि कुछ दिनों में बीसीसीएल के दौरे पर भी आ सकते हैं।

Coal India inks pact with Konkan Railway Corp to develop rail infra

CIL is actively strengthening its rail infrastructure to improve coal transportation

Coal India Ltd and Konkan Railway Corporation Ltd have executed a non-binding memorandum of understanding ...

5 DECADES OF UNEARTHING ENERGY

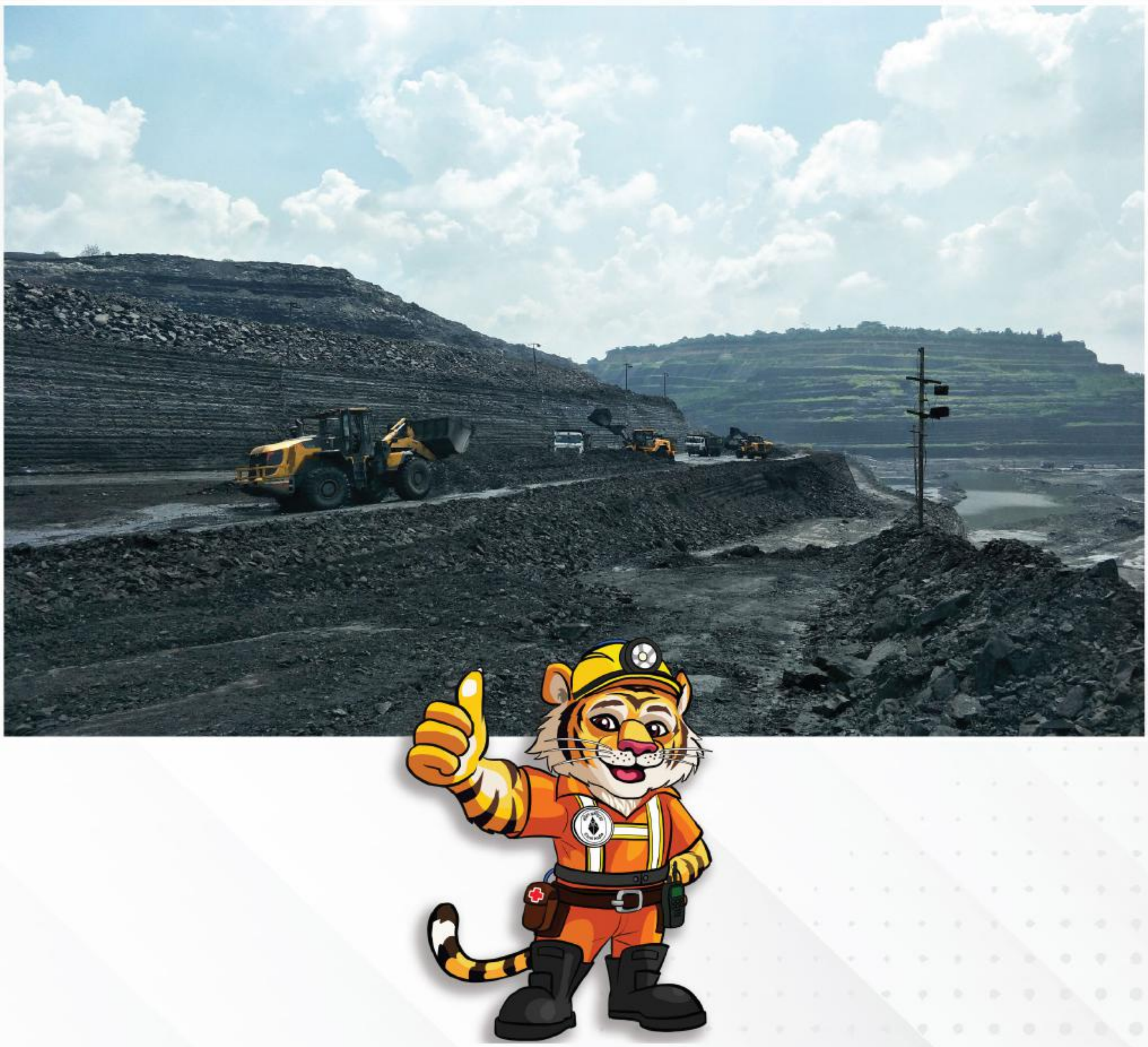

कोल इण्डिया लिमिटेड
एक महारत्न कंपनी
कोल भवन, परिसर संख्या-04 मार्च, प्लॉट नंबर-एएफ-III, एक्शन एरिया-1ए न्यूटाउन, राजरहाट, कोलकाता 700156
www.coalindia.in

CIN: L23109WB1973GOI028844